हमारा कर्तव्य

अर्थात्

नेताजी सुभाष बाबूके व्याख्यान

हिन्दी रूपान्तरकार—

श्री गिरीशचन्द्र जोशी

प्रकाशकः—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

ज्ञानवापी, बनारस।

द्वितीय बार] १९४६ [मूल्य १)

भूमिका

भारतके बेताजके सम्राट् हमारे नेताजी सुभाष चन्द्र बोसकी ओजमयी, ज्ञान प्रदायिनी वाणीके सम्बन्धमें कुछ कहना सूर्यको दीपक दिखाना है। लेकिन हम आर्य सनातन कालसे ही सूर्यको दीपक दिखाकर पूजते हैं, अतएव हमारा यह प्रयत्न भी उसी श्रेणीमें और उसी भावका द्योतक समझा जाय।

राष्ट्रपतिकी वाणी क्या है, जलते हुए अंगारे, रण-हुंकार हैं, जागृति और जीवनके सन्देश हैं।

राष्ट्रपतिके भाषणोंमे यौवनका दिव्य तेज है, उनकी वाणीमे दुश्मनोंको थर्रा देनेवाली शक्ति है। उन्होंने देशकी आशा, देशका भरोसा, देशकी उन्नति युवकोंमें देखी, उन्होंने अपने भाषणों द्वारा युवक और विद्यार्थी समाजमें स्वाधीनता प्राप्तिकी अदम्य भावना भरी। स्वाधीनता भी कैसी? सिर्फ राजनैतिक नहीं, बल्कि सर्व देशीय, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक। उन्होंने कहा है—

"स्वाधीनताका नाम सुनते ही बहुतमे काप जाते है, राष्ट्रीय स्वाधीनताका नाम सुनते ही अनेक रक्त गगाका स्वप्न देखते हैं, अनेक फांसीके तख्तेका भय देखते हैं। सामाजिक स्वाधीनताका नाम सुनते ही अनेक विशृंखलाका भय पाते हैं किंतु मैं उश्रृंखलासे नहीं डरता।"

"भारतके छात्रो ! तुम पूर्ण और अखण्ड मुक्तिके उपासक बनो।"

वे जानते हैं कि युवक युवती ही राष्ट्रके दिलोजिगर हैं इसीलिये उनका ध्यान सबमे पहले उन्हींकी ओर जाता है। नेताजीने युवक आदोलनको असीम शक्ति दी है, वे कहते हैं—

"आजका युवा आदोलन लक्ष्यहीन युवक युवतियोंका अभिमान नहीं है, बल्कि दायित्वपूर्ण, कर्मशील युवा और युवती, अपना चरित्र और व्यक्तित्व गठित कर सुघर रूपमे देशका कार्य करना चाहते हैं, यही उनका आदोलन है।"

इन्हीं युवक और युवतियोंको सम्बोधन कर उन्होंने कहा है,

'स्वाधीनता प्राप्त करनेका एक मात्र उपाय है, स्वाधीन व्यक्तिकी तरह सोचना और अनुभव करना, ताकि हमारे हृदयोंमें विप्लवकी बाढ आ जाय, स्वाधीनताका भयंकर प्रवाह हमारी नस-नसमें बह जाय, जब हमारे हृदयोंमें स्वाधीन होनेकी इच्छा जाग्रत होगी उस समय हमारे हृदयोंके विचार परिवर्तित हो जायगे।"

"युवककी उपेक्षा करनेसे काम नहीं चलेगा, समाज सस्कार और देश शासनका भार युवा युवतियोंको देना होगा। हम जिस नवीन समाजको गढ़ना चाहते हैं उसमें सबको समान अधिकार होंगे, सबको समान सुयोग मिलेंगे, ऐश्वर्यपर सबका समान अधिकार होगा, विपमता पैदा करनेवाले सामाजिक नियमोंका ध्वस होगा, जाति भेदका लोप होगा और विदेशी शासनमे मुक्ति होगी।"

भारतको आशा, आकाक्षा और उद्देश्यकी इससे अच्छी, इससे पूर्ण और क्या व्याख्या हो सकती है। हम युवा-युवतियोंके लिये समान

अधिकार और ऐश्वर्य चाहते हैं। आह! वह दिन कब आयेगा! वह दिन कब आयेगा! हमारे नेताजी उसी स्वर्णयुगका आवाहन कर रहे हैं। वह दिन अभीतक क्यों नहीं आया इसका उत्तर सुनिये।

हमारे पास सब कुछ है मगर एक चीज नहीं है। सर्वस्व बलिदान। सब तरहकी विपत्तियोको अतिक्रमण कर, समस्त आपत्तियोंको तुच्छ मान जीवनको आदर्श प्राप्तिमे निहित करनेकी क्षमता। हम दिलसे देशको नहीं चाहते, इसीलिये हमारे यहा मीरजाफर, अमीचन्द जन्मते हैं, आज भी मीरजाफरोंकी कमी नही है। हम जब देशको प्रेम करना सीखेगे तभी हमारे अन्दर आत्म बलिदानकी भावना जाग्रत होगी। हमारे जीवनमें अविराम और अक्षान्त परिश्रमकी क्षमता वापिस आ जायगी। यह शक्ति कहा मिलेगी! कर्म सग्राममें अविरत भावमे आत्म सयोग करनेसे यह शक्ति प्राप्त होती है।

क्या आप यह शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं? लेकिन पहले यह तो देखिये कि आप इस काबिल हैं या नही? यानी आपके व्यक्तित्वका विकाश हुआ है या नही। क्योंकि नेताजी कहते हैं---

'समाज और राष्ट्रकी उन्नति' एक तरफ व्यक्तित्वके विकाशपर निर्भर करती है, तो दूसरी तरफ संघबद्ध होनेकी शक्तिपर। अगर हमें नवीन भारत गढना है तो हमे सच्चा मनुष्य तैयार करना होगा और इस तरहके उपायका अवलम्बन करना होगा कि हम विभिन्न क्षेत्रोंमें सघबद्ध होकर काम कर सके।

व्यक्तित्वके विकासके सम्बन्धमें मैं एक बात कहना चाहता हूँ। मेरी धारणा है कि साधनाका उद्देश्य मनुष्य जीवनका रूपान्तर है।

हमारे अन्दर असीम शक्ति निहित है, हममें सिर्फ आत्मविश्वास और श्रद्धाकी कमी है। अपनी जातिमें विश्वास और श्रद्धा होना अनिवार्य है। देशवासियोंको जीसे प्यार करना होगा।""""स्वाधीनताके लिये यदि हम पागल हो सके तभी हमारी अन्तर्निहित शक्ति जाग सकती है।""""इस नव जाग्रत शक्ति द्वारा हम स्वाधीनता प्राप्त कर सकेंगे।"

हमारे भारतके युवक भी स्वाधीनताके सङ्ग्राममें लगे हुए हैं, किंतु वे अपने लक्ष्यतक पहुँच नहीं सके। क्योंकि उनके रास्तेमें रोड़े आ जाते हैं और ये रुकावटें उन्हें असहिष्णु बना डालती हैं। नेताजीने इसे ही लक्ष्यकर कहा है—

"सब देशोंमें तरुण समाज असन्तुष्ट और असहिष्णु हो गया है। वे जो चाहते हैं नहीं पाते। जिस आदर्शको चाहते हैं मूर्त नहीं कर पाते, इसीलिये वे विद्रोही हो गये हैं तथा जो मनुष्य और जो व्यवस्था उनके मार्गका रोड़ा है उसे हटानेके लिये बद्ध परिकर हैं।

और बढ़े चले जा रहे हैं, मानो एक स्वप्नमें, एक खयालमें।"

वह स्वप्न कैसा है, यह नेताजीकी वाणीमें ही सुनिये।

"मैं एक नवीन, सब तरहसे पूर्ण समाजका अंग हूँ। जिस समाजमें व्यक्ति सम्पूर्ण रूपेण मुक्त होगा तथा समाजके दबावसे पिसेगा नहीं, उस समाजमें जातिभेदका पहाड़ न होगा, जिस समाजमें नारी मुक्त होकर समाज और राष्ट्रके कामोंमें पुरुषोंके साथ समान रूपसे काम करेगी। जिस समाजमें धनका वैषम्य नहीं रहेगा, प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा और उन्नतिका समान सुयोग पायेगा। जिस समाजमें श्रम और कर्मकी पूर्ण

मर्यादा रहेगी। जिसमें आलसी और बेकामका कोई स्थान नहीं रहेगा। जिस राष्ट्रके सब विषय विदेशी प्रभाव और हस्तक्षेपसे रहित होंगे। ......मैं उसी राष्ट्रका स्वप्न देख रहा हूँ। यह स्वप्न मेरे लिये सत्य अखण्ड सत्य है। उस सत्यकी प्रतिष्ठाके लिये सब कुछ किया जा सकता है। सब कुछ त्यागा जा सकता है; सब तरहके कष्ट स्वीकार किये जा सकते हैं, इसको सार्थक करनेमें प्राण देना भी, मरना भी, स्वर्ग समान है।"

युवकोंके लिये, गुलामोंके लिये, इससे बढ़कर स्फूर्तिमय सन्देश और क्या हो सकता है। वे फिर सावधान करते हुए कहते हैं—

"भाइयो और बहनो! हमारे अन्दर पश्चिमीय सभ्यता प्रवेश कर हमें पश्चिमीय रंगमें सराबोर कर रही है। हमारा व्यवसाय, वाणिज्य, धर्म कर्म, शिल्पकला सब नष्ट हो रही है, मर रही है। इसलिये जीवनके सब क्षेत्रोंमें मृत संजीवनी सुधा ढालनी होगी। इस सुधाको कौन लायेगा। जीवन दिये बिना जीवन नहीं मिल सकता। जिन्होंने आदर्शके चरणोंमें आत्म बलिदान दिया है सिर्फ वे ही व्यक्ति अमृतका पता पा सकते हैं। हम सभी अमृतके पुत्र हैं। किंतु हम अपने अहंकारके जालमें इस प्रकार फंसे रहते हैं कि आत्मस्थित अमृत समुद्रका पता नहीं पाते। मैं आप सबको बुलाता हूँ, सबका आवाहन करता हूँ, आइये हम सब माके मन्दिरमें दीक्षित हों। देशसेवा ही हमारे जीवनका एकमात्र लक्ष्य हो। देश माताके चरणोंमें हम सब अपने सर्वस्वकी बलि देवें।

याद रखिये।

हम पराधीन पैदा हुए हैं किंतु स्वाधीन देशमें मरेंगे। देशका

स्वाधीन करके मरेंगे। आओ, हम यही प्रतिज्ञा करें कि जीवनमें मुक्त भारतका रूप न देख सके तो भारतको स्वाधीन करनेमें जीवन देंगे। स्वाधीनताका पथ कण्टकमय है किंतु वह अमरत्वका पथ भी है। आइये! भाइयो और बहनो, मैं इस पथपर आपका आवाहन करता हूँ। वन्दे मातरम्।"

भारतका जन समुदाय भी कहे—

मातेऽहं। वन्दे मातरम्।

सुभाष बाबूके व्याख्यान

"छात्र जीवनका उद्देश्य सिर्फ परीक्षा पास करना और स्वर्णपदक प्राप्त करना ही नही है, बल्कि देश सेवाके लिये प्राणोंकी सम्पदा और योग्यता अर्जन करना भी है। भारतमाताके चरणोंमें अपने आपको मिटा दूंगा, यही एक मात्र साधना होनी चाहिये, छात्र जीवनमें इसी साधनाका श्री गणेश करना होगा।"

*　　　*　　　*

छात्र-मण्डलीने यदि अपनेमें से ही एक आदमी समझकर मुझे सभापति बनाया है तो इसके लिये सचमुच मै उनका कृतज्ञ हू। मैं छात्रोंकी श्रद्धा नही चाहता क्यों कि मै इस योग्य नही हूँ। मै तो उनका प्रेम चाहता हूँ। मैं उनका अपना होना चाहता हूँ। आपने अपना समझकर मुझे सभापति चुना हो तो मेरा यहा आना सार्थक हुआ।

मैं छात्रोंको स्नेह करता हूं। यह कहना अत्युक्ति न होगा क्योंकि उनके मनोभाव, सुख-दुःख, आशा आकाक्षाको मै खूब समझता हूं। छात्र जीवनमें कैसे-कैसे अत्याचार और लाछनाए सहनी पड़ती हैं यह भी मैं जानता हूँ। इसीलिये लाछित छात्र समाजकी मर्म व्यथाको मैं भलीभांति समझता हूँ।

जिस समाजमे छात्रको सम्मान और श्रद्धा नहीं मिलती, जिस समाजमें छात्र शिशुवत सिर्फ कृपा और उपदेशका पात्र है, उस समाजमें मनुष्यकी सृष्टि होना सभव नहीं है। हम कहनेको तो कहते हैं, "प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्र मित्रवदाचरेत्" किन्तु व्यवहारमें वयस्क पुत्रको बच्चा ही मानते हैं, गोकि वह पुत्र बालिग हो गया है और बी० ए०, एम० ए० पास कर चुका है। चालीस वर्षका होनेपर भी पुत्र शिशुका-सा व्यवहार पाता है। और दुःख तो यह है कि इस तरहके व्यवहारसे हम शर्मिन्दा न होकर गौरवान्वित होते हैं। प्रौढ़ावस्था प्राप्त होनेपर भी जो नाबालिग ही रहते हैं उनके भाग्य नियन्त्रणके लिये साइमन कमीशन आये तो आश्चर्य ही क्या है ?

हिन्दू जातिको तो गर्व है कि वह मातृमूर्तिमें भगवानके दर्शन करती है। बाल गोपाल रूपमे उसने भगवानको पाया है। मैं हिन्दू जातिसे पूछता हूँ कि एक बार वह हृदयपर हाथ रखकर कहे कि "आजकल ्म घर या बाहर मातृजातिकी सम्मान रक्षा कर सकते हैं क्या ? और

और युवकोंको मनुष्योचित सम्मान मिलता

सम्मानकी रक्षा कर सकते तो हर जिलेमें

नहीं होते, वह इस प्रकार लाछित नहीं

होनेपर भी पुरुष समाज अम्लान वदन,

रता। आज भारतमें मर्द होते तो वे

मातृजातिका असम्मान देखकर पागलसे हो उठते और वीर श्रेष्ठ खड्ग बहादुरकी तरह प्राणोंका मोह छोड़कर मातृ जातिकी सम्मान रक्षाके लिये कर्मक्षेत्रमें कूद पड़ते।

हे छात्रवृन्द! मुमकिन है तुम लोग अंग्रेजोंसे घृणा करते होओ, किन्तु मै कहता हूं अंग्रेज जिस तरहसे नारी जातिकी सम्मान रक्षा करना जानते हैं, उसकी शिक्षा उन्हींसे लो। तुम्हारे ही देशमे तुम्हारी माताओं और बहनोंकी रक्षा नहीं होती और मुट्ठी भर अंग्रेज पैंतीस करोड़ विदेशियोके बीचमें अंग्रेज महिलाकी सम्मान रक्षा किस प्रकार करते हैं। इसका कारण यही है कि एक अंग्रेज महिलापर अत्याचार होते ही समस्त अंग्रेज जाति पागल हो उठती है और उस अपमानका बदला लेनेके लिये समस्त जाति बद्ध परिकर हो जाती है। सीमान्तमें पठान द्वारा मिस एलिसके अपहरणकी घटना आपको अविदित न होगी।

हम मुहसे कहते हैं, 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।" किन्तु प्राणपणसे क्या हम जननी और जन्म भूमिको चाहते हैं। जननीको माननेके माने सिर्फ अपनी जन्म देनेवाली माको चाहना ही नहो है बल्कि समस्त मातृजातिको प्रेम करना है। हमारा देश, जल, वायु, मिट्टी, आकाश, शिक्षा, संस्कृति, धर्म सब कुछ नारी जातिमें मूर्त हो उठा है। जो अपने देशकी मातृजातिका सम्मान करना नहीं जानता वह देश माताका सम्मान क्या खाक करेगा और जो व्यक्ति अपने देशको नहीं चाहता, नही मानता, वह आदमी कैसे होगा? जो महान् आदर्शको

नहीं मानता। जिस व्यक्तिमे वह आदर्श मूर्त हुआ है, उसे नहीं मानता। वह व्यक्ति किसी भी दिन आदमी नहीं हो सकता। जीवनमें जो कुछ पवित्र, सुन्दर, कल्याणकर है उसका समावेश हम देश मातामे करते हैं, त्रैलोक्यमयी भुवन-मोहिनी मातृमूर्तिमें करते हैं, इसीलिये हे भाइयो! माकी आराधना करना सीखो, मातृ जातिकी भक्ति करो, श्रद्धा करो, अपने देशमे मातृ जातिका सम्मान अक्षुण्ण रखनेके लिये कृत सकल्प बनो। याद रखो, मनुकी इस अमृत वाणीको कि—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता,
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।
शोचन्ति मामयो यत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम्,
न शोचन्ति तु यत्रैता विवर्द्धते तद्धि सर्वदा॥

जहाँ नारीकी पूजा होती है वहा देवता प्रसन्न रहते हैं, जहा नारीका सम्मान नहीं उस देशका क्रियाकाण्ड विफल है, जिस समाजमे नारी दुखिया, उत्पीडिता है वह शीघ्र नष्ट होता है। जिस कुलमें उन्हें किसी तरहका कष्ट, दुख, शोक नही है उसकी श्री वृद्धि होती है।"

जिस युगमे इस देशमे। नारी जातिका सम्मान अक्षुण्ण था उस युगमे गार्गी और मैत्रेयी जैसी ऋषि पत्निया हुई थीं, उस युगमे खना और लीलावती जैसी विदुषिया हुई थीं। अहल्याबाई और झासीकी रानी जैसी वीरांगनाएँ हुई थी। बगालमे भी रानी भवानी और देवी चौधरानी जैसी रमणिया हुई थीं।

सुभाष बाबूके व्याख्यान

मेरे छात्रमित्र ताज्जुब करते होंगे कि छात्र सम्मेलनमें मैं यह सब बाते क्यों कह रहा हूँ। किन्तु अत्यन्त व्यथित होकर आज मैं यह बात कहनेके लिये मजबूर हुआ हूँ। जबतक नारी वीर प्रसू नहीं होती तबतक हम मनुष्यत्व लाभ नहीं कर सकते। किन्तु जबतक हम घर और बाहर मातृ जातिको सम्मान और गौरवके आसनपर नही बैठाते तबतक नारी जाति वीर प्रसविनी नहीं हो सकती। अगर हम अपनी मातृजातिको शक्तिरूपिणी करना चाहते हैं तो बालविवाहका उच्छेद करना होगा। स्त्री जातिको आजीवन ब्रह्मचर्य पालनका अधिकार देना होगा। स्त्री शिक्षाका उपयुक्त आयोजन करना होगा। पर्दा प्रथा मिटानी होगी। बालिकाओं और तरुणियोंको व्यायाम, लाठी, छुरा चलानेकी शिक्षा देनी होगी। यही नही बल्कि स्वावलम्बी होने लायक अर्थकारी शिक्षा भी देनी होगी तथा विधवाओंको पुनर्विवाहका अधिकार देना होगा।

अगर इनको कार्यरूपमें परिणित करना हो तो युवकोंको यह भार अपने कधोंपर लेना होगा। क्योंकि युगोंके संचित कुसंस्कारके कारण जो लोकाचार और धर्मको एक समझते हैं सम्भव है वे प्राचीन प्रेमी इन कार्योंमें रोड़े अटकावें। अक्सर देखा जाता है कि राष्ट्र विप्लव सहज कितु समाज विप्लव और सस्कार कठिन होता है। क्योंकि राष्ट्रीय विप्लवके समय शत्रुके साथ लड़ाई करनी पड़ती है। इसलिये जाति और मतकी विभिन्नताको भूलकर सब देशवासी सहयोग और सहानुभूति प्रदर्शित करते हैं। बीच-बीचमें जेल-आदिके कष्ट भी

सहने पड़ते हैं, किन्तु देशवासियोंका प्रेम और सहानुभूति देश-सेवकको संजीवित और अनुप्राणित करती है। सामाजिक विप्लवकी चेष्टा करनेवालोंकी कठिनाइयाँ और विपत्तिया दूसरे प्रकार की हैं। समाज सेवकको अपने देशवासी बन्धुबान्धव और आत्मीय स्वजनके साथही झगड़ना पड़ता है। अपने ही घरमे उसे दिन-रात लाछना और अपमान सहना पड़ता है और समाजकी सहानुभूति भी उसे कभी नहीं मिलती। आत्मीय स्वजनो गुरुजनोंके साथ विवेकसे अनुप्राणित होकर विरोध उपस्थित करते समय अक्सर समाज-सेवककी अवस्थाएँ कुरुक्षेत्रमें मोह-ग्रस्त अर्जुनकी सी हो जाती है। इसलिये सामाजिक संग्राममे अपूर्व शक्ति, साहस और तेज चाहिये। भाइयो! तुम सब उसी शक्तिकी साधना करो।

मैंने पहले ही कहा है हमारे देशमे अभी भी युवक समाज और छात्र समाजको उसका योग्य आसन प्राप्त नहीं हुआ है। अभ्यास वश हम अपनी वास्तविक अवस्था महसूस नहीं करते। किन्तु स्वाधीन देशमें जानेपर, वहाकी अवस्था और यहाँकी अवस्थाकी तुलना करनेपर हमारी आखे खुल जाती हैं। स्वाधीन देशोमे अभिभावकों, विश्वविद्यालयके अधिकारियो, पुलिस, समाज, सरकारमे छात्रोंको जो आदर और श्रद्धा प्राप्त होती है आपमेसे अनेक उसकी कल्पना तकनहीं कर सकते। हमारे यहाके छात्र अपने घरमे कृपाके पात्र, विद्यालयमे उपदेश और शासनके पात्र, समाजमें नाबालिग, पुलिस और सरकारकी नजरोमें अविश्वासके पात्र हैं। इस अविश्वास, अश्रद्धा और शासनके नीचे मनुष्यत्व कैसे

जागे ? स्वाधीन देशके छात्र जो आदर और श्रद्धा पाते हैं उसके फल स्वरूप उनका दायित्वज्ञान जग जाता है, कर्त्तव्य बुद्धि स्फुरित होती है और अन्तर्निहित देवत्व प्रकट होता है। अपने समाजके खिलाफ मेरा अभियोग यही है कि हमारे छात्र जिस तरहका व्यवहार पाते हैं वह मनुष्यत्वके विकाशमे सहायक या उसके अनुकूल नही है।

सिर्फ आशाकी बात यही है कि अब यहाके छात्र निःचेष्ट नही हैं। समाजकी अपेक्षामे न बैठकर वे अपना उद्धार खुद कर रहे हैं। इसी-लिये देशव्यापी छात्रान्दोलन दिखलाई पड रहा है। छात्र समाजने अपना उद्धार कर नवीन समाज संगठनका दृढ सकल्प कर लिया है। आशा और विश्वास है कि स्वाधीन देशोंके छात्रोको जो आदर और श्रद्धा प्राप्त है, वही यहा वाले भी क्रमशः प्राप्त कर लेगे। श्रीयुत खड्ग-बहादुर जैसे छात्रोने देशकी समस्त श्रेणियोकी श्रद्धा और भक्ति प्राप्त की है। इसी प्रकार समग्रछात्र समाज आत्म-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

मनुष्यकी उन्नतिमें सबसे बडी बाधा भ्रान्त आदर्श है। मनुष्य जब कोई सत् या असत कार्य करता है तब वह नीतिकी दुहाई देकर आत्म-प्रासाद लाभ करना चाहता है। वर्तमान छात्र समाज भी कुछ भ्रान्त आदर्शों की ओटमें अनुचित आचरण करता है और उसे प्रश्रय देता है। उदाहरणके तौरपर मैं सुनाता हू। छात्र जीवनमे अध्ययन ही तप है, इस तरहकी दुहाई देकर छात्रोंका देश सेवाके कार्यसे विरत करनेकी चेष्टा अनेक करते हैं।

अध्ययन किसी तरह तपस्या नहीं हो सकता। अध्ययनके माने हैं कुछ किताबें पढना और कुछ परीक्षाएं पास करना। इसके द्वारा मनुष्य स्वर्णपदक प्राप्त कर सकता है, बड़ी नौकरी भी प्राप्त कर सकता है। पुस्तक पढकर हम उच्च भाव और आदर्शका परिचय पाते हैं, किन्तु उन भावों और आदर्शोंको हृदयगम करके जबतक हम कार्य रूपमें परिणित नहीं करते तबतक हमारे चरित्रका गठन नहीं हो सकता। तपस्या का अर्थ है, सत्यकी उपलब्धि करना, श्रवण, मनन, निदिध्यासन द्वारा उस सत्यके साथ मिल जाना। जब मनुष्य इस अवस्थामें पहुचतो है तब उसके जीवनका रूपान्तर होता है। उस समय वह जीवनका वास्तविक उद्देश्य और अर्थ समझता है और अन्तरकी नवीन शक्ति और प्रकाश द्वारा नवीन मार्गसे, नवीन भावसे अपने जीवनको नियन्त्रित करता है। इस तरहकी साधनामें सिद्धिलाभ करनेके लिए अल्पवयसमें ही कार्यारम्भ करना चाहिये। जिस समय मनुष्यमें अदम्य शक्ति, उत्साह, कल्पनाशक्ति, त्याग-स्पृहा है, जिस समय मनुष्य निःस्वार्थ भावसे प्रेम कर सकता है, उसी समय वह आदर्शके चरणोंमें आत्म बलिदान कर सकता है। आगे पीछेकी न सोचकर भावतरंगमें जीवन नौका डुबा देता है।

इसलिये किशोर और यौवनावस्था ही साधनाका सर्वोच्च समय है। सद्य विकसित फूलसे ही देवीकी पूजा होती है। पुराने बासी फूलसे पूजा नहीं होती। इसीलिये कहता हूं, हे तरुणो! तुम्हारा हृदय जब

पवित्र है, शक्ति अतुल है, उत्साह अदम्य है, भविष्य जीवन जब आशा-की प्रतिभासे रंजित है, उस समय ही जीवनको सर्वश्रेष्ठ आदर्शके चरणोंमें उत्सर्ग करो।

वह कौन सा आदर्श है जिससे मनुष्य अमृतका सधान पाता है, आनन्दका आस्वाद पाता है। असीम शक्ति पाता है। वह कौनसा आदर्श है जिसके प्रतापमे देश देशमे, युग युगमे महा पुरुषोंका आविर्भाव होता है। तुम सोचते होगे जन्ममे ही मनुष्य बडा आदमी, महान् पुरुष उत्पन्न होता है, उसे किसी तरहकी चेष्टा, परिश्रम, साधना नही करनी पडती। किंतु यह धारणा बिलकुल भ्रान्त है। महापुरुष महत्व लाभकी सभावना लेकर ही उत्पन्न होते हैं, ठीक है। किन्तु साधनोके बिना वे उस महत्वका विकाश नही कर सकते और महापुरुषत्वके आसन पर नहीं बैठ सकते। जितने महापुरुषोंने आजतक पृथ्वीपर जन्म ग्रहण किया है उनके जीवनका विश्लेषण करो तो देखोगे कि उनके जीवनमें असीम अध्यवसाय, अक्लान्त चेष्टा, गम्भीर साधना विद्यमान थी। तुम भी यदि वैसा ही प्रयत्न और साधना कर सको तो तुम भी महापुरुष बन सकते हो। तुममेसे हर एकमें भस्माच्छादित अग्नि-की तरह शक्ति निहित है। साधना द्वारा वह भस्म दूर हो जायगी और अन्तरका देवत्व करोड़ सूर्योके प्रकाशमे प्रकाशित होकर मनुष्य समाजको मुग्ध करेगा।

जिस आदर्शका आश्रय लेकर भारतका तरुण छात्र समाज उद्-

बुद्ध होगा, उसका उल्लेख रवीन्द्रनाथके नववर्ष शीर्षक गानमें है, इसलिये कविकी भाषामे ही कहता हूँ।

हे भारत ! आज नवीन वर्षे
सुन ए कविवर गान
तोमार चरणे नवीन हर्षे
एने छि पूजार दान
एनेछि मोदेर देहेर शकति
एनेछि मोदेर मनेर भगति
एनेछि मोदेर धर्मेर मति
एनेछि मोदेर प्राण
एनेछि मोदेर श्रेष्ठ अर्घ्य
तोमारे करिते दान

देश माताके चरणामें सर्वस्व समर्पण नग्न वही एक साधना होनी चाहिये। इस साधनाका आरभ छात्र-जीवनमे ही है। दान करने लायक सम्पतिका संचय और अर्जन छात्र जीवनमे ही करना होगा। शरीरमे जिसके बल है, मनमें जिसके साहस और तेज है, जो शिक्षित दक्षित है, जो ब्रह्मचर्य व्रतका व्रती है, वही दे सकता है, त्याग कर सकता है। जो भिक्षुक है नितान्त दीन, हीन है, उसके दानका क्या उपयोग है ! वह तो खुदही कृपाका पात्र है। छात्र जीवनमे शारीरिक बल सचय करना होगा। चरित्र गठन और ज्ञान सग्रह करना होगा। शरीर, मन

और हृदयका पूर्ण विकाश कर मनुष्यत्वकी उपलब्धि करनी होगी।

देशसेवाके लिये प्राणोंकी महानता और योग्यता अर्जन करना यदि छात्र जीवनका उद्देश्य हो तो परीक्षा पास करने और स्वर्णपदक प्राप्त करनेका मूल्य कितना है, यह आप स्वयम् समझ सकते हैं। आजकल स्कूल और कालेजोमे "अच्छा लडका" नाम एक जीव देखनेमें आता है, मैं उसे कृपाकी दृष्टिमे देखता हू। वे ग्रन्थ कीट हैं, किताबके बाहर वे कुछ नही हे। परीक्षागारमे ही उनका जीवन सीमित है। इसके साथ रावर्ट क्लाइबकी तुलना कीजिये। यह बापका डराया मा का भगाया लडका सात समुद्र पार होकर अंग्रेजोंके लिए साम्राज्य सृष्टि करता है। इङ्गलैण्डके "अच्छे लडको" ने जो नही किया, वह रावर्ट क्लाइव, नटखट लड़केने किया। अंग्रेज जाति मनुष्यत्वकी मर्यादा रखना जानती है, इसीलिए रावर्ट क्लाइव लार्ड क्लाइव हुआ।

अंग्रेज या पृथ्वीकी अन्य जातियोंने जो बहुमुखी उन्नति की है, उसका विश्लेषण करनेसे मालूम होता है, दो अपूर्व गुणोंके कारण उन्होंने समस्त पृथ्वीकी जातियोंके बीच शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। पहला गुण तो यह कि वे अपने देशको दिलोजानमे चाहते है ओर दूसरा गुण उनमे (*Spirit of adventure*) खोजकी चाह है। नवीनमे आकर्षित होकर वे पूर्वपरिचित पथ छोड़ सकते हैं। बाहरके खिंचावमे वे घर छोड़ते हैं, ससारकी गति देखकर वे चिराचरित प्रथा छोड़ते हैं। इसी निर्भीकता, गतिशीलता और "सुदूरकी प्यास" के

कारण अंग्रेज जाति इतनी उन्नत है, और इसी अभावके कारण हम आज इतने दीन, हीन और पंगु हैं।

लेकिन हमेशा ही हमारी ऐसी हालत नहीं थी। हमने भी एक दिन उत्ताल तरग सकुल समुद्र पारकर देश-देशान्तरमें उपनिवेश स्थापित किया था, ससारमें ज्ञान फैलाया था तथा शिल्प सामग्री क्रय विक्रय की थी। वह हमारे विकाशका, प्रचारका, उत्थानका युग था। उसके बाद पतनका, आलस्यका, प्रमादका युग आया। आज फिर नव-जीवनका स्पन्दन हम अनुभव कर रहे हैं, पतनके बाद फिर उत्थानका प्रारभ हुआ है। इसीलिये नींद खुलनेके, नव जागरणके लक्षण हर तरफ दिखलाई पड़ते हैं। बाहरसे ज्ञान और सम्पदा लानेके लिए हम व्यग्र हो उठे हैं। साथही साथ अपने घरमे जो कुछ है उसे विश्वप्रागणमें फैलानेके लिये हम पागल हैं, इसीलिये कविने गाया है।

आमि ढालिबो करुना धारा।
आमि भागिबो पाषान कारा॥
आमि जगत् प्लाविया वेड़ाबो गाहिया।
आकुल पागल प्राण॥

शिखर एइते शिखरे छूटिबो।
भूधर एइते भूधर लूटिबो॥
हे से खल, खल गेये कल कल।
ताले ताले दिबो तालि॥

तटिनी होइया जाइबो बोहिया।
नव नव देश बारता लोइया॥
हृदयेर कोथा कोहिया कोहिया।
गाहिया गाहिया गान॥"

अर्थात्

मै करुणाधार बहाऊंगा।
मैं पत्थर तोड़ उड़ाऊंगा॥
डुबा जगत्को घूमूगा मैं।
आकुल पागल प्राण।"
शृंग शृंगसे समुद्र कूदकर।
इस गिरिसे उस गिरिपै घूमकर॥
कल कल गा, हंस खिल खिल।
ताल ताल दे ताली॥
तटिनी होकर जाऊंगा बहकर।
नव नव दिशि सन्देशो लेकर॥
मर्मव्यथा कहकहकर सबसे।
गा गा मनका गान।

व्यक्तिगत रूपसे भारतीय दुनियाके किसी भी आदमीसे कम योग्य नही हैं, बल्कि अनेक विषयोंमे हम श्रेष्ठ हैं। पराधीन और दुर्दशा ग्रस्त होनेपर भी हमारे साहित्यिक, शिल्पी, वैज्ञानिक, व्यवसायी, खिलाड़ी

पहलवान पृथ्वीकी किसी जातिसे कम नहीं हैं। अन्तर्राष्ट्रीय योग्यतामें हमने अनेक अपनी योग्यता प्रदर्शित की है।

व्यक्तिगत तौरसे पृथ्वीकी अन्य जातिसे हीन न होनेपर भी हम राष्ट्रीय दृष्टिसे अधःपतित हैं। शिक्षा द्वारा जब हम जन साधारणको शिक्षित बना लेगे तब हमारे मुकाबिलेमे पृथ्वीकी कोई भी जाति खड़ी नहीं रह सकेगी। जनताको जगानेका भार शिक्षित तरुणोंको अपने ऊपर लेना होगा। जिस दिन हमारे अन्दर स्वाभाविक राष्ट्रीय प्रेम जाग्रत होगा उसी दिन हम जन साधारणके प्राणोंमे अपने प्राण मिला सकेंगे। राष्ट्रीय बोधके लिये हृदयकी उदारता चाहिये और सम्पूर्ण संकीर्णताओंसे सम्बन्ध विच्छेद चाहिये। स्वाधीन विचार शक्ति और हृदयकी उदारता प्राप्त करनेके लिये तरुणोंको छात्र जीवनमें ही साधना प्रारंभ करनी चाहिये।

मनुष्यत्व लाभका एकमात्र उपाय मनुष्यत्व धामकी राहमें आनेवाले समस्त रोड़ोंको चूर्ण विचूर्ण करना है। जहा जब अत्याचार, अविचार और अनाचार देखो निर्भीक हृदयसे सिर ऊंचा करके खड़े हो जाओ। वर्तमान युगमें आत्म रक्षाके लिये और जातिके उद्धारके लिये जो शक्ति हमे चाहिये वह वन, कन्दराओं और पर्वतकी गुफामें नहीं है। वह शक्ति निष्काम कर्म द्वारा अविराम संग्राममें प्राप्त होगी। अत्याचार देखकर भी जो व्यक्ति उसके निवारणकी चेष्टा नहीं करता वह अपने मनुष्यत्वका अपमान करता है। जो व्यक्ति अत्याचारके

निवारणमे क्षतिग्रस्त होता है, विपन्न होता है, जेल भोगता है, उसी त्याग और अत्याचारके बीच उसका मनुष्यत्व विकसित होता है। इसीलिये तुम्हारे समान ही एक छात्र खड्गबहादुर सिंह मातृजातिकी रक्षाके सम्मान स्वरूप बरेण्य वीर रूपमे भारत पूज्य हुआ है। कलकत्ता विश्वविद्यालयसे जिस कदर हर साल Gold Medellist स्वर्णपदक प्राप्त क्षात्र निकलते हैं वैसे एक हजार छात्र एकत्र करनेपर भी एक खड्गबहादुर न होगा।

स्कूल, कालेज, घर, बाहर, रास्तेमे, जहाँ भी अत्याचार, अविचार और अनाचार देखो वीरकी तरह अग्रसर होकर बाधा दो। मुहूर्त भरमें वीरत्वके आसनपर प्रतिष्ठित होओगे। जीवन श्रोत हमेशाके लिये सत्यकी ओर फिर जायगा। समस्त जीवन ही रूपान्तरित हो जायगा। मैंने जो कुछ थोड़ी बहुत शक्ति सञ्चितकी है, वह इसी उपायसे की है।

और एक बात कहकर मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ। छात्र समाजको संघबद्ध करना होगा। वही भविष्यके अधिकारी हैं, उन्हें ही देशका उद्धार करना होगा। उन्हें बतलाना होगा कि देशके उद्धार करनेकी सामर्थ्य और शक्ति उनमे है। छात्रसमाजको अपने हृदयमें आत्म विश्वास प्राप्त करना होगा। अपने ऊपर और अपने राष्ट्रपर विश्वास हुए बिना कोई भी बड़ा काम नही हो सकता। भारतके तरुण समाजपर, छात्र समाजपर मेरी अपरिसीम श्रद्धा है और मैं उन्हें दिलसे चाहता हूँ। इसलिये वे भी मुझे चाहते हैं। तुम्हारे अन्दर कितनी

शक्ति है, यह तुम नही जानते पर मैं जानता हूं। जिस दिन तुम्हारी आत्मविस्मृति दूर होगी, तुम फिर आत्म विश्वास पाओगे, जिस दिन साधना द्वारा तुम मृत्युञ्जयो बनोगे उस दिन तुम असाध्य साधन कर सकोगे।

मैंने जान बूझकर ही इस भाषणमे विदेशोंके छात्रान्दोलनोके सम्बन्धमे कुछ नही कहा। विभिन्न पुस्तको और समाचार पत्रोमे ये संवाद पाये जा सकते है। यहा मैं शिक्षकका काम करने नहीं आया हूँ मैं आया हूँ अपने हृदयकी अनुभूति और जीवनकी अभिज्ञताका निवेदन करने। अपने हृदयमे संघ बद्ध होनेका भाव जगाना होगा, समयोपयोगी गाने बनाने होंगे, छात्रोपयोगी पत्र निकालने होंगे, छात्रोंका झण्डा बनाना होगा और छात्र साहित्यको जन्म देना होगा। छात्रोंकीएक स्वय सेवक मंडली गठित करनी होगी, जैसी कि कलकत्ता कांग्रेसके समय की गई थी। *Volunteer organisation* स्वयसेवक दल की सहायतासे छात्र निर्भीक और सहिष्णु होंगे और उन्हे शृंखलित तथा आज्ञाकारी होनेकी शिक्षा मिलेगी। इस प्रकार छात्र-समाजमें पारस्परिक प्रीति और सहयोगिताके भीतर सघबद्धतासे सघ शक्तिका उद्भव होगा और *Class patriotism* की सृष्टि होगी। हमारे छात्रोमे इस समय *Class patriotism* सघबद्धताकी आवश्यकता है। भारतके समस्त छात्रोंके प्राण एक सूत्रमे बाधने होगे। इस सगठित शक्तिके सामने कोई भी बाधा विघ्न ठहर न सकेगा। जाग्रत छात्र-शक्ति अपनो जातिको सम्पूर्ण बधनोंसे

मुक्त कर स्वाधीन भारतकी सृष्टि करेगी और विश्वमें भारतके लिये गौरव-मय आसन प्राप्त करेगी।

भाइयो, मेरा वक्तव्य शेष हुआ. मैं छात्र था और अब भी छात्र हूं। मैं तुम्हारा ही हूं। तुम मेरे हृदयका प्रेम और श्रद्धा ग्रहण करो।

(राष्ट्रपति सुभाष चन्द्र सुरमाने के छात्र सम्मेलनके सभापति निर्वाचित हुए थे, किन्तु वहां न जा सकनेके कारण उन्होंने अपना भाषण लिखकर भेज दिया था, सम्मेलनके सभापतिने निम्न-लिखित भाषण पढकर सुनाया था।)

२

"प्रत्येक व्यक्ति और जातिका एक कर्म और आदर्श है जिसका अवलम्बन और आश्रय ले वह गठित होती है। उस आदर्शकी साधना ही उसका जीवनोद्देश्य होता है और उसे बाद देनेसे उसका जीवन अर्थहीन और निष्प्रयोजन हो जाता है।"

आपने आज किसलिये इस छात्र सभाका आयोजन किया है, वह आप लोग ही जानें। तब भी इस सभामें आनेकी प्रवृत्ति और साहस इसलिये हुआ कि मै सोचता हूँ मैं भी आपकी तरह ही एक छात्र हूँ। "जीवन वेद" का मैं अध्ययन करता रहता हूँ और जीवनके आधारसे जिस ज्ञानका उदय होता है उसी ज्ञानकी प्राप्तिमें मैं इस समय संलग्न हूँ।

प्रत्येक व्यक्ति या जातिका एक धर्म या आदर्श (*Ideal*) है। उसी (*Ideal*) या आदर्शका अवलम्बन और आश्रयकर वह गठित होती है। उसी आदर्शको सार्थक करना ही उसके जीवनका उद्देश्य होता है और उसे बाद देनेसे उसका जीवन अर्थहीन और निष्प्रयोजन हो जाता है। देश और कालके सीमित क्षेत्र आदर्शका क्रम-विकाश या अभिव्यक्ति एक दिन या एक सालमें नहीं होती। व्यक्तिके जीवनकी साधना जिस प्रकार बहु वर्ष व्यापी होती है, जातिके जीवनमें भी साधना पीढ़ी दर पीढी चलती आती है। इसीलिये विद्वान् कहते हैं, आदर्श एक प्राण गतिहीन वस्तु नहीं है। उसमें वेग है, गति है, प्राण सञ्चारिणी शक्ति है।

पिछले सौ वर्षोंमें जो आदर्श हमारी जातिमें आत्म-प्रकाशकी चेष्टा कर रहा है, सब समय उसका परिचय हम नहीं भी पा सकते हैं। जो चिन्ताशील है, जिसके अन्तरदृष्टि है, वही वाह्य घटनाकी परम्पराके भीतर अन्तः सलिला फल्गुकी तरह आदर्श धाराको देख सकता है। इसकी उपलब्धि होनेपर ही आदमी समझ सकता है। उसका पथ कौन सा है और उसका पथ प्रदर्शक कौन है? किन्तु ऐसी उपलब्धि हर समय न होनेके कारण हम भ्रान्तपथ स्वीकार करते और भ्रान्त गुरुका पथानुसरण करते हैं। हे छात्र मण्डली! तुम यदि अपने जीवनको गठित करना चाहते हो तो भ्रान्त गुरु और भ्रान्त पथके प्रभावसे अपनी रक्षा करो और आत्मस्थ होकर जीवनका वास्तविक आदर्श पहचान लो।

१५ वर्ष पहले बंगालके छात्र समाजको जो आदर्श अनुप्राणित करता थो, वह था स्वामी विवेकानन्दका आदर्श। उस आदर्शके प्रभावमे तरुण बगाली काम क्रोधादि रिपुओंको जय कर, स्वार्थपरता और सब तरहकी मलिनतासे मुक्त होकर आध्यात्मिक शक्तिके बलसे शुद्ध बुद्ध जीवन लाभके लिये वद्ध परिकर था। समाज और जातिके गठनका मूल है—व्यक्तित्वका विकाश। इसीलिये स्वामी विवेकानन्द हमेशा कहा करते थे, (*Man making is my mission*) सच्चा आदमी तैयार करना ही मेरे जीवनका उद्देश्य है।

किन्तु व्यक्तित्वके विकासपर इतना जोर देनेपर भी स्वामी विवेका-नन्द जातिकी बात बिलकुछ भूल नही गये थे। कर्महीन संन्यास और उद्यमहीन अदृष्टवादमे उनका विश्वास नही था। रामकृष्ण परमहंसने अपने जीवनकी साधना द्वारा सब धर्मोंके समन्वयमें जो सफलता प्राप्त की थी, वही स्वामीजोके जीवनका मूल मन्त्र था। वही भारतकी भावी राष्ट्री-यताकी मूल भित्ति है। सर्व धर्म समन्वय और सकलमत सहिष्णुताकी प्रतिष्ठा हुए बिना हमारे इस वैचित्र्य पूर्ण देशमें राष्ट्रीय भवन निर्मित न हो सकेगा।

विवेकानन्दके युगके पहले जिस समय हमारे नवयुगका प्रथमारंभ हुआ था उस समय हमारे पथ प्रदर्शक थे, राजा राममोहनराय। धर्मके नामपर अधर्म हो रहा था, कुसंस्कारोंने समाजको आच्छादित कर रखा था तथा हिन्दू समाजके टुकडे-टुकडे कर रखे थे, उसके ध्वंसके लिये राजा

राममोहन कृत संकल्प थे। वेदान्तके सत्यका प्रचार होनेसे हिन्दू समाज धर्मका बाहरी आवरण छोड सकेगा, सत्य-धर्मका आश्रय ले सकेगा। भेद ज्ञान भूल कर एकतामे आबद्ध होगा। यही उनका विश्वास था। धार्मिक जगतमें परिवर्तन करनेके पहले चिन्ता जगतमे तूफान लाना होता है। इसीलिये भारतीय विचार शक्तिको जगानेके लिये उन्होंने पाश्चात्य ज्ञान विज्ञानकी प्रयोजनीयता अनुभव की थी।

भारतको जगानेके लिये मनोराज्यमें जो विप्लव राजा राममोहन रायने किया था. यथासमय वह विप्लव समाजमें दिखलाई पड़ा। केशव चन्द्के समय समाज सस्कारका काम द्रुत गतिसे चलने लगा। ब्राह्म समाजके उपदेशोंसे नव जागरण प्रारभ हुआ। कुछ समय बाद ब्राह्म समाज जब हिन्दू समाजसे अलग हो गया और हिदू समाजमे भी जागरण आ गया तब ब्राह्म समाजका प्रभाव क्रमशः क्षीण होने लगा।

राजा राममोहन रायके समयसे विभिन्न आन्दोलनों द्वारा भारतकी मुक्ति आकाक्षा क्रमशः प्रकट होती आ रही है। उन्नीसवां शताब्दीमें यह आकाक्षा विचारों और समाजमें प्रकट हुई थी, राष्ट्रीय क्षेत्रमें उसका आविर्भाव नहीं हुआ था। क्योंकि उस समय भारतवासी पराधीनताकी मोह-निद्रामे पड़े सोचते थे. भारतमे अंग्रेजी राज्य एक दैवी घटना है। उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तमें और बीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें रामकृष्णानन्दने स्वाधीनताका अखण्ड आभास दिया। *Freedom ! freedom is the song of the soul.* स्वाधीनता ! स्वाधीनता ! यही आत्माकी

पुकार है। यह वाणी भारतवासियोंको जब स्वामी विवेकानन्दके हृदयसे निकली तो उसने सबको मुग्ध और उन्मत्त बना दिया।

स्वामी विवेकानन्दने कहा कि सब बन्धनोंको तोड़कर सच्चा आदमी बनना होगा। राजा राममोहन रायने सोचा था कि साकार खण्डन और वेदान्तके निराकार प्रचार द्वारा वे जातिको एक सार्वभौमिक भित्तिपर खड़ा कर सकेंगे। ब्राह्म-समाज इसी पथपर चला था पर हिन्दू-समाज उससे और भी दूर हो गया। इसके बाद विशिष्टा द्वैत मूलक और द्वैताद्वैत मूलक सत्यके प्रचार द्वारा रामकृष्ण और विवेकानन्दने जातिको एक सूत्रमें बाँधनेकी चेष्टा की। स्वाधीनताका जो अखण्ड रूप हम विवेकानन्दके जीवनमें देखते हैं, उनके युगमें उसका राष्ट्रीय क्षेत्रमे प्रवेश नही हुआ था। अरविन्दने पहले-पहले राष्ट्रीय स्वाधीनताका सन्देश दिया। "वन्दे मातरम्" पत्रिकामें उन्होंने लिखा, *We want complete autonomy free from British Control.* तभी युवकोंने भी स्वाधीनताका अनुभव किया कि इतने दिन बाद मन लायक आदमी मिला। भाव प्रवण बंगाली स्वाधीन भारतका स्वप्न देखकर विभोर हो उठे। अब भी काममें उसी संदेशकी प्रतिध्वनि हो रही है, जिसे अरविंदने कलकत्तेके मुक्त प्रागणमें सुनाया था—

'I shall like to see some of you becoming great, great not for your own sake but to make India great

so that she may stand up with lead erect among the free nations of the world.

सम्पूर्ण स्वाधीनताकी प्रेरणा पाकर बंगाली जाति तूफान, आंधीको तुच्छमान विप्लवके तूफानके भीतरमें बढ़ी चली आ रही है।

१९२१ मे अपने असहयोगके साथ महात्मा गाधीको कहते सुना, "जन साधारणको छोड देनेसे, उनमे स्वाधीनताकी आकाक्षा न जगानेसे स्वराज्य नही मिल सकता।" असहयोग भारतके लिये नया नहीं। यशोहर जिला वालोंने इसी पथका अवलम्बन कर नीलहे साहबोंके अत्याचारसे आत्मरक्षा की थी। पर जो महात्मा गाधीने कहा था, वह राष्ट्रीय क्षेत्रमें बिलकुल नवीन था।

देशबन्धुके जीवनमे इसका और भी विकाश हुआ। उन्होंने अपने लाहौरके भाषणमें साफ तौरसे कहा कि वे स्वराज्य चाहते हैं। पर वह स्वराज्य मुट्ठी भर लोगोंके लिये नही, वह सबके लिये, जन साधारणके लिये होगा। इस आदर्शको उन्होंने अखिल भारतीय श्रमिक सभामें देशवासियोके सम्मुख रखा था।

देश बन्धुने एक और बात बतलायी थी कि मनुष्यका जीवन, जाति और व्यक्तिका जीवन एक अखण्ड सत्य है। इसको दोमे या बहुमें बाटा नहीं जा सकता। मनुष्यके प्राण जब जाग्रत हो जाते हैं, तब सब दिशाओंमें उसका परिचय मिलता है। मनुष्य जीवन समस्त विश्व-वैचित्र्य पूर्ण है। इसका नाश करनेमे जीवनका विकाश नहीं बल्कि ध्वंस होगा।

इसीलिये वैचित्र्य द्वारा, वहु द्वारा मनुष्य और जातिका विकाश साधित करना होगा।

रामकृष्ण और विवेकानन्दने आध्यात्मिक जातिमे एक और वहुका जो समन्वय किया था राष्ट्रीय क्षेत्रमें देशवधुने भी उसी समन्वयका प्रयत्न किया था। वे सास्कृतिक मिलनमें जितना विश्वास करते थे, सास्कृतिक विरोधमें भी उनका उतना ही विश्वास था। वे *Fede1 ati-on of cultu1e* मे और भारतकी मौलिक एकतामें विश्वास करते थे और उसी प्रकार बंगालीकी विशिष्टतामें भी उनका विश्वास था। राजनैतिक क्षेत्रमें वे *Cent1 alised state* की अपेक्षा *Fede1 al state* अधिक पसन्द करते थे।

जिस सर्वा गी विकाशमें देशबन्धुका इतना विश्वास था, वही इस युगकी साधना है। यह साधना सार्थक करना तो पहले स्वाधीनताके अखण्ड रूपका दर्शन करना होगा। आदर्शकी पूर्ण उपलब्धि हुए बिना मनुष्य कभी भी कर्मक्षेत्रमें जय लाभ नही कर सकता। इसीलिये सम्पूर्ण भारतको, विशेष कर तरुण समाजको कहना होगा कि जिस स्वराज्यका स्वप्न हम देखते हैं, उस राज्यमे सब मुक्त होंगे, व्यक्ति मुक्त समाज मुक्त, जहा मनुष्य राष्ट्रीय बंधनसे मुक्त है, सामाजिक बंधनसे मुक्त है, आर्थिक बंधनसे मुक्त है। राष्ट्र समाज और अर्थनीति इस त्रितापसे हम मनुष्य जातिको, देश वासियोंको मुक्त करना चाहते हैं।

जो सोचते हैं कि राष्ट्रीय बंधनसे मुक्त करेंगे किंतु समाजकी

व्यवस्था ज्योंकी त्यों रखगे, या जो समझते हैं कि सामाजिक बंधनोंको चूर्ण कर देंगे कतु राष्ट्रीय क्षेत्रमे किसी तरहका विप्लव नहीं करेंगे, वे सब भ्रान्त हैं। वस्तुतः शरीरका स्वास्थ्य वापस आनेपर जैसे शरीरका प्रत्येक अग अपूर्व श्री मण्डित हो जाता है, उसी प्रकार जब जाति जग उठती है तब उसका जागरण सब दिशाओंमें प्रस्फुटित होता है। जाति जब सब तरहके बंधनोंसे मुक्त होना चाहती है तब कोई नहीं कह सकता है, *Thus for and no further* पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये सम्पूर्ण जातिको आजादीके लिये दीवाना बन जाना होगा। किंतु जो व्यक्ति सामाजिक अत्याचारकी चक्कीमें पिस रहा है, या जो आर्थिक भारमे दबा हुआ है, वह व्यक्ति राष्ट्रीय स्वाधीनताके लिये पागल क्यों होगा? जिसके लिये सामाजिक और राजनैतिक अत्याचार सबसे बड़ा सत्य है, वह व्यक्ति जबतक इन सब अत्याचारोंसे मुक्त न होगा तब तक वह राष्ट्रीय स्वाधीनताके लिये व्याकुल क्यों होगा?

आज मैं छात्र समाजके सामने यह बात बड़े जोरोंसे कहना चाहता हू कि आप जिस युगमे जन्मे हैं उस युगका सबसे बड़ा धर्म सर्वांगीण परिपूर्ण मुक्ति है। स्वाधीन देश और स्वाधीन आबहवामें हमारी जाति रहना, बढना और मरना चाहती है।" "पुरुष अपने ही देशमें गुलाम, स्त्री अपने ही घरमें वन्दिनी" यह हालत और कितने दिन रहेगी और कबतक अपने नारी समाजका वर्णन करते हुए हम कहेंगे।

सबल होकर अबल हैं जो वीरोंसे भी भारी।

मनुष्य होकर मूरति सी वे भारतकी हा! नारी॥

स्वाधीनताका नाम सुनते ही बहुतसे कांप जाते हैं। राष्ट्रीय स्वाधीनताका नाम सुनते ही अनेक रक्त गंगाका स्वप्न देखते हैं, अनेक फांसीके तख्तेका भय देखते हैं। सामाजिक स्वाधीनताका नाम सुनते ही अनेक विश्रृङ्खलाका भय पाते हैं। किंतु मैं उश्रृङ्खलासे नहीं डरता। मनुष्यमें यदि भगवान निवास करते हैं, यदि मनुष्यमें मनुष्यता रहती है, यदि भगवान सत्य है, मनुष्य सत्य है तो आदमी हमेशाके लिये पथभ्रष्ट नहीं हो सकता। स्वाधीनता मदिरा पीकर यदि हम कुछ समयके लिये अप्रकृतिस्थ भी हो जाय तो शीघ्र ही प्रकृतिस्थ हो जायंगे। इसलिये उश्रृङ्खलाकी विभीषिकासे न डरो और बिना भय स्वतन्त्रताके पथमें बढे चलो। अपने मनुष्यमें विश्वास कर मनुष्यत्व लाभके लिये हमेशा सचेष्ट रहो।

आज देशके तीन बड़े बड़े समाज निश्चेष्ट पड़े हुए हैं, नारी समाज, उपेक्षित तथाकथित अनुन्नत समाज और कृषक श्रमिक समाज। इनके पास जाकर कहो, तुम भी आदमी हो, तुम भी मनुष्यत्वके सब अधिकार पाओगे। अतएव, उठो! जागो! निश्चेष्टता छोड़कर अपना अधिकार छीन लो।

भारत के छात्रो और युवको! तुम पूर्ण और अखण्ड मुक्तिके उपासक बनो। तुम्हीं भावी भारतके उत्तराधिकारी हो, अतएव तुम्हीं जातिको जगानेका भार ग्रहण करो। तुम्हारे अंदर अनंत अपरिमित

शक्ति मौजूद है। उस शक्तिको जगाओ और दूसरोंमें भी उसी शक्ति-को जगाओ।

जिस दिनसे भारत पराधीन हुआ है उसी दिनसे वह समष्टि साधना *Collective Sadhana* भूलकर व्यक्तिगत विकाशमें लग गया। फल स्वरूप कितने ही महापुरुष भारतमें हुए पर तब भी जाति की ऐसी दुर्दशा है। जातिकी रक्षाके लिये साधनाकी धाराका मुख दूसरी तरफ फेरना होगा। अब सबको समझ लेना चाहिये कि जाति को छोड़कर व्यक्तिकी सार्थकता नहीं है।

हमारी जातिके अनेक पुरुष, पीढ़ियोंसे ज्ञानार्जन करते आ रहे हैं, किन्तु इतने दिनपर भी समग्र जाति उस ज्ञानकी अधिकारिणी नहीं हो सकी। आजसे उसे इसकी अधिकारिणी बनाना होगा। सबको समझा देना होगा कि हम भारतकी प्रतिष्ठा करना चाहते हैं, ऐसे भारतकी प्रतिष्ठा करना चाहते हैं जहाँ जाति, धर्मकी पाबन्दीके सिवा सबका समान अधिकार हो, समान हक हो, सबको समान सुयोग हो। जिस दिन समस्त देश यह बात समझ जायगा उसी दिन वह मुक्त होनेके लिये अधीर और उन्मत्त हो जायगा।

जातिका रक्त स्रोत मानो क्षीण हो रहा है उसे नवीन खून चाहिये। भारतका इतिहास पढ़कर देखो, बहुबार रक्त समिश्रण हुआ है। इस रक्त सम्मिश्रणके फलसे बारबार मृत्यु मुखमें गिरकर भी नवजीवन लाभ कर सकी है। जो वर्ण शकरत्वका भय करते हैं वे

हमारी जातिका इतिहास नही जानते तथा उन्हे मनोविज्ञान (*Anthro-pelogy*) का ज्ञान नहीं है। आज असवर्ण विवाहका अनुमोदन कर रक्त सम्मिश्रणमें सहायता करना होगा। इस रक्त सम्मिश्रणके लिये विदेशपर निर्भर करनेकी जरूरत नहीं है। हमारे यहा असवर्ण विवाह बहुत समयसे निषिद्ध था, इसलिये मैं समझता हूँ असवर्ण विवाहके प्रचलन द्वारा रक्त सम्मिश्रण हो सकता है और जातिमे जीवन शक्ति फिर आ सकती है।

भाइयो ! मै अपना वक्तव्य यहीं शेष करता हूँ। साम्यवाद और स्वाधीनताके प्रचारके लिये गाव गावमें घूमो। स्वाधीन भारतका जो चित्र मैंने तुम्हारे सामने खीचा उसे तुम अपने सब देश वासियोंके सामने खीचो। स्वाधीनताका पूर्ण स्वाद पाते ही वे पागल हो उठेंगे। किंतु तुम्हे पहले अपने हृदयमे यह अनुभूति जगा लेनी होगी। अपने हृदयमें जो प्रकाश उत्पन्न करो उसे ही दीपकवत् हाथमे ले लेकर घर-घर अलख जगाओ। चीनियो और रूसियोकी तरह किसानकी कुटिया और मजूरकी मॅढियामे जा जाकर स्वाधीनताका सदेश सुनाओ। जाओ। शक्ति स्वरूपिणी मातृ जातिके पास जो समाजके अत्याचारके कारण अबला हो रही हैं, उन्हे जगाओ, और कहो :—

अपना मान बचाना है यदि।
लो कृपाण रणमे जाओ॥

दल, सघ बनाकर घूमो, वहा जाओ जहा भारतका उपेक्षित

समाज है, वहां जाओ और कहो, भाइयो! बहुत दिन बाद, तुम्हें नवीन मंत्र सुनाने, तुम्हे मुक्त करने आये हैं, तुम्हें यह कहने कि तुम्हें भी मनुष्यके सब अधिकार प्राप्त हैं। तुम उठो, जागो। यह वीर भोग्या वसुन्धरा, तुम्हारे भोगके लिये भी है।

पूछना चाहता हूँ, यह काम कर सकोगे। हां, कर सकोगे। हां, तुम्ही यह काम कर सकोगे यह कहने मैं यहा आया हूं। बढे चलो! बढ़े चलो! तुम्हारी जय निश्चित है। तुम्हारी साधना सफल हो। भारत फिर आजाद, मुक्त, स्वाधीन हो। तुम्हारा जीवन सार्थक हो।

(हुगली जिला छात्र सम्मेलनमें सभापतिकी हैसियतसे
दिया हुआ भाषण २१ जुलाई सन् १९२९)

३

'आजका युवक आन्दोलन लक्ष्यहीन युवा युवतियोंका अभिप्राय नहीं है। दायित्व पूर्ण, कर्मशील युवा और युवती चरित्र और व्यक्तित्व गठित कर सुचारु रूपसे देशका कार्य करना चाहते हैं। यही उनका आन्दोलन है।"

इसकी दो कर्म धारा है या होनी चाहिये। सबसे पहले उन सब समस्या ओंपर विचार करना जो सिर्फ छात्रोंकी अपनी है। यथा शारीरिक, मानसिक, नैतिक दृष्टिसे उन्नति करना तथा छात्रोंका यह समझना चाहिये कि वे भविष्यके उत्तराधिकारी हैं; इसके लिये उन्हें जीवन संग्रामके लिये अभीसे तैयार होना है।

मैं स्वाधीनता कहनेसे समाज और व्यक्ति, नर और नारी, धनी और दरिद्र सबके लिये स्वाधीनता चाहता हूँ। यह सिर्फ राष्ट्रकी बंधनसे मुक्ति नहीं है बल्कि यह अर्थका समान विभाग, जाति-भेद और सामाजिक अविचारका निराकरण और सामुदायिक संकीर्णताका लोप सूचित करता है। अविवेचक इस आदर्शको असम्भव कह सकते हैं किंतु यही प्राणोंकी भूख मिटा सकता है। सम्पूर्ण रूपमे मुक्त भारतकी मूर्ति ही हमारे हृदयोंपर विराज रही है। जीवनका एकही उद्देश्य है और वह है सब तरहके बधनोंसे मुक्ति, स्वाधीनताके लिये उदग्रीव इच्छा ही जीवनका गान है। स्वाधीनता ही जीवन है, स्वाधीनताकी खोजमें जीवन देना ही अविनश्वर गौरव है।"

पजाब निवासी भाई बहनो !

पचनदकी पवित्र भूमिमें मेरे प्रथम आगमनपर आपने मुझे जिस स्नेहके साथ अभिनदित किया है, इसके लिये मैं हृदयसे धन्यवाद देता हू। मैं आपकी अभ्यर्थना और सम्मानके योग्य नहीं हूँ यह मुझे मालूम है। इसीलिये मेरी एक मात्र प्रार्थना यही है कि यहा जो सौजन्य और आतिथेयता मैने पायी है उसकी कुछ योग्यता अर्जन कर सकूं।

अपना मत व्यक्त करनेके लिये आपने मुझे कलकत्तेसे यहाँ बुलाया है, उसी आह्वानके कारण आज मैं आपके समाने उपस्थित हूँ। किंतु आपने विशेष रूपसे मुझे ही क्यों बुलाया। पूर्व और पश्चिम मिलकर अपनी समस्याका समाधान करेंगे इसीलिये क्या ? ना, बल्कि अंग्रेजों

द्वारा सर्व प्रथम विजित बंगाल और सबसे अंतमे विजित पंजाब दोनों एक दूसरेकी सहायता चाहते हैं, या आपके और हमारे हृदयोंमें एक ही विचार एक ही आशा जाग्रत है, इसलिये ?

भारतके एक विश्वविद्यालयका विताडित छात्र आज लाहौरके छात्रोंके सामने व्याख्यान दे रहा है, यह एक आश्चर्य है। न जाने कहासे नये नये आदमी और नये-नये भाव उत्पन्न होकर दुनियामें आदर पा रहे हैं, वर्त्तमान समयको दुःसमय कहने वालोंके लिये इससे बढ़कर और आश्चर्य क्या हो सकता है। मेरा पूर्व इतिहास जानकर यदि आपने मुझको बुलाया हो तो मैं क्या कहूंगा इसका अनुमान करना सहज है।

बधु गण ! पंजाब और पंजाबके युवकोंके प्रति मेरे हृदयमें श्रद्धाके भाव जग रहे हैं। यतीन्द्रनाथदास तथा अन्यान्य कारारुद्ध बंदियोंके लिये उन्होंने जैसे कष्ट सहे हैं उनसे बंगालीका हृदय मुग्ध हो गया है। यही नही यतीन्द्रनाथका शव लेकर बहुतसे पंजाबी कलकत्तातक गये हैं। हम भाव प्रवण हैं, आपकी इस महानुभावताने हमारे और आपके बीच एक अनिर्वचनीय सख्यताकी सृष्टि की है। घोर दुर्दिनमें पंजाबने बंगालका जो उपकार किया है उसे बंगाली कभी न भूलेंगे।

यतीन्द्रका उल्लेख कर आपके विशिष्ट नेता डा० आलमने एक दिन कहा था, यतीन्द्रका जीवन और मृत्यु मानो सूर्य और चंद्रकी विपरीत गतिकी तरह था। जीवितावस्थामें कलकत्तासे लाहौर और

मरनेपर लाहौरसे कलकत्ता, यतीन्द्रकी लाश नश्वर मांस पिण्डके रूपमें कलकत्ता वापिस नहीं आयी बल्कि वह एक पवित्र, महत्, स्वर्गीय भावका प्रतीक होकर लौटी थी। आगामी पीढी वालोंके पथ निर्देशके लिये वह आकाशके नक्षत्रकी भांति उज्ज्वल होकर हमारे राष्ट्रीय जीवननमें वर्त्तमान है। आत्म त्याग और दुःखसे निकलकर ऊपर हो गया। भावमें, आदर्शमें मनुष्यके इतिहासमे जो कुछ महत् पवित्र है, वह सब उसमे पूर्ण रूपमे प्रकाशित हो वर्त्तमान है। अपना विसजन कर उसने भारतकी आत्माको ही उद्‌बुद् नहीं किया है बल्कि उसके सारे प्रान्तोंको एक अटूट बंधनमें बांध दिया है।

हम स्वाधीनताके नव प्रभातके जितना ही पास पहुँचते हैं हमारा दुख, वेदनाका पात्र उतना ही भरता जाता है। प्रतिदिन क्रमशः अपने हाथोंमे राज शक्ति जाते देखकर हमारे शासकोंका निर्दय हो जाना स्वाभाविक है और यदि क्रमशः वे सभ्यताकी नकाब हटाकर, मनुष्यत्वका रूप सदहृदयता, छोड़कर प्रत्याचारका भीषण स्वरूप प्रकाश करे तो इसमें भी कुछ आश्चर्य नहीं है। आजकल पंजाब और बंगालभरमें सबसे अधिक अत्याचार हो रहे हैं। वस्तुतः यह आनन्दका विषय है क्योंकि इन्हीं अत्याचारोंके कारण हम स्वराज्यकी योग्यता हासिल कर रहें हैं। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त जैसी प्राण शक्तिको कभी भी दबाकर नहीं रखा जा सकता। बल्कि अत्याचार और दुखसे वीरका उद्भव होता है।

आप शायद नहीं जानते कि बंगलाने साहित्यमें पंजाबकी अनेक घटनाओंका वर्णनकर अपना भण्डार बढाया है। रवीन्द्रनाथ आदि अनेक कवियोंने आपके महापुरुषोंके यश गाये हैं। बंगालके घर-घरमें उनका प्रचार है। आपके साधु सन्तोंकी उपदेशवचनावलि हमारे यहां प्रचलित है और असंख्य बंगालियोंको सान्त्वना और शान्ति देती है। सिर्फ मानसिक दृष्टिसे नहीं राजनैतिक दृष्टिसे भी हम संयुक्त हैं। सिर्फ भारतमें ही नहीं सुदूर बर्मा और अण्डमनकी जेलोंमें बंगालके आजादीके दिवानोंके साथ पंजाबी वीरोंका साक्षात् होता है।

भाइयो! इस वक्तृतामें विशेष रूपसे राजनीतिकी चर्चा ही करूंगा तो इसके लिये कैफियत न दूंगा। हमारे यहां कुछ ऐसे विशिष्ट सज्जन हैं जिनकी राय शरीफमें विजित जातिके लिये राजनीति निरर्थक है तथा छात्रोंको तो उससे बहुत दूर रहना चाहिये। मेरा दृढ विश्वास है कि पराधीन जातिका राजनीति अनुशीलनके सिवा कोई कर्त्तव्य नहीं है। पराधीन देशको समस्याका समाधान करते समय मालूम होता है कि हर-एक समस्याके मूलमें राजनीति है। देशबन्धु कहते थे जीवन एक अखण्ड पूर्ण सत्य है अतएव राजनीति और अर्थनीतिके बीचमें, अथवा इन दोनों और शिक्षा नीतिके बीचमें कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती। मनुष्यके जीवनको टुकड़े-टुकड़े करके नहीं देखा जा सकता। राष्ट्रीय जीवनकी प्रत्येक समस्या परस्पर ग्रथित है। इसलिये पराधीन जातिकी अधोगतिका मूल है राजनैतिक दासत्व। इसलिये छात्र जिस

बातकी बिलकुल उपेक्षा नहीं कर सकते वह यह है कि किस उपायसे राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त की जाय।

अन्य राष्ट्रीय कामोंके लिये निषेधाज्ञा जारी न कर सिर्फ राजनीति पर ही क्यों प्रतिबन्ध लगाया जाता है यह मैं नहीं समझ सकता। किसी भी राष्ट्रीय कार्यमें सहयोग न देनेकी आज्ञाका अर्थ तो समझा भी जा सकता है किन्तु सिर्फ राजनीतिके सम्बन्धमें निषेधाज्ञाका कोई मूल्य नहीं है। पराधीन देशकी सब समस्याएँ जब राजनीति मूलक हैं तब राष्ट्रका प्रत्येक कार्य राजनैतिक कार्य है। किसी भी स्वाधीन देशमें राजनीतिमें भाग लेना निषिद्ध नहीं है, बल्कि वहा इस कार्यके प्रति छात्रोंको उत्साहित किया जाता है। क्योंकि छात्रोंसे भावी मनीषी और राजनैतिक निकलते हैं। भारतीय छात्र राजनीतिमें काम न लेंगे तो कार्यकर्ता ही कहा मिलेंगे और उनकी शिक्षा ही कहां होगी। इसके सिवा इससे चरित्र और मनुष्यत्वका जो विकास होता है उसे तो मानना ही पडेगा। कर्महीन साधनासे चरित्र गठन नहीं होता। इसलिये राजनैतिक सामाजिक ओर कला विषयक काममें लगे रहना जरूरी है। किताबोंका कीड़ा, आफिसका क्लर्क या अच्छा लड़का बना देनेमे ही शिक्षाका उद्देश्य खत्म नहीं हो जाता। उसका उद्देश्य है ऐसे युवक तैयार करना जो सब दिशाओंमें सम्मान प्राप्त कर यश अर्जन करें।

सबसे शुभ लक्षण यही है कि भारतके हर प्रान्तमें छात्रान्दोलन दिखलाई पड़ता है। मैं इस आन्दोलनको व्यापक युवक आन्दोलनका

एक अंश मानता हूँ। आजके छात्र सम्मेलनमें और दस वर्ष पहलेके छात्र सम्मेलनमें जमीन-आसमानका अन्तर है। उस समयके छात्र सम्मेलन सरकारी उद्योगसे होते थे जिनके द्वारपर ही लिखा रहता था। राजनीतिके सम्बन्धमें कुछ कहना मना है। एक दृष्टिकोणसे इन सम्मेलनोंकी उस समयकी कांग्रेसके साथ तुलना की जा सकती है जहां पहले ही प्रस्तावमें राजाके प्रति भक्ति प्रदर्शितकी जाती थी। अब कांग्रेस और छात्रान्दोलन दोनों हीने उस अवस्थाको बहुत पीछे छोड़ दिया है। आज हमारी विचार शक्ति बहुत कुछ विकसित हो गई है।

आजकलके युवक आन्दोलनकी एक विशेषता है। उसका चांचल्य, वर्तमान अवस्थाके प्रति असहिष्णुता प्रदर्शन और नवीन श्रेष्ठ मानव समाजकी स्थापनाकी प्रबल चेष्टा। उत्तरदायित्वका-ज्ञान और आत्म निर्भर होना इस आन्दोलनका मूल है। यौवन, प्रौढ़ और वृद्धके सिरपर सब भार रखकर निश्चित हो बैठना नहीं चाहता। इसलिये आजके युवक अपने दायित्वको आवश्यक कर्तव्य समझते हैं और उसके पालनकी योग्यता प्राप्त करनेमें सचेष्ट रहते हैं। युवान्दोलनका अंशरूप यह छात्रान्दोलन एक ही भाव और आदर्श द्वारा अनुप्राणित है।

मैंने जो दो धाराएं बतलायी हैं उनमेंसे पहलीके अनुसार कार्य करनेमें तो अधिकारियोंकी कुदृष्टि नहीं पड़ेगी, मगर दूसरी के निषिद्ध होनेकी सम्भावना है। पहलीके सम्बन्धमें विस्तृत विवरण देना उचित और वाञ्छनीय नहीं है। प्रत्येक छात्रमें बल, स्वास्थ्य, ज्ञान, शक्ति होनी

चाहिये। यदि शिक्षाके अधिकारियों द्वारा उचित व्यवस्था न हो तो आप लोगोंको स्वयम् प्रबन्ध कर लेना चाहिये। इस काममें गुरुजनोंसे उत्साह मिले तो बहुत अच्छा, यदि प्रतिकूल आलोचना मिले तो उसे अग्राह्य कर आप अपने पथपर बढ़े चलिये। आपका जीवन आपके हाथमें है और उसका दायित्व भी आपपर है तथा उसकी उन्नति करनी भी आपके हाथमें है।

यहा मै एक बात कहना चाहता हूँ कि छात्र सब *Co-operative swadeshi store* समन्वय स्वदेशी भंडार खोलकर छात्रोंका बहुत उपकार कर सकता है। छात्र ऐसे भण्डारोंको सुचारु रूपसे चला सके तो एक साथ दो उद्देश्य सिद्ध होंगे। एक तो कम दाममें स्वदेशी चीजें मिल सकेंगी तथा छोटे-छोटे अनेक गृहशिल्पोंको प्रोत्साहन मिलेगा। इसके सिवा छात्रोंको कार-बार चलानेका ज्ञान हो जायगा और स्टोरकी आमदनीसे छात्र समाजके कल्याणके काय किये जा सकेंगे।

छात्रोंके हितके लिये व्यायाम समिति, अखाड़े वाचनालय, पुस्तकालय, सङ्गीत समाज, समाज कल्याण सघ आदिकी स्थापना करनी होगी।

इसके सिवा एक अत्यन्त आवश्यक प्रश्न भावी शिक्षाका है। छात्रोंके सामने एक आदर्श समाजका नकशा रखना होगा, ताकि वे आदर्शको वास्तविक जीवनमें परिवर्तित करनेकी चेष्टा करें साथ ही उनके लिये एक कार्य क्रम तैयार करना होगा जिसे वे यथा-शक्ति पूरा करें।

इस कार्य क्रमको पूरा करनेमें उन्हें बड़ोंकी तरफसे होनेवाले विघ्नोंको सहना होगा। अगर दुर्भाग्यवश बड़ोंके साथ विरोध हो भी तो छात्रोंको निर्भीक और आत्मविश्वासी रहना चाहिये।

जिस आदर्शका हम सयत्न-पोषण करेंगे उसके सम्बन्धमें अपना मत प्रकट करनेके पहले मैं एक बात कहना चाहता हूँ। यूरोपके द्वारा जंजीरोंमें कसे हुए एशियाकी दुरवस्था प्रत्येक एशियावासीके दिलमें दुःख और अपमान उत्पन्न करती है, किन्तु यह समझना भूल होगा कि एशियाकी अवस्था हमेशा ही ऐसी बनी रहेगी। इतिहाससे मालूम होता है कि पहले एशियाने यूरोपके विभिन्न देशोंको जयकर उनपर अपना अधिकार जमाया था। उन दिनो यूरोप एशियाके नामसे कांप उठता था। आज उस अवस्थामें परिवर्तन हो गया है किन्तु निराशाकी कोई बात नहीं है। एशिया अब अपनी गुलामीसे मुक्त होनेके लिये प्रयत्न कर रहा है और शीघ्र ही उसकी शक्ति और गौरवका उदय होगा तथा उसे स्वाधीन जातियोंमें उपयुक्त स्थान प्राप्त होगा।

पश्चिमके धुरन्धर लोग अक्सर पूर्वको अपरिवर्तनशील कहकर उसकी निन्दा करते हैं, जैसे कि कुछ दिन पहले तक वे टर्कीको यूरोपकी बीमार जाति कहते थे। किन्तु एशिया या टर्कीके लिये यह बात सच नहीं है। समस्तपूर्व इस समय नव जागरणसे ओतप्रोत है। सब जगह परिवर्तन हो रहा है, उन्नति हो रही है और सामाजिक व्यवस्थाके प्रति विद्रोह हो रहा है। जबतक चाहे पूर्व अपरिवर्तनशील रह सकता है।

किन्तु यदि वह परिवर्तन करना चाहेगा तो पूर्व-पश्चिमसे आगे निकल जायगा। आज एशियामें वही हो रहा है।

बीच-बीचमें कोई प्रश्न करता है, आज एशिया विशेषकर भारतवर्षमें जो चांचल्य दिखलायी पड़ता है, वह क्या सचमुच जीवनका चिह्न है या बाहरी उत्तेजनाकी प्रतिक्रिया मात्र है। मैं सोचता हूँ, नवीन सृष्टि ही जीवन का लक्षण है। जब देखता हू कि वर्तमान आन्दोलन एक नवीन पथ आविष्कार कर नवीन सृष्टिके लिये पूर्ण उद्यमसे अग्रसर हो रहा है, तब यही मानता हूँ कि सचमुच जातिमें नव जागरण हो रहा है और उसके अन्दर चेतनाका संचार हो रहा है।

भारतमें हम आज एक भाव धाराके बीचमे बह रहे हैं। जिसके चारों तरफ बहुतसे अनुकूल और प्रतिकूल स्रोत बह रहे हैं। इस तुमुल मिश्रणकी अव्यवस्थाके बीच साधारण आदमी भले-बुरेकी पहचान नहीं कर सकता। किंतु जातिकी लुप्त शक्ति वापिस लानेके लिये, उसका लक्ष्य स्थिर करनेके लिये और उस लक्ष्यतक पहुँचनेका मार्ग जाननेके लिये हमारे हृदयोंमें स्पष्ट धारणा होनी चाहिये।

एक अन्धकार पूर्ण युग पारकर भारतकी सभ्यता नवीन जीवनके पथपर अग्रसर हो रही है। फीनीशिया और बेबिलन सभ्यताकी तरह स्वाभाविकताके अभावके कारण हमारी भी सभ्यता लुप्त हो जायगी क्या? यह प्रश्न हृदयको आन्दोलित करता था, किंतु कालको पारकर वह फिर उठ खड़ी हुई है। फिरसे नव जीवन धारण करनेके लिये हमें विचारोंमें

विप्लव लाना होगा और जीव जगतमें नवीन रक्तका सम्मिश्रण करना होगा। इतिहास और विद्वानोंका मत माननेसे सिद्ध होता है कि इस उपायसे ही जीर्ण समाजको शक्तिमान किया जा सकता है। अगर मेरी बातपर विश्वास न हो तो. आप खुद जातिके उत्थान पतनके कारणका आविष्कार कीजिये। यह कारण जान लेने से ही हम जनताको बतला सकेंगे कि उन्नतिशील, शक्तिशाली जातिकी सृष्टि करनेके लिये किस पथका अवलम्बन करना चाहिये।

भावोंमें विप्लव लानेके लिये हमें एक ऐसे आदर्शको सामने रखना होगा जो कि बिजलीकी तरह हमारे अन्दर शक्ति संचार कर सके, वह आदर्श है, स्वाधीनता। किंतु स्वाधीनताका अर्थ सब नहीं समझते, हमारे देशमें भी स्वाधीनताके अर्थमें परिवर्तन हो रहा है। स्वाधीनतासे मैं नर-नारी, समाज, व्यक्ति, धनी, दरिद्र सबकी स्वाधीनता मानता हूँ। यह सिर्फ राष्ट्रीय बन्धन मुक्ति नहीं है, इससे अर्थका समान विभाग जाति भेद और सामाजिक भेदका नाश, साम्प्रदायिक संकीर्णताका नाश सूचित होता है। अविवेचक इस आदर्शको असम्भव कह सकते हैं, किंतु सिर्फ यही प्राणोंकी भूख शान्त कर सकता है।

राष्ट्रीय जीवनकी जितनी दिशाएं प्रकाशित होती हैं स्वाधीनताके आंशिक रूप उतने ही हैं। कोई-कोई स्वाधीनता कहनेमे उसकी एक विशेष दिशाको ही समझते हैं। स्वाधी[illegible]नताके इस संकीर्ण अर्थको छोड़कर [illegible] समय लगा है। यदि स्वा-
उसे व्यापक रूपसे ग्रहण करनेमें हमें बहुत

र्थपर नजर न रखकर हम स्वाधीनताके लिये ही उसे चाहें तो यह समझना चाहिये कि स्वाधीनताका वास्तविक अर्थ सिर्फ व्यक्तिकी स्वतन्त्रता नहीं है, बल्कि सारे समाजके लिये सब बंधनोंसे मुक्ति है। इस युगका यही आदर्श है। सम्पूर्ण रूपसे मुक्त भारतवर्षकी मूर्ति ही हमारे हृदयपर अधिकार किये हुए है।

स्वाधीनता प्राप्त करनेका एक मात्र उपाय है स्वाधीन व्यक्ति की तरह सोचना और अनुभव करना। हमारे हृदयोंमे विप्लवकी बाढ़ आ जाय, स्वाधीनताका भयंकर प्रवाह हमारी नस नसमे बह जाय। स्वाधीन होनेकी इच्छा जब हमारे हृदयमे जाग्रत होगी उस समय हमारे हृदयोंके विचार परिवर्तित हो जायंगे। सत्य और कर्मका आह्वान हमें अपने लक्ष्यतक पहुंचा देगा।

भाइयो! मै जिसे अपना जीवन लक्ष्य समझता हूँ-अनुभव करता हूँ, जो मेरे सब कामोंकी जड़ है, उसी आदर्शको आपके सम्मुख रखनेकी मैंने चेष्टा की है। आपको यह अच्छा लगेगा कि नही, नहीं जानता। किंतु यह मैं जानता हू कि जीवनका एकमात्र उद्देश्य है सब तरहके बन्धनोंसे मुक्ति। स्वाधीनताकी उग्र इच्छा ही जीवनका सुर है। सद्यजात शिशुकी झक नही, समस्त बंधनो के प्रति विद्रोहकी घोषणा है। अपने हृदयोंमें और अपने देशवासियोंके हृदयोंमें स्वाधीनताकी तीव्र आंकाक्षा हरएकके दिलमे जगानी होगी और तब भारतवर्ष कुछ ही दिनोंमें स्वाधीन हो जायगा।

भारतवर्ष स्वाधीन होगा ही, इसमें कोई सन्देह नहीं है, रातके बाद दिन जैसे आता ही है, उसी तरह परतन्त्रताके बाद स्वाधीनता आती ही है। भारतवर्षको बाधकर रख सके ऐसी शक्ति पृथ्वीपर नहीं है। आइये, हम ऐसे भारतवषका गौरवपूर्ण चित्र तैयार करें। जिसके लिये सर्वस्व देकर धन्य हों। मैंने स्वाधीन भारतकी अपनी कल्पना आपके सामने रखी, मैं चाहता हूँ स्वाधीन भारत संसार भरमें अपने सन्देशका प्रचार करे।

मैं कहना चाहत हूँ भारतवर्षका अपना एक सन्देश है जिसे सुनानेके लिये वह शताब्दियोंसे प्रतीक्षा करता हुआ जीवित है। जगतकी साधना और सभ्यताकी प्रत्येक दिशामें भारत अपनी तरफसे कुछ देगा, इस हीनता और पराधीनतामें भी उसका दान नगण्य नहीं है। अपनी जरूरतके अनुसार अपने पथपर चलनेकी स्वाधीनता मिलनेपर उसका दान कितना महान् और मूल्यवान होगा उसे जरा सोचकर देखिये।

मुमकिन है देशके कुछ विशिष्ट व्यक्ति स्वाधीनताकी यह व्याख्या स्वीकार न करे। उन्हें सन्तुष्ट न कर सकनेकी असमर्थताके लिये मुझे दुःख है। किंतु सत्य, न्याय और साम्यपर प्रतिष्ठित इस आदर्शको हम छोड़ नहीं सकते। अगर कोई हमारे साथ सहयोग न करे तो हमें अकेले ही इस पथपर बढ़ना होगा। किंतु यह निश्चित है कि लाख लाख भारतवासी स्वाधीनताकी यात्रामें हमारे साथी होंगे। बधन, अन्याय और

असाम्यके विरुद्ध जारी की गई लड़ाई बन्द नहीं की। जा[illegible]

अब समय आ गया है कि देशके सब स्वाधीनता कार्य संगठित होकर एक कतारमें आजायं। ये सिर्फ स्वाधीनता संग्राममें ही योग न देंगे बल्कि स्वाधीनताका संदेश देशके कोने-कोने में फैलानेके लिये प्रचारक भेजेंगे। अपनेमेंसे ही ऐसे सैनिकों और प्रचारकोंको उत्पन्न करना होगा। विस्तृत और अतर्व्यापी (*Intensive*) प्रचार और देशव्यापी स्वेच्छा सेवकोंका संगठन हमारे कार्यक्रमका एक अंग होगा। हमारे प्रचारक किसानों और मजदूरोंमे जाकर प्रचार-कार्य करेंगे, वे युवकों और संघोंको अनुप्राणित करेंगे तथा देशकी समस्त नारी जातिको जाग्रत करेंगे। क्योंकि आज नारीको हमें समाज और राष्ट्रमे समान अधिकार देना होगा।

भाइयो! आप कांग्रेसमे शामिल होनेके लिये तैयार हैं। कांग्रेस ही देशकी एकमात्र सर्व श्रेष्ठ राष्ट्रीय संस्था है। राष्ट्रकी सारी आशा उसीपर है। किंतु शक्ति और प्रतिष्ठाके लिये श्रमिक आन्दोलन, किसान आन्दोलन, नारी आन्दोलनपर निर्भर करना होता है, मेरा मत है कि इनपर निर्भर करना चाहिये। यदि हम शिल्पी, किसान, तथा कथित निम्न जाति, युवक, छात्र, नारीको स्वाधीनताके मंत्रसे उद्‌बुद्ध कर सकेंगे तो कांग्रेस असीम शक्तिशालिनी हो जायगी और देशको स्वतंत्र कर सकेगी। इसलिये यदि आप कांग्रेसकी वास्तविक सेवा करना चाहते हैं तो इन सम्पूर्ण आन्दोलनोंको सबल बनाना होगा।

हमारे ही पड़ोसमें चीन है, जरा उसके युग परिवर्तनको देखिये। देखिये कि चीनी छात्रोंने अपनी मातृभूमिके लिये क्या नही किया है। जितना चीनी छात्रोने अपने देशके लिये किया है क्या उतना भी हम अपने देशके लिये नहीं कर सकते। चीनका आधुनिक जागरण तो वहांके छात्र और छात्रियोंके संयत उद्योगका ही फल है। उन्होंने गाव-गाव ओर कारखाने-कारखाने जाकर स्वाधोनताके सन्देशका प्रचार किया है और देशको सघबद्ध किया है। भारतमे हमे भी वही करना चाहिये। स्वाधीनता कोई सहज प्राप्य वस्तु नहीं है। स्वाधीनताके पथमें जिस प्रकार विघ्न और विपत्तिया हैं उसी प्रकार गोरव और अमरत्व भी है। पुराना जो कुछ हमारे पथका रोड़ा है उसे तोड़कर तीर्थ यात्रियोंके दलकी तरह हमें स्वाधीनताके लिये अग्रसर होना होगा। स्वाधीनता ही जीवन है, स्वाधीनता पानेमे जीवनदान देना एक अविनश्वर गौरव है। आइये! आज हम सब मिलकर स्वाधीनता प्राप्तिके लिये प्राणपणसे चेष्टा करें। उसी उद्यममें जीवन देकर हम भी मृत्युञ्जयी यतीन्द्रनाथकी तरह देशसेवी कहला सकें। वन्देमातरम्।

(लाहौर छात्र सम्मेलनके सभापतिकी हैसियतसे दिये गये अंग्रेजी भाषणका अनुवाद)

' इस जराजीर्ण देशके मुखपर यौवनका पूर्ण प्रताप प्रकट करनेके लिये समस्त भारतका एक दृढ सगठन करना होगा तथा अच्छे-

बुरेके सम्बधमें अपनी धारणाए भी हमें परिवर्तित करनी होंगी।'

मध्य प्रदेश और बरारके छात्र सम्मेलनमें शामिल हो सका हू इससे मैं मन ही मन बहुत प्रसन्न हूँ। यह सिर्फ आनदका ही विषय नहीं है बल्कि ऐसे सम्मेलनमें सम्मिलित होना मेरे लिये सौभाग्यकी बात है। सिर्फ आपको खुश करनेके लिये ही यह बात नहीं कह रहा हूँ, यह मेरे मनकी बात है। इसमें बिलकुल अतिशयोक्ति नहीं है। क्योंकि छात्रोंके बीचमें आते ही मेरी चित्त वृत्तिका स्वतः विकाश होता है। समस्त द्विविधा और सङ्कोच मिट जाते हैं और मैं मनकी बात निसङ्कोच कह सकता हूँ।

विश्वविद्यालय छोड़े १० साल हो गये। किंतु अभी भी मैं अपनेको छात्रके सिवा और कुछ भी नहीं समझ सकता। किंतु मेरा वर्तमान विश्वविद्यालय आपके विश्वविद्यालयसे व्यापक है, इसे जीवनका विश्व--विद्यालय कहना ठीक होगा। मैं इस समय जीवन संग्राममें लगा हुआ हू। नित्य नवीन उपदेश और अभिज्ञता सग्रह करना ही मेरा काम है। तब भी मै समझता हूं छात्र जीवनका आदर्शवाद, कल्पना और भावुकता अभी भी मुझे छोड़कर नहीं गयी है। इसलिये आपके अभाव, अभियोग, आशा, आकाक्षाकी उपलब्धि करना मेरे लिये असम्भव नहीं है।

तब भी एक संदेह मेरे दिलमें उठ रहा है कि छात्र सम्मेलनके सभापति होनेकी योग्यता मेरे अदर भी है क्या? क्योंकि छात्र जीवन—

की निष्कलकताकी बात उठनेपर कहा जा सकता है मेरा छात्र जीवन निष्कलक नही था। अभी भी मुझे वह दिन याद है जब प्रिन्सिपलने मुझे सस्पेण्ड किया था। उनकी बात अभी भी मुझे याद है, उन्होंने कहा, "तुम कालेजमें सबसे उपद्रवी लड़के हो।"

मेरे जीवनमें वह एक स्मरणीय दिन है। इस दिनसे मेरे जीवन पथमें कई नये अध्याय खुल गये। उस दिन ही मैंने सर्वप्रथम अनुभव किया था कि किसी महान आनदके लिये कष्ट सहनेमें एक विमल आनंद है। इस आनंदके साथ जीवनके किसी आनंदकी तुलना नहीं की जा सकती। इस आनंदके सामने सब आनंद तुच्छ, अति तुच्छ हैं। अभी-तक मैंने अपने आदर्शमें राष्ट्रीयता और नीतिका परिचय पाया था किंतु उस दिन मेरी अग्नि परीक्षा हो गई और इस परीक्षामें उत्तीर्ण होकर मैंने देखा कि मेरे जीवनकी गति और कार्यपद्धति नियन्त्रित हो गयी।

भाइयो! आप सोचते होंगे, अजीब आदमी है, हमारी बात न कहकर अपनी बात सुना रहा है। किंतु पूछता हूँ आखिर मैं यहा क्यों आया हूं। मेरा उद्देश्य क्या है? नीति ज्ञान और राष्ट्रीयताके सबंधमें व्याख्यान छाटने मैं यहा नही आया हूँ। मैं अपनी जानकारीकी कुछ बातें आपको सुनाने आया हूँ। क्या यह सच नही है कि सिर्फ उसी उपदेशका मूल्य है जो उपदेश कष्ट और अभिज्ञताने प्राप्त हो।

भारतमें सब जगह चांचल्य दृष्टिगोचर हो रहा है। विभिन्न भावों और अघातोंका संघर्ष हो रहा है, अनेक आंदोलन चल रहे हैं, जिनमें

से अनेकका लक्ष्य है संस्कार करना और कुछका उद्देश्य है वर्तमान अवस्थाका नाशकर नवीनकी स्थापना करना। इस तरहके संघर्षमें ही नवीन भारतका जन्म हो रहा है। इस समय भविष्यपर नजर रखकर जातिकी भावी उन्नति और अवनतिका निर्धारण करना और नियत्रण करना बिलकुल सहज नहीं है। जो तरुण हैं जिनका आदर्श महान है, अत्यत उच्च है, जिनकी भावधारा राष्ट्रकी भावधाराके साथ मिल गई है वे ही इस कार्यके योग्य हैं।

भारतमें जो आदोलन चल रहे हैं उनका विश्लेषण करनेमे और उनपर अपना मत प्रकट करनेमें बहुत समय लगेगा। इसलिये मैं यह चेष्टा नहीं करूगा। तब भी मैं एक बात विशेष जोरसे कहना चाहता हूँ कि "इस जराजीर्ण देशके मुखपर यौवनका पूर्ण प्रताप प्रगट करनेके लिये समस्त भारतका एक दृढ सगठन करना होगा तथा अच्छे बुरेके सम्बधमें अपनी धारणाएं भी हमें परिवर्तित करनी होंगी।" सामाजिकता और नैतकताका नवीन ढगसे मूल्य आकना होगा। साधारण तौरसे देखनेसे ही मालूम होता है कि हमारे ये आदोलन गम्भीर नहीं हैं और न अधिक व्यापक। ये समग्र जातिकी नींद दूर नहीं कर सकते, यह हमारी जाति और समाजके दो एक अभाव अभियोगोंको स्पर्शकर जीवनको सार्थक करते हैं। यानी इनके द्वारा मामूली काम ही हो सकता है। सम्पूर्ण जातिको जगाना होगा। हम राष्ट्रका जागरण चाहते हैं, बाहरी छटपट नही, बल्कि आतरिक जागरण। समस्त जातिके प्राण जाग्रत होने

चाहिये। हमें यही सोचना है कि मामूली समयमें यह कैसे सम्भव हो सकता है। हमें इसी समस्याका समाधान करना होगा।

हमारा यह देश बहुत ही प्राचीन है, हमारी सभ्यता भी पुरानी है, तब भी इसका भीतरी आवेग नष्ट नहीं हुआ। जातिकी हैसियतसे हमने वीरकी भांति अनेक घात प्रतिघात सहे हैं। बीच-बीचमें हमारे अस्तित्व का प्रश्न उठा है पर अब भी जाति के हिसाबसे संसारमें हमारी गिनती है। अगर कभी हम शात, क्लांत अवसन्न रहे हों तो उसके लिये आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं है। क्योंकि जीवन रक्षाके लिये बीच-बीचमें सोने और विश्राम करनेकी जरूरत होती है। अवसन्न और द्विधाग्रस्त होनेपर भी हमारी मृत्यु नहीं हुई है। विचार, कार्यकी मौलिकता और सर्जन शक्ति ही जीवनके लक्षण हैं और इन विषयोंमें जातिके हिसाबसे और व्यक्तिगत तौरपर हम गर्व कर सकते हैं। हम यदि जीवित न रहते तो राष्ट्रीय जागरणकी समस्त आशा ही विफल हो जाती। हम अभी भी जीवित हैं और जातिके गठनके सम्पूर्ण उपादान हमारे पास हैं। इसीलिये आज भी हम उज्वल भविष्यका स्वप्न देखते हैं।

जो जागरण आत्माका है वही जागरण हम चाहते हैं, सिर्फ आत्म जागरणसे ही हमारे जीवनमें अमूल्य परिवर्त्तन सम्भव होगा। यहां-वहां थोड़ा बहुत सुधार करनेसे काम नहीं चलेगा। हमें सब कुछ बदलना होगा, बिलकुल नवीन जीवन धारण करना होगा। इच्छा हो तो इसे सम्पूर्ण विप्लव भी कहा जा सकता है।

विप्लव ! हा, विप्लवकी बात सुनकर चमकिये मत । विप्लवकी धाराके सम्बन्धमें हममें मतभेद हो सकता है, किन्तु मैंने अभीतक एक भी अदमी नही देखा जिसका विप्लवमे विश्वास नही हो । विवर्तन *Evolution* और विप्लव *Revolution* में कोई मज्जा मतभेद नही है, अपेक्षा कृत कम समयमे जो विवर्तन *Evolution* सम्पन्न होता है वही विप्लव *Revolution* है, या अधिक समयतक जारी रहकर जो विप्लव सम्पन्न हो वह विवर्तन है । विवर्तन और विप्लव ये दोनो ही एक शब्दमें परिवर्तन हुए । दुनियामे इन दोनोके लिये स्थान है, विवर्तन या विप्लव किसीको भी छोड़ देनेसे काम नहीं चलेगा ।

मैंने कहा है अच्छे-बुरेके सम्बन्धमे हमारी जो धारणाएं हैं उन्हें बदलना होगा । मैंने यह भी कहा है कि हमारे पूर्वारिचत जीवनमे आमूल परिवर्तन आवश्यक है । ससारमे गौरवमय आसन ग्रहण करनेके लिये, अन्य सब जातियोंके मुकाबिले खड़ा होनेके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है । उसी जीवनकी सार्थकता है, मूल्य है, अर्थ है जिस जीवनके सामने एक वृहत और महत आदर्श है । जो जाति उन्नति नही करना चाहती, दुनियामें अपना स्थान बनाना नहीं चाहती उस जातिके जीवित रहनेकी कोई जरूरत नहीं है । मैं यह नहीं कहता कि किसी स्वार्थकी रक्षाके लिये जातिकी उन्नतिकी जरूरत है, बल्कि दूसरी जातिकी उन्नतिके लिये ही एक जातिकी उन्नतिकी जरूरत है । समग्रमानव समाजको उदार और महान करनेके लिये प्रत्येक जातिको उन्नत होना होगा । ताकि आखोरमें

यह दुनिया सम्पूर्ण मानव जातिके लिये अधिकतर सुखकर और कल्याणकर हो जाय।

एक जातिको उन्नत करनेके लिये जितने उपादानोकी जरूरत पड़ती है वे सब उपादान भारतमें हैं। सासारिक, आध्यात्मिक या नैतिक किसी भी तरहके उपादानोंकी कमी नहीं है। भारत कितना प्राचीन है यह अभीतक निश्चय नही हो सका। पर अभी भी वह मरा नहीं जीवित है। वह क्यों जीवित है? क्योंकि उसे फिर महान उन्नत होना है। जगतको कुछ महान दान करनेके लिये अभी भी भारत बचा हुआ है।

भारतका लक्ष्य क्या है? उसका कर्तव्य क्या है? पहले अपनी रक्षा करना होगा और तब विश्वभण्डारमें कुछ न कुछ देना होगा। असंख्य असुविधाओंमें रहते हुए भी उसने जो कुछ दिया है वह बिलकुल नगण्य नहीं है। जरा कल्पना कर देखिये भारतवर्षको अपनी कल्पनाके अनुसार निर्विवाद और स्वाधीन भावसे अपना विकास करनेकी सुविधा होती तो मानव जातिकी संस्कृति और सभ्यताके भाण्डारमें उसका दान कितना अधिक होता।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि जातिमें स्थिर अक्लान्त कर्म प्रेरणा जगानी होगी, इसीसे वह असाध्य साधन कर सकेगी, दुनियाको चमत्कृत कर सकेगी। मेरा यह भी विश्वास है कि एक बार इस निद्रित जातिकी आखें खुल जायगी तो वह इस युगकी उन्नतिशील जातियोंमें आगे निकल जायगी। फ्रांसीसी दार्शनिक वर्गसनने *Class vital* प्रेरणादा-

यिनी शक्तिकी बात कही है। यही शक्ति समग्र जातिको कर्म पथमें, उन्नति पथमें संचालित करेगी। हमारी जातिकी प्रेरणादायिनी शक्ति क्या है? स्वाधीनताके लिये, विकासके लिये, आत्म विकासके लिये जो आग्रह है वही प्रेरणादायिनी शक्ति है। आत्म विकासके इस आग्रहका दूसरा रुख है बन्धनके प्रति विद्रोह। आप यदि स्वाधीन होना चाहते हैं तो आपके चारो तरफ जो बन्धन हैं उनके प्रति विद्रोह करना होगा। यह विद्रोह सार्थक होगा तभी आपको स्वाधीनता मिलेगी।

जिनमे आत्म सम्मानका ज्ञान बिल्कुल नही है, उनकी बात मैंने छोड़ दी है। इनके सिवा बाकी सबको गुलामीकी ज्वाला और अपमानका कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होता है। यह अनुभूति जब तेज हो जाती है तब दासत्व सह्य नहीं हो सकता। मनुष्य उस समय बन्धनोंको छिन्न-भिन्न करनेके लिये व्याकुल हो उठता है और जब वह किसी न किसी तरह प्रकृत स्वाधीनता का स्वाद पा जाता है तब उसकी व्याकुलता और भी बढ जाती है। स्वाधीन देशकी व्यक्तिगत जानकारी तथा स्वाधीन आबहवासे उत्पन्न सुखकर अवस्थाका पाठ और कल्पना द्वारा साधारण व्यक्ति स्वाधीनताका आस्वाद पाता है। देशको स्वाधीन करनेके लिये कठोर तपस्याकी जरूरत है। यह तपस्या क्या है? जातीय अपमान और वर्गगत वैषम्यकी प्रकृतिको दुसह करना होगा, स्वाधीनता प्राप्तिके आग्रहको क्रमशः प्रबलतम करना होगा। वस्तुतः देशको स्वाधीन करनेके लिये इस तपस्याकी ही जरूरत है। इतिहास पढ़कर

अपनी वर्तमान हालत देखकर, जीवनके आदर्शका ध्यान कर, स्वाधीन देशके साथ पराधीन देशकी तुलना कर हम राष्ट्रीय मुक्ति के लिये प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं।

मैं सोचता हूं *Baptism*, *Initiation* और दीक्षा आदिका एकमात्र अर्थ यही होता है कि स्वाधीनता प्राप्तिके लिये जीवन उत्सर्ग करना। सम्पूर्ण आत्मोत्सर्ग एक दिनमें सम्भव नही होता। स्वाधीनताके लिये हम जितने ही अधिक व्याकुल होंगे आनन्दकी अनुभूति उतनी ही अधिक होगी। इस आनन्दका भाषा द्वारा प्रकाश नहीं हो सकता। जब हम समझने लगेंगे कि जीवनका एक महान् उद्देश्य और अर्थ अवश्य है; उस समय ही विप्लव उपस्थित होता है। तब हमारी आशा, आकाक्षा, अनुभूति सब बदलकर नवीन रूप धारण कर लेती है। तब हमारी नजरमें एक ही वस्तु मूल्यवान मालूम पड़ती है। स्वाधीनताकी आराधना। ऐसे समयमें हमारी मनोवृत्ति बदल जायगी और उस आदर्शकी अनुगामिनी हो जायगी। किन्तु इस परिवर्तनकी अनुभूतिका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह परिवर्तन जब पूरा हो जायगा तब हमारा पुनर्जन्म होगा। तब हम वास्तविक "द्विज" होंगे। तब हम स्वाधीनताकी बात ही सोचेंगे। स्वाधीनताका स्वाद ही चखेंगे। स्वाधीनता का स्वप्न ही देखेंगे। हमारे सब कामोंसे स्वाधीनता प्राप्तिका आग्रहही प्रकट होगा। सौ बातकी एक बात यह है कि तब हम स्वाधीनताके नशेमें मतवाले होंगे। स्वाधीनता ही हमारे जीवनका सर्वस्व होगा।

प्राणोंमें स्वाधीनता प्राप्तिकी आकाक्षा जाग्रत होनेपर उसे सफल करनेके लिये उपयुक्त उपायका अवलम्बन करना होगा। इस उद्देश्य सिद्धिके लिये हमे अपनी सब शक्ति शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक, नैतिक लगा देनी होगी।

हमने जो कुछ सीखा है उसे भूलना होगा और जो अभीतक नहीं सीखा है उसे सीखना होगा। स्वाधीनता लाभका गुरुतर उत्तरदायित्व निभानेके लिये शरीर और मनको नवीन रूपसे गठित करना होगा। नवीन शिक्षासे शिक्षित होना होगा। हमारे जीवनपर जो वाह्यिक आवरण पड़ा हुआ है उसे हटाना होगा, विलासिता और आमोद-प्रमोद छोड़ना होगा, पुराने अभ्यास छोड़ने होंगे और नवीन जीवन यात्रा की नवीन प्रणाली गठित करनी होगी। इस प्रकार हमारा सम्पूर्ण जीवन परिपूर्ण हो जायगा और हम स्वाधीनता पानेकी योग्यता प्राप्त कर सकेंगे।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाजके अवशिष्ट अंशसे अलग करनेसे उसका आत्मविकास सम्भव नहीं हो सकता। जीवनकी सर्वांगीण उन्नति, परिपुष्टि-परिणतिके लिये अधिकाशतः समाजपर निर्भर करना होगा। समाज व्यक्तिको छोड़कर दूसरी तरफ नहीं चल सकता। साथ ही यह भी न भूलना चाहिये कि समाजकी उन्नति हुए बिना सिर्फ व्यक्तिकी उन्नतिसे काम नही चलेगा। इस प्रकारकी व्यक्तिगत उन्नति-का विशेष मूल्य नही रहता। योगी और संन्यासीका जो आदर्श है वह हमारे लिये ग्रहणीय नहीं है। सामाजिक जीवनमें जिनका स्थान नहीं

है, उस आदर्शका विशेष मूल्य मैं नहीं समझता। इसलिये स्वाधीनता-को ही यदि हम जीवनका मूल मंत्र माने, यदि इसे ही हम सम्पूर्ण कर्मदायिनी शक्तिकी प्रेरणा मानें तो हमें समाज सस्कारकी नीव भी स्वाधीनताके सिद्धान्तपर ही खड़ी करनी होगी। तव हम देखेंगे, स्वाधीनताकी नीति सामाजिक विप्लवके सिवा और कुछ नही है।

समग्र समाजकी स्वाधीनताके माने स्त्री और पुरुषकी समान स्वाधी-नता है। सिर्फ उच्च श्रेणीके लिये ही नहीं अनुन्नत श्रेणीके लिये भी स्वाधीनता प्रयोजनीय है। धनी, दरिद्र, युवा, वृद्ध, नर, नारी, लघुसंख्यक और बहुसंख्यक समाज सबको स्वाधीनता देना होगा। इस प्रकार हम देखते हैं, स्वाधीनता माने साम्य और साम्य माने स्वाधीनता है। समाज-को बन्धन मुक्त करनेके लिये सामाजिक विषयो और कानूनी अधि-कारोंमें महिलाओंको समान अधिकार देना होगा। जिस सामाजिक विधान द्वारा निम्न वंशमें जन्म ग्रहण करनेके कारण किसी व्यक्ति या श्रेणीको छोटा बनाकर रखा जाता है उसे निर्भय भावसे नष्ट करना होगा। धनी और दरिद्रकी पद मर्यादामे जो प्रभेद है उसे दूर करना होगा। जो समस्त प्रतिबन्धक नियम सामाजिक उन्नतिमें बाधा देते हैं उनका नाश करना होगा। हर एकको शिक्षा और आत्मविकासका पूर्ण सुयोग देना होगा। युवककी उपेक्षा करनेसे काम नहीं चलेगा। समाज संस्कार और देश शासनका भार युवा युवतियोंको देना होगा। समाज-नीति अर्थनीति और राजनीतिमें तथा अन्य सब विषयोंमें प्रत्येक व्यक्तिको

समान अधिकार देना होगा। इसमें वैषम्य रखनेसे नहीं चलेगा। हम जिस नवीन समाजको गढना चाहते हैं उसमें सबको समान अधिकार होंगे, सबको समान सुयोग मिलेंगे, ऐश्वर्यपर सबका समान अधिकार रहेगा, विषमता पैदा करनेवाले सामाजिक नियमोंका ध्वंश होगा, जातिभेद का लोप होगा और विदेशी शासनसे मुक्ति होगी।

भाइयो! मुमकिन है आपलोग इस कल्पनाको आकाश कुसुम कहें। हो सकता है कोई मन ही मन सोचता हो कि मैं दिनमें स्वप्न देखता हूं, वास्तव जगतके साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। अगर आप यही सोच रहे हैं तो मैं लाचार हूँ। मैं अपनेको स्वप्निव मानता हूँ, किन्तु मैं इस स्वप्नको ही चाहता हूँ और स्वप्न ही मेरी दृष्टिमें कठोर वास्तविक सत्य है। इसी स्वप्नसे मैं उद्दीपना लाभ करता हूं। मेरे अन्दर कार्य करनेकी भावना उत्पन्न होती है। इस स्वप्नके बिना मेरे लिये जीवन धारण करना असम्भव है, क्योंकि इसके बिना मेरे जीवनमें और कोई माधुर्य ही नहीं रह जायगा, इस स्वप्नके बिना जीवन ही व्यर्थ है।

मैं जिस स्वप्नमें डूबा रहना चाहता हूँ वह है स्वाधीन भारतका स्वप्न। अपने प्रकाशसे प्रकाशित और गौरवान्वित भारतका स्वप्न। मैं चाहता हूँ इस देशमें एक स्वाधीन गणतंत्र प्रतिष्ठित हो। उसकी सेना, नौ सेना और विमान सेना स्वाधीन और स्वतन्त्र हो।

मैं चाहता हूँ दुनियाके स्वाधीन देशोंमें स्वाधीन भारतके दूत भेजे जाय। मैं देखना चाहता हूँ, पूर्व और पश्चिममें जो कुछ महत्तर है

उसके गौरवसे हमारी भारतमाता गौरवान्वित हो। मैं चाहता हूँ स्वाधीन भारत देश-देशमें सत्यका सन्देश भेजे।

छात्र बन्धुओ! आज आप छात्र हैं पर आपही जातिके भविष्यकी आशा हैं। इस देशका भविष्य आपपर ही निर्भर करता है, आपही भारतके भावी विधाता हैं। मै चाहता हूँ, आपको अपने पास बुलाना ताकि आप भी मेरे स्वप्न, आशा, आकाक्षाका थोड़ा-थोड़ा भाग लें और मै क्या दे सकता हूँ। मेरी यह भेंट ग्रहण कीजियेगा क्या? आप तरुण हैं, आपके हृदय आशासे भरे हैं। आपके सामने ही वृहत्तर और महत्तर आदर्शकी स्थापना होनी चाहिये। यह आदर्श जितना ही उच्चतर होगा, आपकी सुप्त शक्ति उतनी ही अधिक जाग्रत होगी। इसलिये हे छात्रो! उठो!! जागो!!! जीविकार्जनके लिये शिक्षा प्राप्त करना ही शिक्षाका उद्देश्य नहीं है। बल्कि महत्तर उद्देश्यकी साधनाके लिये प्रस्तुत होना ही छात्र जीवनका कर्तव्य है। क्योंकि सिर्फ अन्न वस्त्र पाकर ही मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। मैंने आपके सामने भविष्यका एक चित्र उपस्थित किया है। इस आनेवाले युगके लिये आपको कुछ न कुछ काम करना होगा। कुछ न कुछ त्याग करना होगा, कुछ न कुछ कष्ट स्वीकार करना होगा। आपके शरीर और मनको इस प्रकार गठित करना होगा कि वह भविष्य जीवनके लिये उपयोगी हो सके। आपकी शिक्षादीक्षा सब कुछ इसी उद्देश्यको सामने रखकर होनी चाहिये।

मैंने जीवनका जो चित्र आपके सामने उपस्थित किया है उससे दुःख, कष्ट, विपत्ति आ सकती है, मैं इससे इन्कार नहीं करता, किन्तु यह भी समझ लीजिये कि इसमें आनन्द भी कम नहीं है। मैं जिस पथपर चलनेके लिये आपका आवाहन कर रहा हूँ वह पथ कण्टका-कीर्ण हो सकता है, किन्तु क्या यही पथ महान गौरवका पथ नहीं है? इसीलिये मै आपको बुला रहा हूँ। आइये! हम सब मिलकर हाथमें हाथ मिलाकर यात्रा करे। ऐसा होनेसे ही हमारा मनुष्य जीवन धन्य होगा। दुःख, कष्ट, निराशा और निपतनके अन्धकारमे कदमपर कदम बढ़ाते हुए चलना होगा। विश्वास रखिये आखिर हम अपने लक्ष तक अवश्य पहुंच जायेंगे। परमानन्द और अमरत्व लाभ कर सकेंगे।

——वन्दे मातरम्

(सन् १९२९ की पहली दिसम्बरको मध्य प्रदेश बरारके छात्र सम्मेलनके सभापतिकी हैसियतसे दिये गये भाषणका अनुवाद।)

१

जिस प्रतिष्ठान और आन्दोलनके मूलमें स्वाधीन भावना और नवीन प्रेरणा नहीं है, वह प्रतिष्ठान या आन्दोलन, तरुणका प्रतिष्ठान या आन्दोलन नहीं कहला सकता।

पवना जिलाके युवक सम्मेलनके सभापति बनाकर मेरे प्रति जो सम्मान प्रदर्शित किया गया उसके लिये आन्तरिक कृतज्ञता ग्रहण कीजियेगा। आपकी इस प्रसिद्ध नगरीमें आनेका सौभाग्य इससे पहले नहीं हुआ था। यद्यपि यहा आनेकी वासना बहुत दिनोंसे थी। आज वह वासना पूर्ण हुई इसलिये अत्यन्त आनन्द प्राप्त किया। बंगालके राष्ट्रीय जीवनमें जब-जब जटिल समस्याएं उत्पन्न हुईं, जब-जब मत विरोधके कारण मनोमालिन्यकी सम्भावना हुई तब-तब अनेक बार इस प्रसिद्ध नगरीमें उसका समाधान और निवारण हुआ है। आज देशकी जो अवस्था हो रही है, उस सम्बन्धमें मैं आशा करता हूँ कि प्रवीण पवना निवासी अपनी देश हितकर प्रचेष्टाका परिचय देंगे।

जब आंखें खोलकर देश विदेशकी तरफ देखता हूँ, तब क्या देख पाता हूँ ? देख पाता हूँ, चारों तरफ जीवनका स्पन्दन, जागरणका लक्षण और नवीन सृष्टिकी सूचना। पृथ्वीके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक युवकोंके प्राण जाग उठे हैं। दुर्बलता, नपुंसकता और अविश्वास

छोड़कर वे अपने पैरोंपर खड़ा होना चाहते हैं। भविष्यका जो उत्तराधिकारी है, वही तरुण समाज आज निश्चेष्ट नहीं है। वे आज अधिकार प्राप्तिके लिये सचेष्ट हैं और अधिकार रक्षाकी योग्यता अर्जनके लिये प्रयत्नशील हैं। तरुणका यह जागरण इतिहासके लिये नवीन घटना है। इसे पश्चिमके संसर्गका फल नहीं समझना चाहिये। सब देशोंमें, सब कालमें ध्वंश और सृष्टिकी जब-जब जरूरत पड़ी है तब-तब तरुणोंके प्राण जगे हैं। कुरुक्षेत्रके युद्धक्षेत्रमे खड़े होकर श्रीकृष्णने जब दृढ़ स्वर मे कहा, 'क्लैव्यं मास्मगमः पार्थ" तब उनके मुखसे मृत्युञ्जयी वीर वाणी प्रगट हुई थी। इसीलिये पिछले साल नागपुरकी तरुणोंकी सभामे मैंने कहा था, "*The voice of Krishna was the voice of immortal youth*" ध्वशकी कराल मूर्ति देखकर अर्जुन भय-भीत हुए, क्षणभरके लिये वे भूल गये कि ध्वंशके बिना सृष्टि नहीं हो सकती। इसीलिये भागवत गीताकी सहायतासे अर्जुनको समझाया गया कि कुरुक्षेत्रके महाश्मशानपर ही धर्मराज्यकी प्रतिष्ठा होगी।

अब प्रश्न हो सकता है, तरुणोंका आदर्श क्या है? तरुणोका आदर्श है सब तरहके वर्तमान अन्याय, अत्याचार, अनाचार ध्वश करके नवीन समाज और नवीन जातिकी सृष्टि करना। प्राचीन और वर्तमान उच्च प्राचीरोंको अतिक्रमणकर दूर-दूरकी खबर पानेके लिये मानव जाति आदिम कालसे ही उत्सुक है। सिर्फ यही नही, सुदूरके स्वप्नको वास्तविक करनेकी चेष्टा मानव जातिने बार बार की है। इसी प्रेरणाके फल-

स्वरूप प्राचीनकालमें गौतमबुद्धका आविर्भाव हुआ तथा ग्रीसमें सुकरात और प्लेटोका जन्म हुआ।

हम समझ सकते हैं कि तरुणों द्वारा स्थापित कोई भी सेवा समिति, युवक समिति या तरुण संघ आख्या पा सकता है किन्तु यह धारणा भ्रांत है। क्योंकि जिस प्रतिष्ठान या आन्दोलनके मूलमें स्वाधीन भाव और नवीन प्रेरणा नहीं है वह प्रतिष्ठान या आन्दोलन युवकोंका प्रतिष्ठान या आदोलन नहीं कहला सकता। यौवनके—तरुणके क्या लक्षण हैं? यही कि वह वर्तमान या वास्तवको अखण्ड सत्य मानकर ग्रहण नहीं कर सकेगा, वह अन्याय और अत्याचारके विरुद्ध विद्रोहकी घोषणा करना चाहता है और चाहता है ध्वंशके महाश्मशानपर सृष्टिका अविराम ताण्डव नृत्य करना। ध्वंश और सृष्टिकी लीलाके बीचमें जो आत्म-विस्मृत हो सकता है वही व्यक्ति तरुण है। जो युवक है वह ध्वंश और संग्रामसे भीत नहीं होता तथा नवीन सृष्टि करनेमें अक्षम्य नहीं होता। अगर उसके प्राण युवा हैं तो वृद्ध भी युवक है। तरुण होकर भी वह वृद्ध है यदि उसकी अवस्था "वृद्धत्वम् जरसा विना" है।

बहुत दिनतक तरुण शक्ति आत्म विस्मृत थी। इसीलिये वह कोल्हू के बैलकी तरह दूसरेकी चाबुक खाकर दूसरेके इशारेपर चल रही थी तथा दूसरेपर दायित्व छोड़कर अन्धेकी तरह काम कर रही थी। जितने दिनतक ऐसी अवस्थामे जाति और समाजकी क्रमिक उन्नति हुई, उतने दिनतक किसी तरहका विशेष गोलमाल नहीं हुआ। किन्तु जिस देशमें

और जिस युगमें नेताओंकी अयोग्यताके कारण समाज और जातिकी अवनति हुई है, वहीं तरुण समुदाय विद्रोही हुआ है। सुल्तानके हाथों सम्पूर्ण शक्ति और कर्तव्यभार अर्पण कर जब तुर्क जाति अधोगतिके पथपर अग्रसर होने लगी तब विद्रोही तुर्क वीरोंने—तरुणोंने नवीन तुर्की दलकी प्रतिष्ठा की। सम्राट कैसर और उसकी परिषद्ने तब सम्पूर्ण भार और दायित्व सेनापतिवर्गपर छोड़ दिया जब तरुण जर्मन निश्चिन्त होकर न बैठ सके। जब उन्होंने देखा कि सेनापतियोंके कारण महायुद्धमें जर्मन जातिको पराजयकी लाञ्छना और दैन्य स्वीकार करना पड़ा, तब जर्मनीमें युवकोंका आन्दोलन शक्तिशाली हो गया। माञ्चू राज वंशको अपना भाग नियन्ता करनेके कारण जब चीन जाति शौर्य, वीर्य, स्वाधीनता, और सम्पदा खोने लगी तब चीनके तरुणोंमें जागरण हुआ। जिस हद-तक तरुण आत्म विश्वास संचयकर दायित्व ज्ञानसे पूर्ण हो, आत्म निर्भर बन अपनी जातिके उद्धारमें बद्ध परिकर हुए हैं, उसी हदतक तरुण आन्दोलनका प्रसार हुआ है। आज हम जो भारतके एक कोनेसे दूसरे कोनेतक जागरणके चिह्न देख रहे हैं उसका अर्थ है कि भारतके तरुण आत्मविश्वासी हो रहे हैं, अपनी जातिका उद्धार करना चाहते हैं तथा स्वदेशोद्धारके व्रतका उद्यापन करना चाहते हैं।

अज्ञानके कारण कोई-कोई समझते हैं कि युवक आन्दोलन राष्ट्रीय-आन्दोलनका नामान्तरमात्र है, किन्तु यह धारणा सत्य नहीं है। फूल जब खिलता है तब हर पखुरीसे उसकी सुषमा और सौरभ व्यक्त होता है।

बहुत दिन खटियापर पड़े रहनेके बाद मनुष्य जब फिर अपनी पूर्वावस्थाको प्राप्त होता है, तब शरीरके प्रत्येक अङ्गसे शक्ति, तेज और प्रफुल्लता प्रकट होती है। शैशव और किशोर लांघकर जब हम यौवन राज्यमें अभिषिक्त होते हैं तब हमें प्रकृति देवी सब सम्पदासे विभूषित करती है। व्यक्तिके जीवनके जितने पहलू हैं और जातिके जीवनके जितने पहलू हैं, उन सब पहलुओंमें युवक आन्दोलन है। इन विचित्र आन्दोलनोंके विभिन्न रूपमे कोई भी एक रूप युवक आन्दोलन नहीं है, बल्कि इन सब आन्दोलनोंकी समष्टिसे जो अभिनव सौन्दर्य प्रगट होता है वही प्रत्येक युवकका काम्य और साध्य है। युवक आन्दोलन राजनैतिक आन्दोलन नही है, किंतु यह *Non political* भी नहीं है, राजनीतिका वर्जन करना इस आन्दोलनका उद्देश्य नहीं है, किन्तु सिर्फ इसीलिये हम यह नही कह सकते कि जातीय आन्दोलन राजनैतिक—आन्दोलन भर है।

काव्य, साहित्य, शिल्पकला, दर्शन, विज्ञान, व्यवसाय, वाणिज्य, खेल-कूद, समाज, राष्ट्र सबके भीतरमे जातीय जीवनका विकास होता है। इसीलिये इन सबके भीतरसे तरुण आत्म प्रकाश करते हैं। जब प्राण जगते हैं तथा स्वप्नोत्थित भावधाराए शतमुखी होकर धावित होती हैं। तब किस मन्त्र बलसे सुप्त शक्तिको जगाना होगा यही जानना चाहिये।

अनेक सोचते हैं तरुण समाज या जनसाधारणको जगानेके लिये राष्ट्र समाज सम्बन्धी मतवादका प्रचार करना ही होगा। समाज या

राष्ट्रका आदर्श क्या होना चाहिये इस सम्बन्धमें आजकल अनेक मत-वाद प्रचलित हैं, जैसेः—*Anarchism*, *socialism*, *communism*, *Bolsheais nde*, *calism Republicanism*, *Constitutional Monarchy*, *Facism* आदि। प्रत्येक मतके समर्थक कहते हैं सिर्फ इसी मतके प्रचारसे पृथ्वीके सब दुख दूर होंगे। इसलिये आजकल किसी किसी देशमें मतवादकी लड़ाई खूब सगीन हो रही है। किंतु मैं सोचता हूँ, किसी मतवादसे मानव जातिका उद्धार नहीं हो सकता यदि सबसे पहले हम मनुष्योचित चरित्र बल प्राप्त न करें। इसी-लिये स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, *Man making my mission* मनुष्य तैयार करना मेरे जीवनका उद्देश्य है। जाति गठन ओर *Ism* प्रतिष्ठाकी नींव है—सच्चा मनुष्य बनाना ही युवक आन्दोलनका प्रधान सच्चा मनुष्य उद्देश्य है। सच्चा मनुष्य बनानेके लिये हर तरफसे उसका विकास होना चाहिये। युवक आन्दोलनके साथ *Socialism* या समाज तंत्रवादको अभेद मानना ठीक नहीं है। सब "*Ism*" के मूलमें जो समस्या है उसी समस्याका समाधान करना युवक आन्दोलनका अन्यतम आदर्श है।

तरुण आन्दोलनके दो पहलू हैं, अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय। अन्त-र्राष्ट्रीयकी दृष्टिसे इस आन्दोलनका उद्देश्य है विश्व मानवको मातृत्वके बन्धनमें आबद्ध करना। देश और जातिका ख्याल छोड़कर मनुष्य मात्रमें भाई-भाईका सम्बन्ध है, यह भाव तरुण आन्दोलन द्वारा स्पष्ट

हुआ है। आज आत्मस्थ तरुण अनुभव करते हैं कि सब युगोंमें सब देशोंमें तरुणोंका आदर्श, प्रेरणा, साधना और अनुभूति एक ही है। संसारके तरुणोंमें आत्मीयता और एकात्मभाव घनीभूत होनेसे इसका प्रभाव कहां तक विस्तृत होगा, सोचनेसे यह आसानीसे समझा जा जा सकेगा।

विभिन्न जातियोंमें विद्वेषकी जो आग अभी जल रही है, उसे यदि बुझाना हो तो देश-देशमें युवक आन्दोलनका प्रसार होना चाहिये। विभिन्न जातियोंमे लड़ाइयां न हों इसलिये तथा पृथ्वीपर शांति स्थापित करनेके लिये अनेक देशके तरुण संघबद्ध हो रहे हैं। अनेक समय बाद तरुणोंने अब समझा है कि कूट राजनीतिज्ञोंके हाथकी वे कठपुतलीमात्र हैं। बन्दूकोंके आगे आकर उन्हें भी अपनी जान देनी होगी, तथा अनेक युद्ध कुटिल राजनीतिज्ञोंके षडयन्त्रके फलस्वरूप ही होते हैं तथा उनसे किसी भी जातिका वास्तविक हित नहीं होता। अभी पृथ्वीपर शांतिकी चेष्टा विफल होगी ही क्योंकि अभी भी अनेक जातियां गुलामी की जंजीरोंसे जकड़ी हुई हैं और दूसरोंके पैरोंके नीचे पड़ी हुई हैं। जब-तक कि वे स्वतंत्र न होंगी तबतक शांतिका अर्थ है दासत्व और पराधीनता। तब भी यह स्वीकार करना ही होगा कि यदि किसी दिन पृथ्वीपर शांति स्थापित होगी तो वह विश्वके तरुण समाज द्वारा ही होगी।

शांति स्थापनकी चेष्टाके सिवा अन्यान्य अनेक काम करनेके लिये

देश विदेशके तरुण सघबद्ध हो रहे हैं। सब देशोंके मनुष्योंका स्वभाव प्रायः एक ही तरहका है, मानव जीवनकी समस्याएं सब देशोंमें सब युगोंमें एक ही तरहकी हैं। ऐसी हालतमें सब देशोंके तरुण अन्तर्राष्ट्रीय सूत्रमें बंधकर एक दूसरेको सहायता कर सकते हैं, यह समझना साधारण बात है।

राष्ट्रीयताकी दृष्टिसे युवक आदोलनका उद्देश्य नवीन आदर्शके अनुसार नवीन जातिका गठन करना है। नवीन जातिकी सृष्टि करनेसे पहले जातिके उत्थान और पतनका कारण जानना आवश्यक है। हम लोग समझ सकते हैं कि युगोंसे सदियोंसे विभिन्न जातियोका जो उत्थान और पतन होता आया है उसका कोई कारण नही है। इस सम्बन्धमें पाश्चात्य देशोंमें काफी खोज और गवेषणा हुई है तथा किसी किसी वैज्ञानिकने इस उत्थान और पतनका कारण भी बतलाया है। उनकी गवेषणाका साराश यही है कि व्यक्तिका जिस प्रकार जन्म होता है, विकास होता है और मृत्यु होती है, जातिका भी उसी प्रकार जन्म विकास और मृत्यु होती है जीवनशक्ति नष्ट होनेपर जैसे आदमी मृत्यु मुखमें पतित होता है जाति भी उसी प्रकार जीवन शक्तिके अभावके कारण मुमुर्षू हो जाती है। कभी-कभी जातियोंका सर्वस्व ध्वंश हो जाता है और सिर्फ इतिहासमें उनका नामोल्लेख रहता है तथा कभी कोई जाति ससारसे बिलकुल उठ तो नहीं जाती पर नररूपी पशुकी तरह जीवित रहती है। जो जाति अत्यन्त भाग्यवान होती है वही जाति मौतके घाट

लगकर भी नव जन्म लाभ करती है। किस हालतमें जातिके नव जन्म की सम्भावना रहती है इस सम्बन्धमें भी वैज्ञानिकोने कुछ निर्देश करने की चेष्टा की है। विभिन्न जातियोंके रक्त संमिश्रणके फलस्वरूप तथा विभिन्न सस्कृति (*culture*) के सम्यक स्वरूप जाति और जाति की सभ्यताका पुनर्जन्म होता है। पाश्चात्य विद्वानोके मतसे हम सहमत हों या न हों किन्तु यह मानना होगा कि भारतमें विभिन्न जातियोंमें रक्त समिश्रण हुआ है तथा विभिन्न जातियोके आगमनके फल स्वरूप यह भारतवर्ष विभिन्न संस्कृतियों का संगमस्थल हो गया है। मुमकिन है इसी सम्मिश्रणके कारण भारतीय जाति बार-बार मृत्यु मुखमें गिरकर भी पुनर्जन्म लाभ कर सकी है और उसीके फलस्वरूप यह जाति ऊंची होकर पृथ्वीपर निवास करती है।

विभिन्न जाति और विभिन्न वर्णोंके रक्तसम्मिश्रणके सम्बंधमें मेरा जो भी मत हो किंतु शायद यह कोई अस्वीकार नही करेगा कि विभिन्न सभ्यता और संस्कृति *Culture* के संघर्ष स्वरूप ही विचार जगतमें विप्लव होता है। यह विप्लव ही जातीय चैतन्यका लक्षण है। अंग्रेजों के भारतमें आनेके बाद हमारी विचार धारामें क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। उसी समय वर्तमान-युगके नव जागरणका सूत्रपात हुआ था, इसके बाद हमारी आंखे खुलने लगी। हमने अपनी हालतको महसूस करना सीखा तथा हमने अपनी वर्तमान अवस्थाकी प्राचीन अवस्थाने तुलना की तथा दूसरी तरफ स्वाधीन जातिकी अंवस्थासे अपनी वर्तमान

अवस्थाकी तुलना की। अपनी वर्तमान हीन और लाछित अवस्थाके अनुभवके साथ ही साथ हमने गौरव मय भविष्यका स्वप्न देखना शुरू किया। जिस गौरवमय भविष्यका स्वप्न हम देख रहे हैं वह हमारे गौरवपूर्ण अतीतसे भी बढ़कर है। इसी स्वप्न या आदर्शवादमें सृष्टिका बीज छिपा हुआ है। जातिको यदि जगाना है तो उसमें वर्तमान अवस्थाके प्रति घोर असन्तोषकी कल्पना करनी होगी तथा उसके सामने नवीन उच्च आदर्श रखना होगा। इसीलिये हमारे युवक आदोलनमें एक तरफ असतोष है तो एक तरफ है आदर्शका आकर्षण।

किस मतवादकी नींव बनाकर नवीन समाजकी सृष्टि की जाय। इसके सम्बधमें अनेक आलोचनाए हुई हैं और हो रही हैं। मैं इस समय उन आलोचनाओंमे न फसूगा। मैं सिर्फ मूल आदर्शकी तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। कोई भी मतवाद या "*Ism*" आप क्यों न ग्रहण करें, उसे यदि सार्थक करना है तो परम्परागत इतिहासकी धारा, हमारे आस-पासकी अवस्था और चारों ओरकी आबहवाको मद्दे नजर रखकर काम करना होगा। उदाहरणके तौरपर कहना चाहता हूँ कि कार्लमार्क्सकी नीतिको कार्यरूपमें परिणत करते समय रूस जाति या बोलसेवियोंने उसमें ऐसे परिवर्तन कर लिये जो वस्तुतः कार्लमार्क्सकी मूल नीतिके विरोधी थे। अनेक सोचते हैं सोशलिज्म या रिपबलिकूनिज्म पाश्चात्य देशकी सौगात है किंतु यह धारणा गलत है। *Socialism* या *Republicanism* प्राचीन

भारतमें भी था। यही नहीं बल्कि भारतके किसी-किसी प्रांतमें अभी भी उसका निदर्शन पाया जाता है।

ये सब मतवाद प्राच्य या पाश्चात्य नही हैं; ये विश्वकी सम्पत्ति हैं। भारत यदि शरीर, मन, वचनसे सोशलिज्म ग्रहण करनेका संकल्प करे तो भारत विदेशी भावापन्न हो जायगा ऐसी आशंका मुझे नहीं है। किंतु चाहे जो मतवाद हम ग्रहण क्यों न करें इतिहासकी परम्परा और वर्तमान प्रयोजनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, अन्यथा हमारा सृष्टि कार्यक्रम भी सार्थक और साफल्य मण्डित न होगा।

आज भारतकी यह हीन अवस्था क्यों है ? आज तो सभी कुछ हैं। सौंदर्य, बल, शिक्षा, दीक्षा, शौर्य, वीर्य, विद्या, बुद्धि किसीका भी अभाव नही है। ये सब उपादान लेकर हम दोष रहित मूर्ति निर्माण कर सकते हैं पर उसमें प्राण प्रतिष्ठा कहासे होगी। प्राण प्रतिष्ठा उसी दिन संभव होगी जिस दिन समग्र जातिमें स्वाधीनताके लिये प्रबल आकाक्षा जाग्रत होगी। वह पुरोहित कहा है जो सजीवनी बूटी लाकर मृत प्राय जातिके शरीरमें प्राण संचार कर सके। यह आजादीकी कुजी है। आजाद होनेके लिये और जातिको स्वतन्त्र करनेके लिये जो पागल है, वही दूसरोंको पागल कर सकता है और वही व्यक्ति जातीय यज्ञका पुरोहित हो सकता है। मैं चाहता हूँ हमारा युवक आदोलन ऐसे असंख्य पुरोहित उत्पन्न करे।

हमारे पास सब कुछ है, सिर्फ एक चीज नहीं है। सर्वस्व बलिदान।

सब तरहकी विपत्तियोंको अतिक्रमणकर, सब आपत्तियोंको तुच्छ मानकर समस्त जीवनको इसी आदर्शकी प्राप्ति मे लगानेकी क्षमता यही *Lenacity of purpose* हमारे अदर नही है, अंग्रेजोमें है, इसलिये अग्रेज इतने बडे और हम इतने छोटे हैं। हम दिलमे देशको नहीं चाहते, अपनी जातिको नही चाहते इसीलिये विवाद करते हैं। इसीलिये हमारे यहा मीरजाफर और अमीचंद जन्मते हैं, आज भी मीरजाफरोंकी कमी नहीं है। हम जब देशको प्रेम करना सीखेगे तभी हमारे अंदर आत्म बलिदानकी भावना जाग्रत होगी। हमारे जीवनमें अविराम और अक्षात परिश्रमकी क्षमता *Lenacity of purpose* वापिस आ जायगी। यह *Lenacity of purpose* या *Moral stamine* कहासे मिलेगा? जगलमे युगोंतक तपस्या करनेपर भी नहीं मिल सकता। जीवनमें निष्काम कर्मको व्यावहारिक रूप देनेसे ही—सग्राममें अविरत लगे रहनेसे ही वह मिलेगा। घरके कोनेमें बैठकर उपासना करने या ससार त्यागकर सन्यास लेनेसे शक्ति संचय नहीं होती।

शक्ति पूजा बातोंसे भी नही होती, यदि ऐसा होता तो भारत परम्परासे शक्ति पुजारी होनेपर भी वस्तुतः शक्तिहीन नहीं होता।

कर्म सग्राममे अविरत भावसे आत्म नियोग करनेसे शक्ति प्राप्त होती है। संग्राममें ही पृथ्वीकी स्वतत्र जातिया शक्तिशाली हुई हैं। भारतका तरुण समाज इसी पथपर चले। तभी हम अपना लुप्त गौरव,

प्राचीन वैभव प्राप्त करेंगे और स्वाधीनता अर्जन कर विश्वके मुक्त प्रांगणमें सिर ऊँचाकर मनुष्यकी तरह चलना सीखेंगे।

(शनिवार २७ माघ १२३५ (बंगला) को पवना युवक सम्मेलन मे सभापतिकी हैसियतसे पठित अभिभाषण।)

२

समाज और राष्ट्रकी उन्नति एक तरफ व्यक्तित्वके विकासपर निर्भर करती है तो दूसरी तरफ सघबद्ध होनेकी शक्तिपर। अगर हमें नवीन स्वाधीन भारत गढना है तो हमे सच्चा मनुष्य तैयार करना होगा। साथ ही साथ इस तरहकी उपायका अवलम्बन करना होगा कि हम विभिन्न क्षेत्रोंमें संघ-बद्ध होकर काम कर सकें।

आज मैं आपका ही होकर इस सभामें उपस्थित हुआ हूँ। मेरे पास ज्ञानका भाण्डार नहीं है, वय प्राप्त होनेपर मनुष्य जो अभिज्ञता, दूरदर्शिता, सावधानता प्राप्त करता है, सम्भव है वह भी मेरे पास नहीं है। इसलिये उपदेश देनेकी धृष्टता करने मैं यहा नहीं आया हूँ। तब भी मैं यह नही मानता कि बिना सफेद बाल हुए मनुष्य कोई उत्तर दायित्वपूर्ण कार्य नही कर सकता। इंगलैंडके प्रधान मत्री इस समय चुन चुनकर ऐसे आदमियोंको मन्त्रि-मण्डलमें ले रहे हैं जिनकी उम्र पचाससे अधिक हो किंतु इंगलैडके इतिहासमें ही ऐसा उदाहरण पाया जाता है जब कि अत्यंत संकटके समय एक तरुणको राज्यका प्रधान

मंत्री नियुक्त किया गया। इस समय इटली, टर्की, चीन आदि नव जाग्रत देशोंमें युवको द्वारा ही असख्य सामाजिक और राष्ट्रीय गुरुत्व-पूर्ण कार्य हो रहे हैं।

जहापर सृष्टि या ध्वशकी जरूरत है वहां इच्छामे या अनिच्छासे युवकोंपर निर्भर करना ही होगा। उन्हें विश्वास करना ही होगा कि युवकोंके हाथोंमें क्षमता और दायित्व देना होगा। जहापर संरक्षणकी विशेष आवश्यकता है, जहा संरक्षण मूलक नीति जारी है वहापर आप प्रौढ़ावस्थाके व्यक्तिको या दलितदल, पलित केश वृद्धको समाज और राष्ट्रके सरपर बैठा सकते हैं। मगर हमारा देश, हमारी जाति ध्वंश और सृष्टिके बीचमें चल रही है। इसीलिये आज उन्हींकी पुकार हो रही है जो ताजा हैं, नवीन और कच्चे हैं, जो हर तरहसे लक्षत्यक्त हैं।

मैं जानता हूँ हमारे समाजमें अभी भी ऐसे आदमी हैं जिनके मतके अनुसार *Youth is a crime* उनके मतसे उम्रमे छोटा होनेसे बढकर और कोई संगीन अपराध नहीं हो सकता। किंतु इस तरहके मनोभावमे परिवर्तन होना चाहिये। मगर यौवनका अर्थ असयम, अकर्मण्यता या बिना सोचे समझे काम करनेकी प्रवृत्ति नही है। युवकोंको अपनी सेवा, त्याग, कर्म, योग्यता द्वारा बतला देना चाहिये कि हम ऐसे हैं।

वय प्राप्त आज तरुण समाजको अकर्मण्य वा अपदार्थ कह सकते हैं किन्तु युवक यदि संकल्प करे कि वे थोड़े ही समयमें चरित्रगुण, सेवा,

क्षमता द्वारा बड़ोंके हृदयोंपर अधिकार कर लेंगे तथा उनकी श्रद्धा और विश्वास प्राप्त कर लेंगे तो इसमें बाधा कौन दे सकता है।

पृथ्वी व्यापी जो *Youth movement* युवक आन्दोलन इस समय चल रहा है इसका स्वरूप क्या है! उद्देश्य क्या है! कार्य पद्धति क्या है! युवक या युवती संघबद्ध होकर जो भी आंदोलन करें वह आंदोलन युवक आंदोलन नहीं कहा जायगा। वर्तमान अवस्था और बंधनसे युवक आंदोलनकी उत्पत्ति है। तरुण कभी भी वर्तमान अवस्था और उपस्थित बंधनोंको सत्य मानकर स्वीकार नहीं कर सकता। विशेष-कर जहां वह अत्याचार, अनाचार, अविचार पाता है वहां उसका हृदय विद्रोही हो उठता है। वह उस अवस्थामें आमूल परिवर्तन करने के लिये तैयार हो जाता है। प्रबल असंतोषसे ही युवक आंदोलनकी उत्पत्ति हुई है। इसका उद्देश्य है व्यक्ति, समाज, जातिको नवीन रूपसे गढ़ना। आदर्शवाद ही युवक आंदोलनका प्राण है।

आजकल, इस युगमें युवकोंको क्या करना चाहिये इस विषयकी सूची देकर मैं आपकी बुद्धिका अपमान नहीं करना चाहता। मैं कुछ बातें कहकर अपना वक्तव्य समाप्त करना चाहता हूँ। समाज और राष्ट्रकी उन्नति एक ओर व्यक्तिके विकासपर निर्भर करती है तो दूसरी ओर संघबद्ध होनेकी शक्तिपर। यदि हमें नवीन स्वाधीन भारत गढ़ना है तो सच्चा मनुष्य तैयार करना होगा। साथ साथ ऐसे उपायका अवलम्बन करना होगा कि हम विभिन्न क्षेत्रोंमें संघबद्ध होकर काम करना सीखें।

व्यक्तित्वका विकास होनेसे सामाजिक वृत्ति *social qualities* का विकास होगा, यह सोचना ठीक नहीं। व्यक्तित्व विकसित करनेके लिये जिस प्रकार गम्भीर साधना आवश्यक है सामाजिक विकासके लिये भी वैसी ही साधना आवश्यक है। भारतवासियोने अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगितामें हारकर भारतको खो दिया इसका प्रधान कारण सामाजिक वृत्ति के विकासका अभाव है। हमारे समाजमे कुछ *Anto social* प्रवृत्तिया घुस गयी थीं जिनके फलस्वरूप सघबद्ध होकर काम करनेकी शक्ति और अभ्यास नष्ट हो गया। उदाहरणके तौरपर मै कह सकता हूँ कि सन्यास-की प्रवृति जब हमारे समाजमे दिखलाई पड़ी उस दिनसे उसने समाज और राष्ट्रका बधन शिथिल करना शुरू कर दिया तथा समाज और राष्ट्रकी उन्नतिके लिये अपने लिये मोक्ष प्राप्त करना श्रेयस्कर समझा जाने लगा।

मेरे मनमें तो यही आता है कि स्वार्थपरता, परिश्रमी न होना और उच्छृंखलता आदि समाज गठन विरोधी (*Anto social quality*) वृत्तिके कारण ही हम सघबद्ध होकर काम नहीं कर सकते। संघबद्ध होकर काम न कर सकनेके कारण, क्या व्यवसाय क्षेत्रमें, क्या सामाजिक क्षेत्रमें, क्या राष्ट्रीय क्षेत्रमें हम किसी भी तरफ उन्नति नहीं कर सकते। मै यह नही चाहता कि राष्ट्रीय अधःपतनके कारणके सम्बन्धमें आप मेरा अभिमत बिना आलोचनाके मान ले। बल्कि मैं चाहता हूँ कि सब-जातियोंका इतिहास सामने रखकर आप देखे, आप इस विषय

की छानबीन करें और देखें कि हमारी अधोगतिका कारण क्या है ? हम अपने दोषोंको यदि अपनी आखोंके सामनेसे ओझल न होने दें तो उनसे समस्त जाति सावधान रहेगी।

विश्व और मनुष्य जीवनकी घटनाकी परम्परामें जो एक अदृश्य नियम निहित है, यह हममेंसे अनेक नहीं जानते हैं और जाननेवालोंमें भी अनेक नहीं मानते। किंतु पश्चिमीय विद्वान किसी भी घटनाको आकस्मिक दैवीविधान नहीं मानते। प्रत्येक जातिको अपने आदर्शके चरणोंमें आत्म समर्पण करना होगा। इस आदर्शमें अपने अस्तित्वको मिला देना होगा। आदर्शके चरणोंपर आत्म बलिदान कर सकनेसे मनुष्यके विचार, वाक्य और कार्य एक सुरमें बध जाते हैं और भीतर बाहर एक तरहका तारतम्य हो जाता है तथा उसका समग्र जीवन एक आदर्शमें गुंथ जाता है और तब वह अपने जीवनमें नवीन रस, नवीन आनन्द, नवीन अर्थ पाता है तथा दुनिया उसकी नजरोंमें नवीन प्रकाशसे प्रकाशित मालूम होती है।

मैं अपने भाषणमें व्यक्तिगत साधनपर विशेष जोर नहीं दे रहा हूँ, इसका कारण यही है कि भारतीय व्यक्तिगत साधनासे कभी भी विरत नहीं हुए। व्यक्तित्व विकासकी चेष्टासे कभी भी अलग नहीं हुए। पाश्चात्य तथा अन्यान्य देशोंकी अपेक्षा भारतियोंके व्यक्तित्व विकाशका आदर्श भिन्न है। किन्तु हमारी पराधीनता और अधोगतिके समय भी हमारे देशने कितने महापुरुषोंको जन्म दिया है और जन्म दे रहा है

इसका एक मात्र कारण यही है कि हमारी जातिने सच्चा मनुष्य तैयार करनेका प्रयत्न कभी छोड़ा नहीं। किन्तु इस समष्टिगत साधना *Collective sadhana* भूल गये। हम भूल गये कि जातिको बाद देकर व्यक्तिगत साधनाका कोई मूल्य नहीं है। इसीलिये समाज गठन विरोधी वृत्तिया उत्पन्न हुई तथा हमारे राष्ट्रीय जीवनको इस प्रकार आभ्रात और शक्तिहीन कर डाला कि हमारी वर्तमान अध पतित अवस्था हो गई। आज भारतके तरुण समाजको रुद्रकी भाति कहना होगा कि जाति समाज गठन विरोधी वृत्तियोंका हम परित्याग करेंगे तथा जाति समाज गठन विरोधी प्रतिष्ठानोंको ध्वंश कर देंगे।

व्यक्तित्व विकासके सम्बधमें मैं एक बात कहना चाहता हूँ। साधना शब्दके लोग अनेक माने समझते हैं; इसकी विभिन्न व्याख्याएं भी सुनाई पड़ती हैं। मेरी धारणा है साधनाका उद्देश्य है मनुष्य जीवन का रूपातर। रूपातर करना हो तो इसका प्रयत्न बाहरसे न होकर भीतर से होगा तथा मनुष्य जीवनको नवीन आदर्श द्वारा अनुप्राणित करना होगा एवं इस आदर्शके चरणोंमे आत्म समर्पण करना होगा।

नवीन आदर्शके अनुसार जीवन गठित करना हो तो परम्परागत पथ छोड़ना होगा। पाश्चात्य जातिया पुराने रास्तोंको छोड़कर नये मार्गोंका अनुसरण करती हैं इसीलिये उनकी ऐसी उन्नति हो रही है। किंतु हम मानो 'अपरिचित" के भयसे सदा डरते रहते हैं इसीलिये हमारे अन्दर *Sprite of adventure* कम है, हमें यह जानना

चाहिये कि *spirite of adventure* जातीय उन्नतिको एक प्रधान कारण है। इसीलिये मैं युवक समाजसे कहता हूँ अपरिचितसे भड़को मत, घरके कोनेमें छिपे रहनेसे कुछ न होगा। दुनियामें घूमो और उसे अपनी आखोंसे देखो तथा देश-देशान्तरमे ज्ञान प्राप्त करो।

हमारे अन्दर असीम शक्ति निहित है, हममें सिर्फ आत्मविश्वास और श्रद्धाकी कमी है। अपनी जातिमें विश्वास और श्रद्धा होना अनिवार्य है। देशवासियोंको जीमे प्यार करना होगा। मनुष्य सच्चे दिलसे जो चाहता है वह एक न एक दिन पाता ही है। स्वाधीनताके लिये यदि हम पागल हो सकें तभी हमारी अन्तर्निहित शक्ति जग सकती है और उस शक्तिको देखकर खुद हम अवाक् होंगे कि इतनी शक्ति अभीतक कहा छिपी हुई थी। इसी नवजाग्रत शक्ति द्वारा हम स्वाधीनता प्राप्त कर सकेंगे।

जातिको स्वाधीन बनाना है तो सबसे पहले अपने हृदयको स्वाधीनताके आस्वादसे परिचित कराना होगा। मैं मुक्त हूँ, स्वाधीन मनुष्य हूँ इस प्रकार सोचनेसे मनुष्य सचमुच निर्भीक हो जाता है और निर्भीक हो जानेपर मनुष्य किसी भी बन्धनमें नहीं बधता। किसी भी तरहकी बाधा उसका रास्ता नहीं रोक सकती।

भाइयो! सब मिलकर कहो, "हम मनुष्य होंगे, सच्चे निर्भीक मनुष्य होंगे। हम अपनी साधना, प्रयत्न और त्यागसे नवीन भारतकी सृष्टि करेंगे, हमारी भारतमाता फिर राज राजेश्वरी होगी, उसके गौरवसे

हम फिर गौरवान्वित होंगे। हम कोई बाधा नहीं मानेंगे, हम किसीसे नहीं डरेंगे। हम नवीनकी खोजमे, अपरिचितकी तलाशमें बढ़े चलेंगे। श्रद्धा और विनयपूर्वक हम जाति-उद्धारका व्रत लेंगे और इस व्रतका उद्यापन कर हम अपना जीवन धन्य करेंगे। भारतको फिर विश्वसभामे गौरव सिंहासनपर बैठायेंगे।" आओ भाइयो! अब हम क्षण भर भी विलम्ब न कर नतमस्तक हो कर जोड़ कहें, "पूजाका सम्पूर्ण आयोजन प्रस्तुत है, अतएव हे माता जागृति, जागो।"

(२२ जून सन् १९२९ को खुलना युवक सम्मेलनके सभापति की हैसियतसे दिया गया भाषण।)

३

"सब देशोंमें तरुण समाज असन्तुष्ट और असहिष्णु हो गया है। वे जो चाहते हैं पाते नहीं। जिस आदर्शको चाहते हैं उसे वास्तवमे मूर्त नहीं कर पाते, इसीलिये वे विद्रोही हो गये हैं तथा जो मनुष्य और जो व्यवस्था उनके मार्गका रोड़ा है, उसे हटानेके लिये वे बद्धपरिकर हैं।"

आज आपने मेदिनीपुर जिलेके युवक सम्मेलनका आयोजन किया है और मुझे सभापति बनाया है। मैंने भी सानन्द आपका निमन्त्रण स्वीकार किया है। किंतु जब आपने राष्ट्रीय सम्मेलनके स्थानपर युवक सम्मेलनका आयोजन किया उस समय क्या यह सोचा था कि ऐसा क्यों कर रहे हैं। देश-विदेशमें इतने आन्दोलन होनेपर भी युवक

आन्दोलन आरम्भ क्यों हुआ ? इसका कारण निर्देश करना बहुत आसान है। पारिपार्श्विक अवस्थाका दबाव, वयोवृद्ध नेताओंपर वीत श्रद्धाभाव एवं नवीन कार्य और नवीन सृष्टिकी आकांक्षा इन सब कारणोंके सम्मिश्रणके फलस्वरूप ही युवक आन्दोलनकी उत्पत्ति हुई है।

आजकल अनेक लोग युवक समितिके गठनके काममें लगे हुए हैं, किंतु युवक आन्दोलनका आदर्श, उद्देश्य और कर्मपद्धतिको कितने समझते हैं ? युवक समितिको सेवा समितिका नामान्तर माननेसे काम नहीं चलेगा। कांग्रेस कमेटीका नाम और *label* बदलकर युवक समितिका गठन करनेसे काम नहीं चलेगा। वस्तुतः युवक आदोलन एक स्वतन्त्र आदोलन है, उसका एक विशेष आदर्श है, उसका विशेष कार्यक्रम है। इसलिये कांग्रेसमें कुछ न बन सकनेके कारण जो युवक आदोलनके पण्डे बन रहे हैं उनके द्वारा युवक आंदोलनका कोई लाभ नही होगा। तथा आजके युवक आंदोलनको बढते देखकर स्थिर न रह सकनेके कारण जो इस आदोलनके पृष्ठ पोषक हो गये हैं उनसे भी इस आदोलनका हित न होगा।

मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि जरा नजर दौड़ाकर देखिये कि इस आदोलनमे कितने सच्चे सेवक या कार्यकर्त्ता हैं। कितने आदमी हैं जो इस आदोलनका उद्देश्य और सार्थकता समझ कर निष्काम भावसे काम करना चाहते हैं। इसमें शक नहीं कि युवक आदोलनका उद्देश्य, अर्थ और कार्यप्रणालीका जितना ही प्रचार होता है युवक आदोलन

उतनाही बढता जाता है। किंतु एक बात याद रखनेकी यह है कि युवक समिति कांग्रेस या सेवा समितिकी शाखा नहीं है। युवक आंदोलन-का उद्देश्य है नवीन समाज, नवीन राष्ट्र, नवीन अर्थनीतिका प्रवर्तन करना। मनुष्यमें नवीन और उच्च आदर्शकी प्रेरणा जगाकर उसे मनुष्यत्वके उच्चासनपर बैठाना। ऐसी आकांक्षा जिसके हृदयमें जारी है वह नवीनके लिये, महत्तरके लिये पागल है। वह वर्तमान और वास्त-वके प्रति विद्रोही हुए बिना नहीं रह सकता। जिसका अशान्त असंतुष्ट और विद्रोही मन है वही व्यक्ति वर्तमान और वास्तवका पर्दा हटाकर महत्तर जीवनकी दृष्टि और आस्वादको पा सकता है। वही व्यक्ति युवक-आदोलनका अर्थ हृदयंगम कर सकता है और वही युवक समिति स्थापनका अधिकारी है।

पहलेके सम्पूर्ण आदोलनोंसे यदि हमारी भूख मिट जाती और राष्ट्रीय जीवनके सब प्रयोजन सिद्ध हो जाते तो युवक आदोलनका जन्म नहीं होता। किंतु दृष्टिकी संकीर्णताके कारण हो चाहे प्रयत्नके अभावके कारण हो ऐसा नहीं हुआ। तरुण प्राण बहुत समयतक अपना और अपने देशका सब भार दूसरेके कधोंपर रखकर बैठा था, पर आखिर उसने अनुभव किया कि उसकी आकाक्षा और उद्देश्य सफल नहीं हुए और तब वह निश्चित होकर बैठ न सका। सब तरह-की नपुसकता छोड़कर तब उसने निश्चय किया कि एक बार वह भी उत्तरदायित्व अपने हाथोंमें लेकर देखेगा कि आखिर फल क्या होता

है ? उसे विश्वास हुआ कि कल्याणकृत कभी भी दुर्गति प्राप्त नहीं हो सकती ("नहि कल्याणकृत कश्चित् दुर्गतिंतात गच्छति") तथा वह यह भी समझा कि विश्वासपूर्वक यह भार ग्रहण कर लेनेपर कभी अशुभ फल नहीं हो सकता। जय-लाभ करनेपर वह वसुंधराके भोगका अधिकारी होगा और विजयके पहले मर जानेपर स्वर्ग पायगा।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।)

युवक आदोलन युवक युवतियोंका ही आदोलन है। यह आंदोलन मनुष्यको, मनुष्य सभ्यताको, जरा और बार्द्धक्यसे बचाना चाहता है और मनुष्यके तारुण्यको अमर रखना चाहता है। प्रकृतिके क्षेत्रमें जिस प्रकार सदा सब्ज (*Ever Green*) पादप पाया जाता है वह मनुष्यके प्राणोंको भी हमेशा सरसब्ज रखना चाहता है। इसीलिये युग युगमें तरुणोंके प्राण वाद्र्धक्यके विरुद्ध, अनुकरणकी इच्छाके विरुद्ध, कायरता और नपुंसकताके विरुद्ध और सब प्रकारके बंधनोंके विरुद्ध विद्रोह करते आ रहे हैं। पिछले साल नागपुरमें युवकोंकी एक सभामें मैंने कहा था, *The voice of Krishna was the voice of immortal youth* गीतामें श्रीकृष्णकी जो वाणी है वह अमर तरुणत्व संदेश है। जो सोचते हैं युवक आंदोलन पश्चिमकी चीज है, उसका जन्म सन् १८९७में हुआ एवं उसका जन्मदाता *Karl yishur* था, वे कुछ नहीं जानते। इस पृथ्वीपर जबतक जरा और वार्द्धक्य है, तबतक युवक आदोलन रहेगा। तब भी इस युगके युवक आंदोलनने

विराट और विशिष्ट रूप धारण किया है इस विषयमें कोई संदेह नहीं है। युवक आंदोलनके पीछे एक महान आदर्श है। यह आदर्शवाद नवीन होनेपर भी सनातन है, युग युगमें आदर्शवाद ही मनुष्यके प्राणोंमें संजीवनी शक्ति भर कर नवीन जीवन और नवीन शक्ति देता है। अत्यंत प्राचीनकालमे हमारे देशमे लोग धर्मराज्यका स्वप्न देखते थे, वे उस समयके समाज और राष्ट्रको तोड़कर धर्मराज स्थापित करना चाहते थे। इसी प्रकार ग्रीसके महात्मा *ideal Republic* या आदर्श प्रजातंत्र मूलकका स्वप्न देखा करते थे। इसके बाद युगोंके बाद युग बीतते चले गये; कितने *Otopea* कितने *Newage* कितने *Great society*, कितने *meleeniesm* का स्वप्न देखते थे। कितनों ने *socialist state* का स्वप्न देखा। नाना रूप और भावो द्वारा युग-युगमें तरुण समाज एक आदर्शसमाज और आदर्श मनुष्यका स्वप्न देखता आ रहा है। वर्तमान युगमें क्या पूर्व क्या पश्चिम सभी जगह हम *superman* आदर्श पुरुषकी बात सुनते आ रहे हैं *superman* आदर्श पुरुष का मतवाद मजाक उड़ानेकी चीज नही है सचमुच उसके अंदर एक महान सत्य निहित है। *superman* का जो रूप जर्मन दार्शनिक नित्शे (*Nietsche*) ने बतलाया हैं अथवा भारतीय मनीषीने जो सब वर्णित किया है उसे आप नही भी मान सकते हैं, किंतु उनका उद्देश्य उत्तम है और मनुष्य जातिके लिये कल्याणकारी है तथा उनका प्रयत्न प्रशंसनीय है, इसमे कोई शक नहीं है। जिस जातिके मनीषी

superman का स्वप्न नहीं देखते, उस जातिका क्या कोई आदर्श-वाद है ? तथा जिस जातिका कोई आदर्श नहीं वह क्या जीवित है ? वह जाति क्या महत्तर सृष्टिकी अधिकारिणी हो सकती है ?

मनुष्यके प्राणोंको यदि जगाना है। उसकी रक्तके प्रत्येक बिंदुमें यदि अमृत भरना है, यदि उसकी तमाम शक्तियोंको उत्तोलित करना है तो उसे एक महान् आदर्शका परिचय देना होगा। बाइबिलमें लिखा है (*Man do not live by bread alone*) अर्थात् मनुष्य सिर्फ रोटीपर ही जीवित नहीं रह सकता। उसके जिंदा रहनेके लिये अन्य तरहकी खूराक भी चाहिये। मनुष्य अपने जीवनका उद्देश्य जानना चाहता है, वह जानना चाहता है कि क्यों जीवित है और उसके जीवन धारणाकी सार्थकता क्या है ? यदि उसे इस प्रश्नका उत्तर ठीकसे नहीं मिलता तो वह अपने जीवनको व्यर्थ समझता है और वह अपने अन्तरकी सब शक्तियोंका विकास नहीं कर सकता। किन्तु किसी भी आदर्शका परिचय और अनुभूति जबरन किसीको नहीं करायी जा सकती। फिर जो खुद ही आदर्शको नहीं पहचानता वह दूसरेको क्या बतलायेगा।

स्वप्न अनेक थे, अनेक हैं। हमारे नेता चितरंजनदासका भी एक स्वप्न था। उस स्वप्नमें शक्तिका खजाना तथा आनंदका झरना था। आज हम उन्हींके स्वप्नके उत्तराधिकारी हैं। इसीलिये हमारा भी एक स्वप्न है जिसकी प्रेरणासे हम उठते बैठते चलते, फिरते, लिखते, बोलते और कार्य करते हैं। वह स्वप्न या आदर्श क्या है ?

मैं एक नवीन, सब तरहसे पूर्णमुक्त समाज और एक स्वाधीन राष्ट्रका अंग हूँ। जिस समाजमें व्यक्ति सम्पूर्ण रूपसे मुक्त होगा तथा समाजके दबावसे पिसेगा नहीं उस समाजमे जातिभेदका पहाड़ न होगा, जिस समाजमें नारी मुक्त होकर समाज और राष्ट्रके कामोंमें पुरुषोंके साथ समान रूपसे लगी रहेगी, जिस समाजमे धनका वैषम्य नहीं रहेगा, जिस समाजमें प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा और उन्नतिका समान सुयोग पायेगा। जिस समाजमें श्रम और कर्मकी पूर्ण मर्यादा रहेगी। जिसमें आलसी और बेकामका कोई स्थान नहीं रहेगा। जिस राष्ट्रके सब विषय विदेशी प्रभाव और हस्तक्षेपसे रहित होंगे, जो राष्ट्र हमारे समाजका यन्त्र होकर काम करेगा, तथा जो राष्ट्र या समाज भारतीयोंके अभाव मिटाकर, भारतवासियोंका आदर्श सफल करके ही शात न होगा बल्कि विश्वमें आदर्श समाज और आदर्श राष्ट्र कहलाकर दम लेगा, मैं उसी समाज और राष्ट्रका स्वप्न देखता हूँ। यह स्वप्न मेरे लिये नित्य अखण्ड सत्य है, इस सत्यकी प्रतिष्ठाके लिये सब कुछ किया जा सकता है, सब कुछ त्यागा जा सकता है, सब तरहके कष्ट स्वीकार किये जा सकते हैं और इसको सार्थक करनेमे प्राण देना भी "वह मरना भी" स्वर्ग समान है।

हे युवा भाइयो! तुम्हे देनेके लिये मेरे पास कुछ नहीं है, सिर्फ यही स्वप्न है जिसने मुझे अपार उत्साह और असीम शक्ति दी है, तथा मेरे क्षुद्र जीवनको सार्थक किया है। यही स्वप्न उपहार दे रहा हूँ, ग्रहण कीजिये।

आजकल राजनीति, गाली गलौज और तीव्र आलोचना सुनाई पड़ती है। उसमें यह भी सुना जाता है, कि कोई कहता है कि हम युवक समितियोंको *Capture* करनेकी चेष्टा कर रहे हैं। यह सुनकर हँसी आती है। जो किसी भी प्रतिष्ठान या आंदोलनकी सहायता करते आ रहे हैं उनके विरुद्ध *Capture* करनेका अभियोग हास्यास्पद है। मैं पूछता हूँ युवक समिति और छात्रांदोलनके ये नवागतुक मित्र अभीतक कहा थे? जो शुरूसे ही इन आंदोलनोंकी उन्नतिमें सहायता देते आ रहे हैं उनपर तो आज *Capture* करनेका अपराध लगाया जाता है, तथा जिन्होंने प्रारम्भसे ही कुछ नहीं किया बल्कि अब *capture* करनेके लिये उद्यत हैं, वे होगये निस्वार्थ हितैषी! पिछली कांग्रेसके बाद मैंने अपनी सालभरकी कार्यपद्धति निश्चित की थी। उसमें एक बात यह भी थी,—"*You assist students movement and Physical culture movement.*" यह सब पत्रोंमें छपा था तथा सब कांग्रेस कमेटियोंके पास भेजा गया था। उस समय किसीने आपत्ति नहीं की बल्कि समर्थन किया गया था किंतु वर्षकी समाप्तिपर जब दलकी स्वार्थरक्षाके लिये गाली-गलौज करनेकी जरूरत पड़ी तब इस अभियोगका आविष्कार हुआ कि हम युवक समितियोंपर अधिकार करना चाहते हैं। हमारा यही अपराध है कि हमने युवक आंदोलनकी यथेष्ट सेवा और सहायता नहीं की और वंगीय युवक-समिति दिनों-दिन कमजोर और निष्काम होती गयी। बंगालके अनेक जिलोंमें वंगीय-

युवक-समितिया काफी कार्य कर रही हैं। किंतु जो इस आदोलनके कर्णधार बनते हैं, उन्हीं निखिल बगीय युवक-समितिके अधिकारियोंने पिछले कई वर्षोंमें क्या किया? बगीय युवक-समितिमें किसी-किसीने युवक-आदोलनके सम्बधमे काफी *Propa ganda* किया है और उनके लिये मै उपरोक्त बात नही कहता। किंतु अधिकांश सदस्योने क्या किया? किसी-किसी स्थानमें वहाकी युवक समिति काफी कर्म और उत्साह परायण है। किंतु सम्पूर्ण बगालके युवक आदोलनका मुंह ही मानो दब गया है तथा इस आंदोलनसे समय समयपर जो वाणी निकलती है, वह कांग्रेस और कांग्रेस कमेटीकी विरोधी है।

और एक अभियोग सुना जाता है कि हम दूसरेको काम करनेका सुयोग नहीं देते। काम करनेका सुयोग कौन किसको देता है? हमीं लोगोंको काम करनेका सुयोग किसने दिया। जिसके भीतर मनुष्यत्व है वह अपनी शक्तिसे कर्म क्षेत्र तैयार कर लेता है। माँ जिस तरह बच्चेके मुँहमें अन्न देती है उस तरह कर्मक्षेत्र नहीं दिया जाता; किंतु हम अक्सर राजनैतिक नाबालिग बनकर कहते हैं, हमें काम करनेका सुयोग नहीं दिया जाता, हमारे लिये कोई कार्यक्षेत्र तैयार नहीं कर देता। जो व्यक्ति कहता है कि कार्यक्षेत्रमे आनेका सुयोग नही मिला या उसके लिये कार्यक्षेत्र नही है, उसे कभी भी सुयोग या कार्यक्षेत्र नहीं मिलेगा।

तथा जो व्यक्ति शिकायत न कर कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण होता है उसे कभी भी सुयोग या कार्यक्षेत्रका अभाव नही हो सकता। बङ्गीय युवक आंदोलनके कर्णधार बनकर जो कुछ वर्षोंसे यह उत्तर-दायित्व लिये हुए हैं उन्हे भी क्या काम करनेका सुयोग, सुविधा या कार्यक्षेत्र नहीं मिला ?

बङ्गालमे आजकल तुमुल वाद-विवाद और झगड़ा हो रहा है। यह दलबन्दी नितान्त शोचनीय है। इसमें कोई शक नही, इस दलबदीका सबसे खराब असर हम लोगोपर पडता है क्योंकि सहनुभूतिके लिये, आर्थिक सहायताके लिये हमें बारबार जन साधारणके पास जाना पडता है। झगड़ा रहनेसे हम जनताकी सहानुभूति नहीं पाते, धनतो पाते ही नही, पाते हैं सिर्फ़ गालिया। जबतक विवाद झगड़ा रहेगा तबतक हमारा कार्य एक प्रकारसे बन्द रहेगा। इसलिये विवाद मिटानेका आग्रह हमारी तरफसे ही सर्वाधिक है। तब भी कोई-कोई समझते हैं कि मानो हमारा पेशा झगड़ा करना ही है तथा हम लोग काम-काज छोड़कर झगड़ेके लिये ही कमर कसकर खड़े हैं। कांग्रेस एक राष्ट्रीय प्रतिष्ठान है, वह *Social service league* का नामान्तर नहीं है। राष्ट्रीय क्षेत्रमे विभिन्न लोगोंके विभिन्न आदर्श होने स्वाभाविक हैं, तथा कार्य प्रणालीके सम्बन्धमे विभिन्न लोगोंका विभिन्न मत होना अनिवार्य है। मत भिन्न होनेपर अक्सर पथ भी भिन्न होते हैं। अतएव व्यक्तिगत झगड़ा न होनेपर भी राष्ट्रीयक्षेत्रमें विविध मत दिखलाई पड़ते हैं। किंतु

अनेक बार मतान्तरमें परिणत हो जाते हैं और उसपर जब व्यक्तिकी आत्म प्रतिष्ठाकी आकाक्षा जाग पड़ती है तब दलबन्दी और भी विषाक्त तथा तिक्त हो जाती है। किन्तु वस्तुतः दलबन्दीके लिये कौन दोषी है यह जाने बिना ही किसीको अपराधी ठहराना ठीक नही। झगड़ा विवादके लिये जो उत्तरदायी नहीं हैं, उन्हे कोसकर दुखित बनाना किसीके लिये भी उचित नहीं है। राजनीतिके क्षेत्रमें समय-समयपर मतान्तर होना अनिवार्य है, किन्तु मतान्तरके लिये विवाद या झगड़ा होना भी वैसा ही अनिवार्य है क्या? मतांतर मतातरमें परिणत हो और व्यक्तिगत निन्दा और गालीगलौज हम आरम्भ न कर दें इस विषयमें सावधान रहना चाहिये। गण आदोलनमें भाग लेकर यदि हम इतने असहिष्णु होंगे कि वोटके स्थानपर लाठी और छुरेका प्रयोग करनेमें द्विधा न करेंगे तो समझना होगा कि देशके दुर्दिन आ गये। कलकत्तेकी छात्र सभाका काम भङ्ग करनेके लिये कतिपय छात्रोंने जिस प्रकार आक्रमण किया था वह अत्यन्त निंदनीय है। इसके पहले चटगावमें जो घटना हुई जिसके कारण श्रीसुखेन्द विकाश जैसे चौदह वर्षके बालकको अपना जीवन देना पड़ा, वह घटना भूलनेकी नहीं है। इस तरहकी बदमाशीके लिये कौन उत्तरदायी है, इसकी तलाश करनी चाहिये और तलाशके बाद हमारा कर्तव्य क्या है यह भी स्थिर करना चाहिये। जहा इस प्रकारकी पाशविकता हुई है वहा एकताके नामपर किसी मामलेको छिपानेसे कोई लाभ नही - समाजमें जो दोष है उसे मिटाना चाहिये। दुखका विषय है कि जो

बदमाशीका आश्रय लेते हैं वे एक बार सोचकर नहीं देखते कि इसका परिणाम क्या होगा ? पहले जो दूसरेके साथ बदमाशीके साथ पेश आता है उसे यह जानना चाहिये कि किसी दिन उसके साथ भी कोई ऐसी ही बदमाशीके साथ पेश आ सकता है क्योंकि सब एकसे सहिष्णु और अहिंसक नही होते । दूसरी बात यह जाननी चाहिये कि जनता कभी ऐसी बदमाशीका समर्थन नही करती। इसलिये जो बदमाशी करेगा वह जन साधारणकी सहानुभूति और प्रेमको खो देगा इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसीलिये बदमाशी द्वारा बदमाशी करनेवालेका ही अधिक अहित होता है।

आजकल युवक आंदोलनके सबम्बन्धमें जो लेख निकलते हैं उनमें आलोचना ही विशेष पायी जाती है, पथ निर्देश नहीं दिखलाई पड़ता। फल स्वरूप तरुण समाजमें एक प्रकारकी विशृंखलाका भाव पाया जाता है तथा वह कोई स्पष्ट निर्देश नहीं पाता है प्रत्युत दूसरेमें सिर्फ दोष ढूंढना ही सीखता है, तथा यह भी नहीं जानता कि किस रास्तेपर चला जाय और किसका अनुसरण किया जाय । इस सम्बन्धमें "दादा कम्पनी" का नाम सुना जाता है, मैं कभी इस कम्पनीका मेम्बर नहीं था और किसी दिन बनूंगा ऐसी उम्मीद भी नहीं है । किन्तु मैं नहीं समझ सकता कि जो एक समय इस कम्पनीके सदस्य थे वे क्यों इस कम्पनीके इतने विरुद्ध हो गये हैं। उनकी कम्पनी *Liquatdaion* में चली गई या वे खुद प्रमोशन प्राप्तकर ठाकुर दादाके पदपर पहुंच गये हैं ? अगर यही है तो इसके लिये कौन उत्तरदायी है ।

आज बंगालके रंग मंचपर भीषण दलबन्दी दिखलाई पड़ती है, उससे दुखी या व्यथित न हो ऐसा आदमी बंगालमें एक भी नही है। अगर कोई हो तो उसे मनुष्य नहीं कहना चाहिये। किन्तु मैं इससे हताश होनेका कोई कारण नहीं देखता। मेरी ८-९ वर्षकी जानकारीमें तीसरी बार यह दलबन्दी राष्ट्रीय गगनको कालिमामय कर रही है। इसका प्रथम आघात स्वयं देशबन्धुको खाना पड़ा था। हम भी उनके आस-पास और पीछे थे। इसलिये हमें भी थोड़ासा धक्का लगा था। उस समय शत्रु कहते थे कि पचास हजार मासिककी आमदनी छोड़कर वे पांच हजारी मन्त्रित्वके लिये व्याकुल हैं तथा यह भी सुना गया था कि चितरजनको वे बगालमे न रहने देंगे। बेशक उन्होंने उन्हे देशसे बाहर कर दिया क्योंकि देशवासियोंके साथ लड़ते लड़ते उन्हें असमयमें ही यह लोक छोड़ना पड़ा।

दूसरा धक्का श्रीसेन गुप्त प्रभृतिने खाया। उस समय हम लोग कार्यक्षेत्रसे बहुत दर थे। कितु जेलमें रहकर भी हम इसके फलाफलके लिये विशेष चितित थे इसमें कोई शक नहीं। फल स्वरूप काग्रेसकी जय हुई और तीसरा धक्का हम समाज रूपसे खा रहे हैं, इसका फल भी पूर्ववत् होगा और काग्रेसकी जय होगी इसमें कोई सदेह नहीं। किंतु दुख यही है कि विरोध मिटनेके पहले हमें गालिया सुननी पड़ेगी और अनेक कष्ट सहने होंगे। इस विरोधकी जड़में यदि तीसरे पक्षका हाथ न होता तो हमें इतना कष्ट नहीं होता।

तीव्र समालोचनाके साथ बीच बीचमें सुनाई पड़ता है कि कांग्रेसने अबतक झगड़ेके सिवा क्या किया? हमारे यहा जो *Political minded* हैं, जो राष्ट्रीय बुद्धि सम्पन्न हैं, वे ऐसा प्रश्न नहीं करते। यह सवाल वे करते हैं जो सोचते हैं कि देश सेवाका एकमात्र उद्देश्य है अस्पताल बनवाना, सेवासमिति गठन करना और बाढ़ तथा अकालके समय दुखियोंकी सेवा करना। वे अस्पतालके लिये एक लाख देंगे किंतु स्वराज्यके लिये वे १३०) नहीं देंगे। वे कहते हैं अमुक अस्पतालमे इतने *bed* शय्या का इन्तजाम हुआ किंतु तुम्हारी कांग्रेसने क्या किया है? ऐसे प्रश्न करनेवालोंको कौन समझा सकता है कि कांग्रेसका काम सब रोगोंकी जड़मे जो महाव्याधि है उसे मिटाना है। हमारी सब तरहकी दुर्दशाओंका कारण पराधीनता है, जबतक हम अपनी पराधीनता न मिटा सकेंगे तबतक हम स्वस्थ, सबल और कर्मठ न हो सकेंगे। इसलिये हमें अपनी तमाम ताकत उद्यम और सम्पत्ति स्वाधीनता प्राप्त करनेमें लगाना चाहिये। किंतु मुश्किल यही है कि हम शक्ति और सम्पत्ति व्ययकर कितनी दूरतक स्वाधीनताके पथपर अग्रसर हुए, यह नाप-तौल कर नहीं समझाया जा सकता। अस्पताल या विद्यालयकी उन्नति जितनी आसानीसे समझायी जा सकती है राष्ट्रीय उन्नतिकी बात उतनी आसानीसे नही समझायी जा सकती। इसलिये कुछ समझते हैं हम स्वराजी सिर्फ धनका अपव्यय करते हैं तथा बेकामके काममें समय नष्ट करते हैं। जबतक जातिमें आदर्शवादका पूर्ण प्रसार न होगा तबतक

राष्ट्रीय बुद्धि जागृत न होगी और राष्ट्रीय बुद्धि जागे बिना वे राष्ट्रीय संग्रामका अर्थ नहीं समझेंगे। राष्ट्रीय संग्रामकी सार्थकता समझे बिना वे राष्ट्रीय स्वाधीनताके लिये धन और समय खर्च न करेंगे तथा सर्वस्व दिये बिना जाति कभी स्वाधीन न होगी।

इसलिये अक्सर हम सोचते हैं हमारे देशमें *Political Mentality* का बड़ा अभाव है। यह राष्ट्रीय मनोभाव या राष्ट्रीय बुद्धिकी सृष्टि करना ही कांग्रेसका अन्यतम उद्देश्य है। जातिमें सूक्ष्म बुद्धि और सूक्ष्म विचार शक्ति हुए बिना वह आदर्शके लिये सर्वस्व त्याग नही कर सकते। इस बुद्धि और विचार शक्तिके लानेका एक मात्र उपाय है जातिमें आदर्शवादका सचार करना। यदि इस आदर्शवादका संचार करना हो तो जातिके अंतरतम प्रदेशपर आघात करना होगा। उसमें स्वाधीनताकी इच्छा, आत्मविकासकी आकांक्षा जगानी होगी। स्वाधीनताकी भूख जगानेपर ही जाति उसकी प्राप्तिमें प्राणापनसे लग जाती है। जिस दिन स्वाधीन होनेके लिये जाति प्राणापनसे चेष्टा करेगी और स्वाधीनताके लिये पागल हो जायगी उसी दिन वह स्वाधीन हो जायगी।

एक मित्रने उसदिन मुझसे पूछा—दो वर्षोंमें आपने क्या किया ? इस प्रश्नका उत्तर देते समय तुलना करके देखना होगा कि उससे पहलेके दो वर्षोंमें क्या हुआ था। पिछले दो वर्षोंमें अधिक काम न हुआ हो, पर इसमें कोई शक नही कि राष्ट्रीय संग्राम यदि कहीं हो रहा

था तो वह बंगाल और पञ्जाब में। और इन दो वर्षोंमे बंगालका आंदोलन यदि जोरोंसे न चल पाता तो वह सरकारकी क्रुद्ध दृष्टि अपनी ओर आकर्षित न कर पाता।

किंतु कैफियत स्वरूप प्रमाण देकर मै यह कहना नहीं चाहता कि पिछले दो वर्षों में हमने जो कार्य किया उसके लिये हमारी खूब तारीफ की जानी चाहिये। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ कि हमने जिस हालतमें कांग्रेसको लिया था, उसपर ध्यान देने और पारिपार्श्विक अवस्थाका विचार करनेके बाद यह स्वीकार करना होगा कि हमने यथासाध्य कार्य किया है। १९२७ में बंगालकी कांग्रेसकी हालत उजड़े बाजारके समान थी, इसके साथ ही उस समय भारतके असहयोग आदोलनका तार आ गया था। बंगालमें भीषण दलबंदीके फलस्वरूप कांग्रेस-कमेटी निर्जीव हो गयी थी। देशके अनेक कार्यकर्ता उस समय जेलोंमें थे। ऐसी विकट हालतमें हम आये और क्रमशः उत्साह और शक्तिसंचयकी चेष्टा की।

आज हम जिस युग सन्धि कालपर खड़े हैं उस अवस्थामें यदि किसीको कांग्रेसका दायित्व ग्रहण करना हो तो उसे पुराने प्रोग्रामके अनुसार ही काम करना होगा, साथ ही साथ भविष्य और भविष्य सङ्ग्रामके लिये देशको तैयार करना होगा। जिस प्रोग्रामको लेकर हम सन् १९२१ ई० से चल रहे हैं वह यथेष्ट नहीं है तथा हम इतने समयमें जितने आदमियोंमें राष्ट्रीय भाव जगा सके हैं वह भी काफी नहीं है।

अब हम नवीन प्रोग्राम चाहते हैं साथ ही नवीन आदमी भी चाहते हैं जो नवीन प्रोग्राम ग्रहण कर सकें। इस समयकी कांग्रेसमें आप नवीन प्रोग्राम ले जाइये। कोई ग्रहण न करेगा, ग्रहण कर लेनेपर भी उसके अनुसार काम नहीं करेंगे अर्थात् उसे दिलसे मजूर नहीं करेंगे। हमारे अदर एक दल ऐसा है जो "प्रोग्राम, प्रोग्राम" चिल्लाता है, किन्तु वे यह नहीं देखते कि नवीन आदमी तैयार किये बिना उस प्रोग्रामका मूल्य क्या है ?

सन् १९२१ से यही प्रश्न मेरे मनको आन्दोलित कर रहा है। मेरा भी एक नवीन प्रोग्राम है, पर अभी उसका समय नहीं आया। जिस दिन आदमी तैयार हो जायगे उसी दिन वह समय आ जायगा। इसीलिये मैं नवीन मनुष्य गढ़नेकी चेष्टामें लगा हुआ हूं। इसीलिये पिछले दो वर्षोंसे छात्र आन्दोलन, नारी आदोलन, युवक आदोलन पर इतना जोर दे रहा हूँ। इन सब आदोलनोंकी सहायतासे यदि नवीन मनुष्य, पुरुष और नारी प्रस्तुत हों, तब नवीन प्रोग्रामकी सार्थकता होगी।

इन सब ओदोलनोंमें प्राण सचार करनेके लिये नवीन आदर्श चाहिये। मेरा आदर्श है देश और समाजकी सम्पूर्ण मुक्ति। सम्पूर्ण मुक्तिका सन्देश नगर नगर, गाव गाव, घर घर, पहुंचाना होगा। सबको समझा देना होगा कि स्वाधीनताका वास्तविक रूप क्या है ? हममेंसे अनेक स्वाधीनताके अखण्ड रूपकी अबतक उपलब्धि नहीं करते। जातिके हृदयमें एक दिनमें अखण्ड भावकी उपलब्धि नहीं हो सकती।

सम्पूर्ण जातिको समझा देना होगा कि स्वाधीनताका अखण्ड रूप क्या है? जिस दिन जाति इस अखण्ड रूपकी उपलब्धि कर सकेगी, उसी दिन वह पूर्ण मुक्त होनेके लिये पागल हो उठेगी।

पूर्ण साम्यवादपर नवीन समाज गढ़ना होगा, जाति भेदके पहाड़को बिलकुल नष्ट करना होगा, नारीको सम्पूर्ण रूपसे मुक्त कर समाज और राष्ट्रमें पुरुषके साथ बराबरका अधिकार और दायित्व देना होगा। अर्थका वैषम्य दूर करना होगा, और वर्ण धर्मके बन्धनके बिना प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा और उन्नतिका सुयोग पाये, ऐसी व्यवस्था करनी होगी। समाजतन्त्र-मूलक स्वाधीन राष्ट्र स्थायी नीवपर खड़ा हो सके उसके लिये सचेष्ट होना होगा।

हम भारतवर्षकी पूर्ण और सर्वांगीण स्वाधीनता चाहते हैं। इस नवीन स्वाधीन भारतमें जो जन्मेंगे वे दुनियामें मनुष्य समझे जायंगे। भारत फिर ज्ञान विज्ञान, धर्म कर्म, शिक्षा दीक्षा शौर्य वीर्यमें जगत् वरेण्य होगा।

हमारा कर्तव्य क्या है अब यह खुलासा करनेकी जरूरत नहीं है। हमी तो नवीन भारतके सर्जक हैं। इसलिये आओ। हम पवित्र मातृ-यज्ञका अनुष्ठान करें। हमारी मा फिर राज-राजेश्वरी होगी। इस कंगालिनी माको फिर षडैश्वर्य सम्पन्ना दशभुजा-रुपिणी देखकर हमारी आंखें धन्य होंगी। अतएव, आओ, भाइयो! क्षणभर विलम्ब न कर सर्वस्व बलिदानके लिये मातृचरणोंमें समर्पित हों।

"याद रखना, हमें अपनी चेष्टासे भारतवर्षमें नवीन जाति गढनी होगी। पाश्चात्य सभ्यता हमारी रग रगमें घुसकर हमारा धन और प्राण लेना चाहती है। हमारा व्यवसाय, वाणिज्य, धर्म कर्म, शिल्प कला अन्तिम सासे ले रही हैं, इसलिये जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमे हमे मृत सजीवनी सुधा ढालनी होगी। वह सुधा कौन लायगा ?"

[२९ दिसम्बर १९२९ को मेदिनीपुर युवक सम्मेलनमे सभापति पद द्वारा दिया गया भाषण]

४

भाइयो और बहनो!

तरुण परिषदका सभापति बनाकर आपने जो प्रेम प्रदर्शित किया है उसके लिये मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करता हूँ। आज पृथ्वीके एक हिस्सेसे दूसरे हिस्सेतक तरुण समाजमे जागृतिकी लहरे दौड़ रही है। इसी विश्वव्यापी जागरणके फलस्वरूप हम भी यहा एकत्र हो जीवन समस्याका समाधान करनेके लिये व्रती हो रहे हैं।

प्राय: २॥ वर्ष बाद जब जेलकी दीवारसे बाहर आया, तब देश की दशा देखकर सबसे पहले यही मनमें आया कि अनेक दुर्घटना और अभाग्यवश हम बड़ी बाते सोचने और दूरकी वस्तु देखनेकी क्षमता खो बैठे। जिसके फलस्वरूप हमारे समाजमें ओछे विचार, क्षुद्र स्वार्थ और दलबन्दीका जोर हो गया, हम झूठको सच मानकर असलको छोड़कर

छायाके पीछे दौड़ रहे हैं। किन्तु प्रसन्नताकी बात है कि हमारा यह सामयिक मोह भंग हो रहा है, हम फिर परिस्थितिको उसके असली रूपमें देखने लगे हैं। युवकोंमें फिर आत्म-विश्वास बढ़ रहा है। वे समझने लगे हैं कि उनपर कितना महान् उत्तर-दायित्व है। वे अनुभव करने लगे हैं कि भावी समाज बनानेकी जिम्मेवारी उन्हींपर है। यही नहीं बल्कि हमारा युवक आज अपने अन्दर असीम शक्ति पाता है। सब देशोंमें सब युगोंमें मृत्युञ्जयी युवकोंने, युवक शक्तिने स्वतन्त्रताके इतिहासकी रचना की है, वैसे ही हमारा तरुण समाज भी अपनी हड्डियोंसे वज्र बनानेमें लगा हुआ है।

राष्ट्रीय समस्याके सम्बन्धमें मुझे बहुत कुछ कहना है, वह एक भाषणमें पूरा नहीं हो सकता, इसीलिये मैं ऐसी चेष्टा नहीं करता। हम एक दिन स्वाधीन थे। धर्म कर्म, काव्य साहित्य, शिल्प वाणिज्य, युद्ध विग्रहमें भारतीय एक दिन दुनियामें सबसे आगे थे। परिवर्तन शील चालचलनके कारण हमारा वह गौरव चला गया। आज हम सिर्फ पराधीन ही नहीं हैं बल्कि विदेशी सभ्यताके सम्मोहन अस्त्रसे हम अपने प्राणोंके धर्मको खो रहे हैं। तब भी प्रसन्नताकी बात यही है कि हमारा अज्ञानान्धकार दूर हो रहा है, हमारा राष्ट्र फिर जाग रहा है, पतनके बाद सब जातियों और सब सभ्यताओंका पुनरुत्थान होता है यह बात नहीं है। किन्तु भगवानकी कृपासे हमारे देशके पतनके बाद उसका पुनरुत्थान हो रहा है। हमारा यह राष्ट्रीय आंदोलन बाहरी चाचल्य

मात्र नहीं है, यही राष्ट्रीय आत्माका जागरण और उसकी अभिव्यक्ति है। मेरी यह बात सच है इसका प्रमाण यही है कि हमारे देशमें नव जागरणके साथ साथ जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमें नवीन सृष्टि होने लगी है। सृष्टि ही जीवनका लक्षण है। काव्य साहित्य, शिल्प वाणिज्य, धर्म कर्म, कला विज्ञान, सबमें भारतीय नवीनताका परिचय दे रहे हैं, इसीसे प्रमाणित होता है कि भारतकी आत्मा जागी है। हमारी आखोंके सामने ही भारतीय सभ्यताका नवीन अध्याय रचा जा रहा है।

वैज्ञानिक कहते हैं किसी सभ्यताका पतन होनेपर उसकी राष्ट्रीय सृष्टिशक्ति लोप होती जाती है तथा जातिकी विचार धारा और कार्य प्रणाली परम्पराके अनुकरणपर चलने लगती है। व्यक्ति और जातिके जीवनमें *Adventure* और *enterpriese* की स्पृहा कम हो जाती है। कुछ सीमित बन्धनोंमें घूमकर वह अपना जीवन धन्य मानती है। इस अवस्थामें परिवर्तन लानेके लिये विचार धारामें बिलकुल क्रान्ति करनेकी जरूरत पड़ती है तथा जीव राज्यमें *biological peare* में रक्त सम्मिश्रणकी जरूरत पड़ती है। मैं वैज्ञानिक नहीं हूँ इसलिये इस विषयपर जोर देकर कुछ नहीं कह सकता। तब भी मैं समझता हू कि नवीन सभ्यताकी सृष्टिमें रक्त सम्मिश्रणकी जरूरत होती है। अवश्य ही भारतके बाहरकी जातियोंके साथ रक्त सम्मिश्रणकी जरूरत नहीं है। बल्कि ऐसा सम्मिश्रण अधिक हो तो उसका फल अहितकर हो सकता है। इसके उदाहरण भी हैं। किन्तु भारतवर्षमें—विशेषकर हिन्दू समाजमें

जो जातिया हैं—उनमें आपसमें रक्त सम्मिश्रणसे अच्छा फल होगा यह समझनेके यथेष्ट कारण हैं।

हमारे राष्ट्रीय अधः पतनके अनेक कारण हैं, उनमें एक यह भी है कि हमारे देशके व्यक्ति और जातिके जीवनमें प्रेरणा या *Initiative* का ह्रास हो गया है। हम वाध्य हुए विना, चाबुक खाये विना कोई काम नही करना चाहते। वर्तमानकी उपेक्षा कर भविष्यके लिये काम करनेकी जरूरत और वर्तमान दैन्यको तुच्छ मानकर आदर्शकी प्रेरणामे अक्सर जीवनको हसते हसते देनेकी जरूरत पड़ती है। किन्तु कार्यतः हम इसको स्वीकार करना नही चाहते। इसका कारण प्रेरणा या *Initiative* ही है। व्यक्ति और जातिकी इच्छा क्रमशः क्षीण हो गई है। जबतक हम व्यक्ति और जातिमें प्रेरणाशक्ति न जगा सकेंगे तबतक हमसे कोई महान् कार्य सम्पन्न होना सम्भव नहीं होगा। आप निश्चय जानिये कि आदर्शकी प्रेरणासे ही इच्छाशक्ति जाग्रत होती है। हम आदर्श भूल गये हैं इसीलिये हमारी इच्छाशक्ति इतनी क्षीण हो गयी है। वर्तमान दीनताको मिटाकर अपने जीवनमें आदर्शकी प्रतिष्ठा किये विना हमारी प्रेरणाशक्ति जाग्रत न होगी और प्रेरणाशक्ति जागे विना विचारशक्ति और कर्मप्रचेष्टा पुनरुज्जीवित न होगी।

समाजके पुनर्गठनके लिये आजकल पाश्चात्य देशोंमें अनेक मत और कार्यप्रणालिया प्रचलित हैं, जैसे *Socialism. state Socialism. Guild socialism. syndicalism, philosophical*

Anarchism. Bolshevism. Fasesism. P*arliamentry demoracy, Aristocraey Absolute monarchy limited monarchy, Dictatorship* आदि। वैसे तो सभी मतोंमे कम ज्यादा सत्य है किन्तु क्रामोन्नतिशील जगतमे किसी भी मतको पूर्ण सत्य या चरम सिद्धात मानकर ग्रहण करना युक्तिसगत न होगा। दूसरी बात यह है कि किसी देशके किसी प्रतिष्ठानको जबरन वहाँसे लाकर अपने देशमे प्रतिष्ठित करनेसे सुफल नहीं हो सकता। प्रत्येक राष्ट्रीय प्रतिष्ठानकी उत्पत्ति उस देशके इतिहासकी धारा, भाव और आदर्श तथा नित्य नैमित्तिक कार्योंके प्रयोजनसे होती है। इसलिये किसी प्रतिष्ठानकी प्रतिष्ठा करते समय अपने देशकी इतिहास परम्परा, पारिपार्श्विक अवस्था और वर्तमान परिस्थितिको अग्राह्य करना सम्भव और समीचीन नही होता।

आप जानते हैं भारतमे *Marxianism* की तरंग आ पहुँची है। इसी तरंगके आघातसे कोई-कोई चञ्चल हो उठा है। अनेक विश्वास करने लगे हैं कि *Karl Marx* के मतको पूर्ण रूपसे ग्रहण करनेसे हमारा देश सुख समृद्धिसे भर उठेगा तथा उदाहरण स्वरूप रूसकी तरफ अंगुली उठाते हैं। किन्तु मुमकिन है आप जानते होंगे रूसमें जो *Bolshivism* है उसके साथ *Morxiam* S*ocialism* का जितना मेल है, भेद उससे कम नहीं है। रूसने *Marxiam* मतवाद ग्रहण करनेके समय इतिहासकी परम्परा, जातीय आदर्श, वर्तमान आबहवा और नित्य नैमित्तिक जीवनका प्रयोजन भुला नहीं दिया। आज यदि

Karl Marx जीवित होते तो वे रूसकी वर्तमान अवस्था देखकर सन्तुष्ट होते इसमें शक है। क्योंकि मेरा खयाल है कि *Karl Marx* चाहते थे कि उनका सामाजिक आदर्श एकही रूपमें बिना रूपातरित हुए सब देशोमे प्रतिष्ठित हो। इन सब बातोंके कहनेका मतलब यही है कि मैं साफ कहना चाहता हूँ कि मै किसी दूसरे देशके मत या प्रतिष्ठान-के अन्धानुकरणका विरोधी हूँ।

और एक बात कहना निहायत जरूरी है, पराधीन देशके लिये यदि किसी *ism* को पूर्णरूपसे ग्रहण करना हो तो वह—*Nationalism* है। जबतक हम स्वाधीन नही होते तबतक हम सामाजिक या आर्थिक (*Social and Economic*) पुनर्गठनका अवसर या सुयोग नहीं पा सकते, यह बात ध्रुवसत्य है। इसलिये हमें अपनी सम-वेत चेष्टासे स्वाधीनता प्राप्त करनी होगी। देश, व्यक्ति विशेष या सम्प्र-दाय विशेषकी सम्पत्ति नहीं है, इसलिये क्या हिन्दू, मुसलमान, श्रमिक, धनिक किसी सम्प्रदाय विशेषके लिये यह सभव नहीं है कि वह स्वराज्य लाभ कर सके। किन्तु यह होनेपर भी सब सम्प्रदायोंका न्यायपूर्ण हक हमें स्वीकार करना ही होगा। कारण सत्य और न्यायपर यदि हमारा राष्ट्रीयता प्रतिष्ठित न हो तो वह जातीयता एक दिन भी नहीं टिक सकेगी। इसीलिये मै सघबद्ध किसान और श्रमिक समुदायको स्वराज्य आन्दोलनका विरोधी नही समझता, बल्कि मै मुक्त कण्ठसे स्वीकार करता हूँ कि उनकी सहायताके बिना स्वराज्यकी आशा दुराशामात्र है तथा

जबतक वे संघबद्ध नहीं होते तबतक वे राष्ट्रीय, सामाजिक या आर्थिक पुनर्गठनके आन्दोलनमें सहयोग नहीं दे सकते।

यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि सब देशोंमें, विशेषकर हमारे अभागे देशमे मध्यम श्रेणीका शिक्षित समाज ही देशका मेरु दण्ड है। वह स्वतंत्र या सग्रामका ही अनुदूत है सो नहीं, बल्कि प्रजातंत्रका भी अनुदूत है। जबतक जनसाधारणमे वास्तविक जागृति नहीं होती, तबतक शिक्षित समाजको ही गणतंत्रका पौरोहित्य करना होगा। इसके सिवा जितने भी गठनमूलक काम हैं उन सबमें शिक्षित समाजको ही आगे होकर रास्ता दिखलाना होगा। इसलिये मैं मध्यवित शिक्षित समाजके अभाव अभियोगके सम्बन्धमें दो-एक बातें कहना चाहता हूँ।

पहली बात उनमें भावका अभाव है। हमारे शिक्षित समाजमें आदर्श प्रेम और आदर्शनिष्ठाका अभाव है। इसमे कोई शक नहीं। इस भावकी कमीका कारण क्या है? इसका कारण यही है कि जो हमे शिक्षा देते हैं वे शिक्षाके साथ ही साथ हमारे हृदयमे आदर्श प्रेमका बीज नहीं बोते। हमारी भाव-दीनताके लिये हमारा शिक्षित समाज, विश्वविद्यालयके अधिकारी गण ही मुख्यतः उत्तरदायी हैं। जो इन विद्यालयोंमे पढते हैं, ज्ञानार्जन करते हैं, वे क्या स्वाधीनताके आदर्शसे अनुप्राणित होते हैं? आप सब जानते हैं अठारवीं, उन्नीसवीं शताब्दीमे फ्रांसमें एक कोनेसे दूसरे कोनेतक जो आंदोलन चला था उस आंदोलनके अधिनायक वहाँके अध्यापक ही थे। हमारे विश्वविद्यालयकी

तरफ देखते ही समझा जा सकता है कि हमारी राष्ट्रीय दुरवस्था किस हदतक पहुंच गई है। किन्तु, तिसपर भी हताश होकर बैठनेसे काम नहीं चलेगा। अध्यापक समाज स्वयम् यदि अपना कर्तव्यपालन नहीं करता तो छात्रोंको स्वय अपने उद्योग और चेष्टासे आदमी बनना होगा।

भावके अभावके बाद ही अन्नाभावकी बात आती है। शिक्षित समाजमें बेकारीकी समस्या कितनी सगीन हो गई है अनेक कारणोंसे यह मुझे अच्छी तरह मालूम है। सभवतः अनेक यह बात नहीं जानते कि हमारे शिक्षित समाजकी आर्थिक स्थिति गाँवोंमें बसे हुए कृषक समाजसे भी बदतर है। नौकरीसे उनका अभाव मिट सकेगा, इसकी आशा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि नौकरियोंकी बनिस्वत शिक्षित युवकोंकी संख्या बहुत ज्यादा है। इसलिये यह अनिवार्य है कि ३०, ४० वर्षमें शिक्षित समाजमेंसे अनेकोंको मरना होगा। किन्तु आजसे ही नौकरीकी आशा छोड़कर यदि हम व्यवसाय वाणिज्यमें मन लगावें, तो हम यदि मर भी जायगे तो अपनी सन्तानके लिये जीवित रहनेका जरिया कर जावेगे। अगर हम भी नौकरीकी आशामें घूमें तो हम तो मरेंगे ही साथ ही साथ अपनी सन्ततिके मरणका भी आयोजन कर जावेंगे। बगालमें मारवाड़ी भाई जिस प्रकार ४०-५० वर्ष पहले बिना सहायता और बिना पैसे व्यवसायक्षेत्रमें घुसे थे, उसी प्रकार उसी अवस्थामें व्यवसायक्षेत्रमें प्रवेश करना होगा तथा अपने अध्यवसाय, चरित्रबल और कष्ट

सहिष्णुता द्वारा व्यवसायक्षेत्रमें कृतित्व लाभ करना होगा, "नान्य पन्था विद्यते अयनाय।"

हमारी वर्तमान कार्य प्रणालीकी आलोचना किये बिना मैं दो एक बातें कहूँगा। हमें इस समय दो और काम करना होगा। एक तो गावोंकी दीनता मिटानेके लिये प्राणवान आदोलन भावोंकी धारा बहानी होगी। दूसरे देशमें जितनी युवक समितियाँ और युवक आदोलन हैं या होंगे उन सबको एक सूत्रमें पिरोना होगा। जो विभिन्न क्षेत्रोंमें सर्जनात्मक कार्यमें लगे हुए हैं, उनमें भावोंका आदान-प्रदान हो इसलिये एक *League of young intellectuals* स्थापित करनी होगी। कवि, साहित्यिक, शिल्पी, वणिक, वैज्ञानिक और सब क्षेत्रोंमे काम करनेवाले इसके सदस्य होंगे। सूत्ररूपमें कहा जा सकता है कि "*Best brain of the enter nation*" को एकत्र करनी होगी, उनमें आपसमें भावोंका आदान-प्रदान हो ऐसा अवसर उपस्थित करना होगा तथा जिससे वे एक लक्षको सामने रखकर जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमें काम करते हुए सम्पूर्ण जातिको सबल, स्वस्थ और कृति बना सके, ऐसा आयोजन करना होगा।

दूसरे युवकोंकी कर्म प्रचेष्टा भिन्न मुखी और परस्परविरोधी न हों तथा जिससे सब चेष्टाएँ एक होकर सम्मिलितरूपमे एक ही आदर्शकी ओर परिचालित हो सकें, इसके लिये केन्द्रीय समितिकी स्थापना करनी होगी। कुछ वर्ष पहले यही उद्देश्य लेकर बंगीय युवक समिति गठित

हुई थी । अनेक कारणोंसे इस समितिका काम आशानुरूप फल नहीं दे सका । किन्तु मेरा खयाल है कि अब समय आ गया है कि इस समिति-को पुनरुज्जीवित किया जाय । किसी नवीन केन्द्रीय समिति गठित किये विना आपलोग यदि पुरानी बंगीय युवक समितिमे प्रवेश कर उसमे प्राणसंजीवन कर सके तो बहुत काम होगा । मैं पहले ही कह चुका हूँ विस्तृत प्रोग्रामको चर्चा यहाँ नहीं करूगा । मै सिर्फ यह बतलाना चाहता हू कि किस आदर्शको सामने रखकर किस प्रणालीसे काम करना चाहिये ।

वस्तुतः हमारे अभाव तीन प्रकार के हैं (१) वस्त्रादिका अभाव (२) अन्नादिका अभाव (३) शिक्षाका अभाव । हम अन्न, वस्त्र, शिक्षा चाहते हैं । किन्तु समस्याकी जड़मे हम देखते हैं कि राष्ट्रीय दीनताका प्रधान कारण है—इच्छाशक्ति और प्रेरणाका अभाव । इसलिये यदि हमारे अन्दर *Notional will* या इच्छाशक्ति न जाग्रत हो तो सिर्फ अन्न, वस्त्र शिक्षाकी व्यवस्था करनेसे ही काम न चलेगा । *Benarao last be shot* की तरह सरकार वा *local body* यदि जनसाधारणके अन्न, वस्त्र, शिक्षाका प्रबन्ध करे तो हम मनुष्य नहीं हो सकेंगे । सबकी सहायता करनेमे दोष नहीं है किन्तु प्रधानतः अपने अन्न, वस्त्र शिक्षाकी व्यवस्था हमे स्वयम् करनी चाहिये । यदि हम समवाय प्रणालीसे काम कर सके तो हमारी राष्ट्रीय इच्छाशक्ति जाग्रत हो सकेगी तथा अनायास ही स्वराज्य और स्वाधीनता प्राप्त हो जायगी ।

ग्रामसुधारके सम्बन्धमें सोचनेमे यही बात मनमें आती है कि हमे सबसे पहले इस प्रकारकी चेष्टा करनी चाहिये कि ग्रामवासी अपनी चेष्टा और उद्योगसे अन्न, वस्त्र, शिक्षा और स्वास्थ्य की व्यवस्था करे। पहली अवस्थामे बाहरसे सहायता भेजी जा सकती है। किन्तु आखिरमे ग्रामवासियोंको ही स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर होना होगा अन्यथा ग्रामसुधार कर्म भी सफल व सार्थक न होगा। हमे जानना चाहिये कि ग्रामवासियोमे परावलम्बिताका भाव ही अधिक है। इसलिये स्वावलम्बनका भाव ही सर्वप्रथम जगाना होगा। हाँ, उन्हे स्वावलम्बी बनानेके लिये काफी समयतक चेष्टा करनी होगी।

आज कल बाढ और अकाल रोजमर्राकी बात हो गयी है! उसके लिये पूर्ण प्रयत्न करना होगा तथा हमारे समाजमें धर्म और लोकाचारके नामसे जो अत्याचार हो रहे हैं, अनाचार फैल रहे हैं, हमे उनका नाश करना होगा।

भाइयो और बहनो! अब मै अपना वक्तव्य समाप्त करना चाहता हूँ। मगर यह न भूल जाइयेगा कि हम सबको मिलकर नवीन भारतका निर्माण करना होगा। हमारे अन्दर पाश्चात्य सभ्यता प्रवेशकर हमें पश्चिमीय रंगमें सराबोर कर रही है। हमारा व्यवसाय वाणिज्य, धर्म, कर्म, शिल्प कला सब नष्ट हो रही है, मर रही है। इसलिये जीवनके सब क्षेत्रोंमें मृतसंजीवनी सुधा ढालनी होगी। इस सुधाको कौन लायेगा? जीवन दिये बिना जीवन नही मिल सकता। जिनने आदर्शके

चरणोंमें आत्म-बलिदान दिया है, सिर्फ वेही व्यक्ति अमृतका पता पा सकते हैं। हम सभी अमृतके पुत्र हैं, किंतु हम अपने अहकारके जजालमें इस प्रकार फँसे रहते हैं कि आत्मस्थित अमृत समुद्रका पता नहीं पाते। मैं आप सबको बुलाता हूँ। सबका आवाहन करता हूँ। आइये, हम सब माँके मंदिरमें दीक्षित हों। देश सेवाही हमारे जीवनका एक मात्र लक्ष्य हो। देशमाताके चरणोंमें हम अपने सर्वस्वकी बलि देवे। इतनाही अगर कर सके तो भारत फिर ससारमें श्रेष्ठासन पायगा।

(प्रथम पौष १३३८ (बंगला) को युनिवर्सिटी इंस्टीट्यूटमें बंगीय युवक सम्मेलनके सभापति पदसे दिया हुआ भाषण)।

५

विचार और कार्यकी नवीन धारा बहाना है तो तुमको वर्तमान विचारधारा, स्वार्थ और शक्तिशाली दलका विरोध करना होगा। किंतु इससे डरना क्या है? विरोध और विघ्नोंके बीचसे ही युवक आदोलनको अग्रसर होना हागा। हमें याद रखना चाहिये, विश्वका जैसे एक महापुरुषने उद्धार किया भारतका भी एक महापुरुषही उद्धार करेगा।"

मध्यप्रदेशके युवक सम्मेलनका सभापतित्व करनेके लिये आमंत्रित कर आपने जो मेरा सम्मान किया है, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

हम राष्ट्रीय युगके सन्धिक्षणसे गुजर रहे हैं। इसलिये युवक मात्र-का कर्तव्य है सम्मिलित होकर भविष्यकी कार्यपद्धति निश्चय करें। हमारी समस्याओंको हल करनेके लिये वयोवृद्धोंके सहयोगके बिनाही मध्य प्रदेशके युवक प्रयत्नशील हुए हैं। इसे मैं एक आशाजनक लक्षण मानता हूँ। यदि इस महाप्रयत्नमें सफलता पानेमे में आपकी जरा भी सहायता कर सकूँ तो अपनेको धन्य मानूँगा और समझूँगा कि मेरा परिश्रम सार्थक हुआ।

जो वर्तमान युवक आंदोलनको सीधी नजरसे नहीं देखते तथा इसके उद्देश्य और क्षमताकी उपलब्धि करनेमें असमर्थ हैं, ऐसे सज्जन भी इस प्रदेशमें हैं और उनमेंसे कुछ जनताकी नजरोंमें श्रद्धापात्र भी हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो इस आंदोलनका मर्म न समझकर इसमें शरीक हुए हैं।

भारतमें जबसे नवीन जागरण हुआ है तबसे एक-एक करके अनेक आंदोलनोंका जन्म हुआ है तथा अनेक नयी विचार धाराओंका प्रवर्तन हुआ है। उन तमाम आंदोलनों और विचार धाराओंके वर्तमान रहनेपर भी युवक आंदोलनका जन्मना और बढ़ना सिद्ध करता है कि प्रयोजनीयता महान थी। व्यक्ति और राष्ट्रके हृदयमे निश्चयही कोई एक भावना जाग्रत हुई जिसके कारण युवक आंदोलनका सूत्रपात हुआ; वह भाव नहीं स्वाधीनताकी भावना है।

देश, आज एक ऐसा आंदोलन चाहता है जो व्यक्ति और राष्ट्र-

को सब तरहके बंधनोंसे मुक्त करे। उसके विकाश और सार्थकताके सब द्वार खुल जाय। कोई कोई इसे कांग्रेसकी शाखा बनाना चाहते हैं किंतु उन्होंने इसके उद्देश्य और सार्थकताकी उपलब्धि नहीं की।

कांग्रेस राजनैतिक प्रतिष्ठान है, इसका उद्देश्य सीमाबद्ध है। इसलिये जो तरुण-तरुणी जीवनके सम्पूर्ण अङ्गोंकी पूर्णोन्नति चाहते हैं वे कांग्रेस जैसे राजनैतिक प्रतिष्ठानसेही संतुष्ट नहीं हो सकते। वे चाहते हैं एक ऐसे आंदोलनके साथ सम्बन्धित होना जो उनके जीवनकी सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण कर सके। इसलिये युवक आंदोलन सिर्फ राजनैतिक आंदोलन नही है, किंतु यह राजनीतिसे अलग भी नहीं है। इसका उद्देश्य जीवनकी तरह व्यापक है। इसके सम्पूर्णतामें जीवनके हर पहलुओंका समावेश है, इसलिये युवक आंदोलन राजनैतिक आंदोलनमें भी सहायता करेगा।

युवक आंदोलन वर्तमान असंतोषका प्रतीक है। युग संचित बंधन, स्वेच्छाचार और अत्याचारके विरुद्ध विद्रोह करनेका यह एक विशिष्ट रूप है। इसका उद्देश्य बहुमुखी मुक्ति और उन्नति है। इसे विदेशका प्रसाद नही समझना चाहिये। यह एक स्वतंत्र आंदोलन है और उसका उत्पत्तिस्थान मानव हृदयका अंतरतम प्रदेश है।

वर्तमान युगके एक विशिष्ट अभाव और मनुष्यके प्राणोंकी वासनाको पूर्ण करनेके लिये ही इसका आविर्भाव हुआ है। इसका अर्थ,

और उद्देश्य समझे बिना सिर्फ इस आदोलनमे शामिल हो जानेसे, इसमें प्राधान्य स्थापित कर लेनेसे कुछ न होगा।

हमारे जीवनकी समस्त धाराओंको नवीन मार्गोंपर ले जाना और नवीन आदर्शोंसे अनुप्राणित करनाही युवक आदोलनका उद्देश्य है। हम जो जीवनका पुनर्गठन चाहते हैं उन्हें यह नवीन अर्थ और नवीन प्रेरणा देगा। इसका आदर्श है पूर्ण स्वाधीनता और अपनी चहुमुखी उन्नति। स्वाधीनता जीवनकी सार्थकताकी तरफ ले जाती है, इसीलिये वह बहुमूल्य है—महत्वपूर्ण है।

युवक आदोलन जीवनकी तरह व्यापक है। इसलिये जीवनके जितने पहलू हैं इस आदोलनके भी उतने ही पहलू है। शरीरको पुष्ट करनेके लिये खेल-कूद और व्यायाम करना होगा। हृदयको मुक्त और नवीन शिक्षासे जाग्रत करनेके लिये उच्च साहित्य और उत्कृष्ट शिक्षाप्रणाली चलानी होगी। समाजको नवजीवन दान करनेके लिये हमें पुरानी विचारधारा और पद्धतिके स्थानपर नवीन और शक्तिशाली समाज व्यवस्था जारी करनी होगी।

और एक बात याद रखनी चाहिये कि युवक आदोलनमें शामिल होते समय जनप्रिय होनेकी इच्छा बिलकुल छोड देनी चाहिये। कभी-कभी जनमतको गठित करने और जनसाधारणका उच्छ्वास दबानेका काम भी आपको ही करना होगा। यदि राष्ट्रीय जीवनकी मूल समस्याओंका आप समाधान करना चाहते हैं तो आपको अपना दृष्टिकोण

विस्तृत करना होगा, जनसाधारण आजकी बात छोड़कर कलकी बात नहीं सोच सकता। यदि आप भारतका अमंगल टालकर उसका मंगल चाहते हैं तो समझ लीजिये जनता आपकी बात पसद नहीं भी कर सकती है। जो जनप्रिय होना चाहता है वह कुछ समयके लिये हो सकता है किंतु वह अमर नहा हो सकता। जातीय इतिहास रचनेके लिये हमें विरोध ओर अत्याचार सहनेके लिये तैयार रहना चाहिये। निस्वार्थ काम करनेके लिये तैयार रहना चाहिये, विकटतम मित्र द्वारा भी शत्रुता पाना सभव है, इसमें आश्चर्य कुछ नही है।

किन्तु मनुष्य स्वभावमें देवत्व है। इसीलिये निन्दा, अत्याचारका भी एक दिन अन्त होता है। गभीरतम विश्वासके लिये मरनेपर वह मृत्यु हमें अमर कर देगी। इसलिये हमें हर परिस्थितिके लिये तैयार रहना चाहिये। जीवनमे आघात है, विपत्ति है, इसीलिये तो जीवनका मूल्य है। त्याग, शोक और अत्याचार न होता तो क्या जीवनमें कोई सौन्दर्य, कोई विचित्रता रहती? साधारण तौरपर—राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, शैक्षिक ये पॉच युवक आंदोलनके पहलू हैं। इस आदोलनके उद्देश्य भी दो भागोंमें विभक्त हैं। इन पाचों पहलुओंके तमाम बन्धनोंको काटना और पूर्ण उन्नति करना। एक तरफ तोड़ना होगा और एक तरफ बनाना होगा। विना तोड़े नहीं बनाया जा सकता। असत्य, कपट, बधन, साम्यके अभावको मानकर चला ही नही जा सकता। हमें इन सब बन्धनोंको तोड़ना होगा। जब हमारा

कर्तव्य सिर्फ आगेही बढ़ता है, तब पीछे फिर कर देखनेसे कैसे चलेगा।

भारतमें और भारतके बाहर बहुतसे सस्कारमूलक आन्दोलन चल रहे हैं, किन्तु हम सस्कार-सुधार नहीं चाहते, परिवर्तन चाहते हैं, व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों जीवनोंका पुनर्गठन करना होगा। इस उद्देश्यको उद्दीप्त करनेके लिये स्वाधीनताकी एक नवीन धाराका जन्म होना चाहिये। स्वाधीनताका अर्थ है, सब तरहके बन्धनोंसे मुक्ति। बीच रास्तेमें खडे होनेसे काम नहीं चलेगा।

भाइयो! हमारा दायित्व अत्यन्त कठिन है। प्रत्येक युगमें प्रत्येक देशमें यौवनने मुक्तिकी मशालको ऊँचा किया है, विदेशी युवकोंके उदाहरणपर आज हमें जीवन यापन करना होगा। आज भारतका भाग्य जवानोंके हाथमें है। मैं जानता हूँ उनके आत्मत्याग द्वाराही भारत स्वाधीनता प्राप्त करेगा। उन्हींके प्रयत्नसे स्वाधीन भारतका जन्म होगा। लेकिन सवाल यह है कि कब होगा? यह सच है कि हम पराधीन पैदा हुए हैं किन्तु स्वाधीन देशमें मरेंगे। देशको स्वाधीन करके मरेंगे, आओ हम सब यही प्रतिज्ञा करें और यदि जीवनमें मुक्त भारतवर्षका रूप न देख सके तो भारतको स्वाधीन करनेमें जीवन दे सकेंगे! स्वाधीनताका पथ कण्टकमय पथ है किन्तु यह अमरत्वका पथ भी है। भाइयो, बहनो। मैं इस पथपर आपका आवाहन करता हूँ। वंदेमातरम्।

(२७ नवम्बर १९२९ मध्यप्रान्तीय युवक सम्मेलनके सभापतिकी हैसियतसे दिया हुआ भाषण)।

॥ बस ॥